पतमुस टापू का दर्शन

जैफरसनविले, इन्डियाना यू. एस. ए.
४ दिसम्बर, १९६० (संध्या)

1 जैसा कि भाई नेविल उन उदघोषणाओं को कर रहे थे कि....भाई मूरे किसी दिन कह रहे थे, वे प्रभु के आत्मा के भवन के अन्दर आने के विषय में कह रहे थे। उन्होने कहा था, "यह इतना जबरदस्त था, कि मैंने सोचा, कि स्वर्ग पर उठाया जाना हो गया है।" और बोले, "मैंने चारों ओर दृष्टि डाली, और मैंने दूसरों को यहाँ पर बैठे हुए देखा', बोले, "नहीं, यह अभी नहीं हुआ है, क्योंकि यदि...यदि वे अभी भी यहाँ पर बैठे हुए हैं, तब तो मैं.. मैं जानता हूँ, कि मैं .. अभी यहाँ पर हूँ।" अत: कभीकभी प्रभु का आत्मा वैसा भला हमें लगता है।

2 हम अपने उन अनेकों मित्रों, को जिन्हें हम इस भवन में देखते हैं पाकर अति आनन्दित हैं: उनके विषय में वर्णन करने का प्रयास करने हेतु वे बहुत अधिक हैं। द्वार से अन्दर आते हुए मैंने बस अभी हाल ही में भाई कारपेन्टर पर ध्यान दिया; ये वे पुरूष हैं जिनका विवाह और मेरा विवाह हमारी पत्नियों से एक साथ ही हुआ था। यहाँ इस कलीसिया में भाई कारपेन्टर हमारे लिए एक बहुत बड़ी आशीष रहे हैं; और वे अपनी सेवकाई करने के ढंग के कारण, और जिस प्रकार से वे कुछ भी... कहीं भी प्रचार करते हैं, वे हमारे लिए एक आशीष रहे हैं। और हम उन्हें अपने साथ पाकर, ओह, तथा अनेकों दूसरों को अपने साथ पाकर आनन्दित हैं। (टेप में रिक्त स्थान-सम्पा.)

3 अब, यहाँ पर एक और प्रश्न है जो गत रात्रि को मुझे दिया गया था:

भाई ब्रन्हम, क्या मत्ती 25 की पाँच मूर्ख कुवारियों को अन्यजातियों के शेष बचे हुए (Remnant) के रूप में गिना जाता है? मैं समझता हूँ, कि पाँच मूर्ख कुवारियाँ बचायी गयी हैं; परंतु उन्हें महापीड़ा के समय से होकर गुज़रना है। क्या यह सही है? यदि ऐसा है, तो उनकी अन्तिम मंज़िल क्या होगी? क्या वे वो भेड़ें हो सकती हैं जिन्हें मत्ती 25:33 और 34 में बकरियों से अलग किया जाता है?

.... जो .. मैं ...उसके अनुसार यह धर्मशास्त्र का एक अच्छा ज्ञाता है.... भी ऐसा ही सोचता हूँ, कि वे बचे हुए लोग हैंये मूर्ख कुंवारियाँ नींद के खुमार में डुबी कुंवारी स्त्री के वंश के वे बचे हुए लोग हैं जिनके विषय में प्रकाशितवाक्य के अध्यायों में बताया गया है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और उनके पास यीशु मसीह की गवाही है।

एक स्त्री कपड़े का एक....एक टुकड़ा लेगी और उसे नीचे बिछा कर रख देती है; खैर, अब देखिए, यही है वह जिसमें से वह अपना... काट रही है- - या वह अपना नमूना या पैर्टन लेती है, और जहाँ उसकी इच्छा होती है उसे उस कपड़े पर वहाँ पर रख देती है- जिस भी प्रकार से वह उसे काटने जा रही होती है। और उसके बाद जो कुछ भी उसके पास बचा रहता है, वह शेष बचा हुआ कहलाता है । परन्तु वह अपनी स्वतन्त्र सोच के द्वारा किसी भी निश्चित स्थान से काटने के लिए चुनती है। परन्तु जो बचा रह जाता है, वह शेष बचा हुआ कहलाता

अब, यदि आप ध्यान देते हैं, तो आप देखते हैं, कि वहाँ पर पाँच बुद्धिमान और पाँच मूर्ख कुंवारियाँ थीं; वे सभी कुंवारी थीं, वे एक ही तत्व-पदार्थ से बनी थीं। परन्तु चुनाव के द्वारा... परमेश्वर ने अपने चुनाव के द्वारा जगत की उत्पत्ति से भी पहले अपनी दुल्हन को चुन लिया था, और उनके नामों को मेमने के जीवन की पुस्तक में लिख दिया था जो जगत की उत्पत्ति से भी पहले वध किया गया। क्योंकि परमेश्वर अनन्त है, अतः इससे पहले कि कभी जगत का आरम्भ होता परमेश्वर ने अपने मस्तिष्क में...

4 और जैसा कि हम कभी कभी "पहले से चुन लिये जाने" शब्द का उपयोग करते हैं; परन्तु यह इस कलीसियायी काल में जिसमें कि हम रहते हैं निश्चय ही एक ऐसी बात है जिस पर लोग अटक जाते हैं। यह निश्चित रुप से शहादत वाले दिनों में एक बहुत बड़ी बात थी जिसका उपयोग किया जाता था; क्योंकि वे निश्चय ही इसका विश्वास करते थे। परन्तु अब तक यह इससे सैद्धांतिक विचारधारा की ओर फिर गयी थी; सैद्धांतिक शिक्षा बन गयी थी जो कलीसिया के अंदर आ गयी थी- - - वह एक अच्छी बात तो थी, क्योंकि इंग्लैंड में तब तक यह सारी की सारी कैल्विन मत की ओर फिर गयी थी जब तक कि उनके पास फिर और अधिक बेदारी नहीं रही थी; और जॉन वैसली अरमेनियम शिक्षा का प्रचार करते हुए आया जिसने इसे संतुलित कर डाला था। परमेश्वर हमेशा ही इसे संतुलित कर डालेगा।

अत: तब तो ये मूर्ख कुंवारियाँ वे थीं जिनके चिरागदानों में तेल नहीं था और जिनके लिए मैं विश्वास करता हूँ कि उन्हें बाहय अंधकार में वहाँ डाल दिया गया था जहाँ रोना, विलाप करना और दांतों का पीसना होगा। यदि आप इसकी तुलना अपने फुटनोट पर करते हैं, तो यह बात फिर से वापस महापीड़ा तक मेल खाती चली जाती है। और मैं सोचता हूँ कि वे ही वो हैं जो पीछे रह जाते हैं और उस महापीड़ा में से होकर गुजरते हैं। यहाँ पर एक अच्छा खासा पाठ है, काश हमारे पास उसका अध्ययन करने का समय होता। यदि आप....

5 अब मैं कह चुका हूँ, कि जब आप इन टेपों को सुनते हैं, तो आप इस पहली बात को स्मरण रखें: ये बातें उस प्रकार से हैं जैसा कि मैं विश्वास करता हैं कि ये सही हैं। समझे? अब, यदि ये गलत हैं, तो मैं नहीं.... मैं नहीं जानता हूँ कि ये गलत हैं। मैं.. और मैं तो केवल वही कह सकता हूँ जो मैं विश्वास करता हूँ। और मेरा तात्पर्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है। जब हम अंदर आते हैं तो हमें उन्हें एक ओर रख देना चाहिए, और उसके बाद उस बात को ग्रहण करना चाहिए जो कही जा चुकी है, और उसकी खोजबीन करनी चाहिए, और देखना चाहिए कि क्या वह सचमुच में पवित्रशास्त्र के अनुसार है या नहीं।

उसके बाद इसे करने का सबसे अच्छा तरीका यही है, क्योंकि इस दिन में जिसमें कि हम रह रहे हैं, इस देश में जहाँ सब बातों के विषय में सभी प्रकार के लोगों के द्वारा बार बार संचय-संग्रह किया गया है, खैर, लोगों के लिए इसे अंदर ग्रहण कर लेना कठिन होता है। परन्तु जैसा कि खाली पड़े मैदान में- खाली पड़े मस्तिष्क के विषय में होता है, आप उन्हें कोई बात बतायें, वे उसका विश्वास कर लेते हैं- ठीक इसी प्रकार से यह होता है।

6 परन्तु अब कोई यह वाला विचार लेकर आयेगा, और कोई यह वाला विचार लेकर आयेगा; और हमारे पास लगभग नौ सौ और कुछ एक नामधारी संस्थाएँ हैं ; और उनमें से हर एक अपनी अपनी शिक्षाओं में एक दूसरे के विपरीत हैं; और ऐसे में किसी एक को गलत और किसी एक को सही होना होता है। अब देखिए, अत: इसे जानने का केवल एक ही प्रमाण है, कि उसकी वापस बाइबिल से ही तुलना की जाये (समझे?)होने पाये कि बाइबिल ही ...

अब देखिए, बहुत सी बार लोग अपने ही अनुवाद दे डालते हैं। परन्तु हम वह सबसे उत्तम करने का प्रयास करते हैं जो हम कर सकते हैं : कि उस पर कोई मानवीय अनुवाद न दिया जाये, बस उसे ठीक वैसा ही पढ़ा जाये जैसा वह है, और कहा जाये, "यह इस प्रकार से है।"

और इसके बाद मैंने सदैव ही यह ध्यान दिया है, कि यदि आप वह ग्रहण करते हैं जो उसने कहा है, तो यह पवित्रशास्त्र में हर एक बात से बिलकुल ठीक ठीक मेल खाता चला जाता है। यह लगभग बिलकुल ठीक वैसा ही है जैसा कि कटे टुकड़े वाले आकृति वाले खेल में टुकड़ों को आपस में जोड़ना: इससे पहले कि आप उस खेल की आकृतियों को आपस में एक साथ जोड़ें, आपको नमूने को देखना होता है। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो फिर वैसा ही होता है, जैसा कि मैंने हमेशा ही कहा है, "आप ऐसा कर देंगे.... आप के दृश्य में गाय पेड़

की चोटी पर घास खा रही होगी।" अत: यह तो बिलकुल भी ठीक नहीं लगेगा।

7 और यदि हम बस पवित्र आत्मा को ही काम करने दें.... किसने बाइबिल लिखी है? पवित्र आत्मा ही लोगों के ऊपर मंडराता था, और उन्होंने बाइबिल लिखी। फिर तो इससे कोई मतलब नहीं है, कि आप कितने शिक्षित हैं, आप बिना पवित्र आत्मा के इसे कदापि नहीं समझेंगे। क्योंकि यहाँ तक कि यीशु ने भी परमेश्वर को धन्यवाद दिया था, कि उसने इसे ज्ञानियों और समझदारों की आँखों से छिपाकर रखा, और उन बालकों पर प्रकट किया जो इसे सीखेंगे। और चेलों में से हर एक चेला लगभग अनपढ़ और अशिक्षित था; परन्तु एक ही पढ़ा लिखा था, और वह पौलुस था।

और पौलुस ने कहा था, कि मसीह को पाने की खातिर उसे वह सब कुछ भूल जाना था जो वह कभी जानता था; अत: उसने कुरिन्थियों की कलीसिया को बताया था, कि "मैं तुम्हारे पास मनुष्य के ज्ञान और लुभानेवाली बातों के साथ नहीं आया, क्योंकि तब तो उनका...उनका विश्वास मनुष्यों की समझ पर होता; परन्तु वह उनके पास पवित्र आत्मा की सामर्थ और प्रकटीकरण के साथ आया, ताकि उनका विश्वास पवित्र आत्मा के कामों पर टिके जो कि परमेश्वर के वचन के अनुसार थे।

और ठीक यही है वह जहाँ पर हम ठीक इस समय टिकने का यत्न कर रहे हैं; क्योंकि इससे पहले कि यह सप्ताह समाप्त हो, या इस सप्ताह का समय समाप्त हो आप इसे देख लेंगे, कि यह बिलकुल ठीक वही मूलमंत्र है जो सभी कालों से होता हुआ यहाँ नीचे तक आ रहा है।

8 (उस बोर्ड को वहाँ पर थोड़ा सा ऊपर रखने के लिए आपका धन्यवाद हो। यह बेहतर दिखायी देता है।)

अब, ओह, हम.... मैं चाहता हूँ, कि हमारे पास सारी सर्दियाँ होतीं, जिससे कि हम प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक को ही ले सकते होते और इसका अध्ययन करते चले जाते। यहाँ इसमें बहुत ही सुंदर शिक्षाएँ हैं। और मुझे स्मरण है, कि मेरा अनुमान है कि ऐसा बीस या पच्चीस वर्ष पहले की बात है जब कि गिरजा अभी भी नया नया ही था; और हम एक... से ... एक आरम्भिक पतझड़ से लेकर लगभग दूसरे पतझड़ तक प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अध्ययन करते चले गये थे।

मुझे अय्यूब की पुस्तक को लेना याद है। ओह, भाई राइट, मैं इस पर इतने अधिक समय तक रुका रहा था कि आखिरकार एक महिला ने मुझे लिख कर पूछा था- उसने कहा था, "भाई ब्रन्हम, क्या कभी आप अय्यूब को राख के ढेर पर से उठाने नहीं जा रहे हैं?"

खैर मैं एक बात को स्पष्ट करने की चेष्टा कर रहा था, क्योंकि वहीं पर ही एक ऐसी बात थी जहाँ सारी बातें आपस में एक साथ मेल खाती थी, जहाँ प्रभु का आत्मा उसके ऊपर आया था। उसके बाद जब बिजलियाँ तड़कने और कड़कने लगीं, तो पवित्रात्मा उस नबी पर उतरा; और उसने प्रभु के आगमन को देखा। और मैं उस बात को लोगों के अंदर आत्मसाध कर देना चाहता था; यही कारण था कि मैं उसे इतने अधिक समय तक राख के ढेर पर बैठाये हुआ था; ताकि— ताकि हम बात को समझ सकें।

और मैं जानता हैं, कि यह थोड़ा सा थकित कर देता है, थोड़ा सा उकता देता है। मैं भी अधीर सा हो जाता हूँ; और मैं किसी को किसी चीज से यहाँ वहाँ खेलते हुए देखता हूँ, और ऐसा दिखाई पड़ता है कि मानो वह आगे बढ़ेगा और उसे दे मारेगा। परन्तु हो सकता है शायद परमेश्वर ही उस व्यक्ति की किसी एक उद्देश्य के लिए ऐसा करने के लिए अगुवायी कर रहा हो।

9 अब इससे पहले कि हम इस प्रश्न को छोड़े, आइये हम फिर से इस 'शेष बचे हुए' पर आते हैं। मैं आशा करता हूँ कि मैंने इसे स्पष्ट कर दिया है.....मैं सचमुच में यह विश्वास करता हूँ कि ये शेष बचे हुए परमेश्वर के द्वारा ही चुने हुए हैं। मैं... मैं इसका विश्वास करता हूँ, कि परमेश्वर ने ही शेष बचे हुओं को अपने पूर्व ज्ञान के द्वारा जगत की उत्पत्ति से भी पहले चुन लिया था...

शब्द नहीं... अब,आप पहले से चुने जाने पर ध्यान दें, (समझे?) क्योंकि यह लोगों के मध्य में एक दुविधात्मक छोटा सा शब्द है। समझे? परन्तु परमेश्वर ने अपने अनन्त मस्तिष्क में जगत की उत्पत्ति से भी पहले कलीसिया को चुन लिया था; यीशु को चुन लिया था, कलीसिया को चुन लिया था; और वह आरम्भ में उसकी भविष्यवाणी कर सकता था जो अन्त में होगा। वह ... यदि वह अनन्त है तो कुछ भी ऐसा नहीं है जो वह न जानता था। वह उन प्रत्येक पिस्सुओं को जो पृथ्वी पर कभी होंगे, और वह अपनी आँखों को कितनी बार झपकायेगा, जानता था। अब देखिए, यह बस किस प्रकार से...और वह किस प्रकार से कितनी चर्बी बनायेगा, और वे आपस में मिलकर कितनी... बनायेंगे... यह अनन्त है, यह अनन्त बात है; आप.. आप.. इसका वर्णन करने का बस कोई तरीका नहीं है..... और ऐसा ही परमेश्वर है, ऐसा ही वह है, परमेश्वर अनन्त है।

10 अत: यदि आप ध्यान दें, बाइबिल कहती है, कि अंत के दिनों में वह मसीहविरोधी पृथ्वी पर होगा....

अब, आप ध्यानपूर्वक सुनें। यह तो बस अल्पांश मात्र ही है... मैं सोचता हूँ कि वह मुझ में लाखों लाख ढूंढ़ सकता है। परन्तु आप हमारे अमूल्य भाई बिली ग्राहम की बात पर दृष्टि डालिएं, जो उन्होंने उस ध्यान देने योग्य प्रवचन में कही। थी जो उन्होंने पिछले रविवार को प्रचारा था; और मैंने यकीनन सोचा था, कि वह समय के मुताबिक एक सन्देश था। और....परन्तु उन्होंने कहा था, "यहाँ तक कि शैतान चुने हुओं को भरमा रहा है।"

जी नहीं, बाइबिल कहती है, कि यदि हो सके, तो वह चुने हुओं को भरमा दे। परन्तु ऐसा सम्भव नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने तो उन्हें जगत की उत्पत्ति से भी पहले ही चुन लिया था। समझे? मेमना... यीशु मसीह ही वह मेमना था जो जगत की उत्पत्ति से भी पहले वध किया गया था। यहाँ तक कि जब वह उसे अपने मस्तिष्क में रखता है, जब वह उस वचन को बोलता है, तो वह उसमें कभी कोई परिवर्तन नहीं कर सकता है, वह कभी भी उसमें कोई रद्दो-बदल नहीं कर सकता है। देखिए, क्योंकि वह ... वह... वह अनन्त है; और उसके वचनों को घटित होना ही होगा।

11 अब ज़रा सोचिए, ... वह पृथ्वी जिस पर हम आज रात्रि विधमान हैं, वह परमेश्वर का ही वचन है जो प्रकट हुआ। जगत उन वस्तुओं से आकार में ढ़ाला गया जो अनदेखी हैं। उसने बस कहा, "ऐसा हो जाये, और ऐसा ही हो गया था। तब तो परमेश्वर के लिए उस बीमार देह को चंगा करना कितना सहज हैयदि वह बस बोलने के द्वारा ही अपनी रचना की सृष्टि कर सकता है। उसका वचन देखिएँ, काश हमारे पास बस इतना ही विश्वास हो सके कि हम देख सकें, कि उसका वचन क्या है।

हम तो बहुत अधिक भूबन्धित हैं और अपने ही विचारों में इतने अधिक फंसे हुए हैं, कि हम.. ओह, मैं नहीं जानता हूँ। हमारे इतने अधिक दुर्दमनीय विचार होते हैं; एक विचार इधर से कौंधता है और यह बस हमें ऐसी स्थिति पर ले आता है कि वह सारा का सारा पेंचिदा सा हो जाता है। -

परन्तु यदि आप सारी बातों को हिलाकर ढीला कर दें, और यह जानने की स्थिति पर आ पहुँचें, कि वह परमेश्वर है, और उसका वचन विफल नहीं हो सकता है, जैसे वह विफल नहीं हो सकता है.... यदि वह वचन विफल हो जाता है, तब तो परमेश्वर ही विफल हो जाता है। और यदि परमेश्वर विफल हो जाता है... वह परमेश्वर ही नहीं रहा। समझे? अतः .... और स्मरण रखिए, वह ऐसा नहीं कर सकता है, कि कोई एक बात यहाँ पर कहे, और कोई एक बात यहाँ पर कहे, उसे तो परमेश्वर बने रहने के लिए अपने पहले निर्णय पर ही अटल बने रहना होता है। अत: बस हम....

12 और वह हमसे बस एक यही काम करने के लिए कहता है कि: जो कुछ उसने कहा है, हम उसका विश्वास करें, कि वह सत्य है, और वही उसे घटित करेगा। ओह, कितनी सुन्दर बात है ! आप तो बस किसी बात के तुरन्त ही घटित होने की आशा करते हैं; कभी कभी इसके लिए थोड़े से विश्वास की आवश्यकता होती है। यह कोई आश्चर्य कर्म तो नहीं करेगा, परन्तु यदि आप उस पर कायम बने रहते हैं, तो यह आपको बाहर निकालकर लायेगा, आप बस उस पर अटल रहें।

जैसा कि उसने कहा था, "राई का दाना'; वह सब बीजों में सबसे छोटा होता है..." परन्तु क्या कभी आपने ध्यान दिया है, कि राई-सरसों अपने में कुछ भी मिश्रित नहीं करेगा। आप सरसों के बीज को किसी चीज से संकरित नहीं कर सकते हैं, वह तो संकरित होगा ही नहीं। और यदि आपके पास विश्वास है, आपके पास ज़रा सा भी विश्वास है, तो वह किसी अविश्वास या किसी कलीसियायीपने या मत-सिद्धांत के द्वारा संकरित नहीं होगा, वह तो बस परमेश्वर के साथ ही अटल बना रहता है; और वही आपको धुन्ध में से होकर ठीक बाहर निकालकर लायेगा। जी हाँ, उस विश्वास के साथ ही दृढ़ बने रहिए।

13 अब देखिए, आरम्भ में जब परमेश्वर .... बाइबिल ने प्रकाशितवाक्य में कहा है, कि अंत के दिनों में मसीहविरोधी.....अब, इन कलीसियाओं पर दृष्टि डालिए, जो आपस में साथ एक जुट हो रही हैं। अंत के दिनों में वह मसीहविरोधी पृथ्वी पर उन सभों को भरमायेगा जिनके नाम जगत की उत्पत्ति से पहले मेमने की जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गये थे। आपका नाम जीवन की पुस्तक में कब लिखा गया था? इससे पहले कि हमारे पास कभी जगत होता, हमें चुन लिया गया था, कि हम इस युग में पवित्र आत्मा ग्रहण करें।

मैंने इसे एड्डी पैरोनेट के साथ इसे गाया है:

मैंने अपने प्राण का लंगर स्वर्ग के विश्राम में डाल दिया है,

कि उथलपुथल करने वाली लहरों पर और ना डगमगाता रहूँ;

चाहे आजमाइशें जंगली तूफ़ानी लहरों की जैसी ही क्यों न हों;

लेकिन हम तो यीशु में युगानुयुग सुरक्षित हैं।

14 कुछ भी ऐसा नहीं है जो हमें उससे अलग कर सकें । परमेश्वर नहीं कर सकता है... ऐसा नहीं हो सकता है, कि परमेश्वर अपने वचन का समर्थन न करे। और यदि वह अनन्त है, और वह आपको यहाँ पर पवित्र आत्मा देता है, जबकि वह जान रहा होता है, कि वह आपको यहाँ नीचे खोने जा रहा है, तो वह किस प्रकार का काम करता है? यदि आप अपने अनुभव में धोखा नहीं खाते हैं, यदि

आपके पास पवित्र आत्मा है.... परन्तु देखिए, कि बाइबिल ने इफिसियों 4:30 में यह कहा है, "परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर.... तक के लिए छाप की गयी है। क्या आप पर अगली बेदारी तक के लिए छाप की गयी है? क्या यह बात सही प्रतीत होती है? "तुम पर तुम्हारे छुटकारे के दिन तक के लिए छाप कर दी गयी है।" कब तक के लिए? तुम्हारे छुटकारे के दिन तक के लिए !

आप मालवाहक डिब्बे का उदारहण देखें, आप उसे ट्रक पर लोड़ करते हैं, और जब वह पूरी तरह से लोड़ हो जाता है, ...अब देखिए, वे अभी भी उस मालवाहक गाड़ी को बंद नहीं करते हैं; निरक्षक को आकर उसका निरक्षण करना होता है। और वह उसका निरक्षण करता है और देखता है, कि क्या कोई चीज ढीली है जो हिलेगी। डिब्बा हो सकता है... हो सकता है कि मालवाहक डिब्बा पूरी तरह से भर हुआ हो, परन्तु यदि उसमें खाली जगहें होती हैं, तो उसे उसमें फिर से माल भरवाना होता है।

और बिलकुल ठीक यही मामला हमारे साथ है जो हम में से अनेकों को पवित्र आत्मा नहीं मिलता है, जब निरक्षक आकर देखता है, तो उसे बहुत सी खाली जगाहें मिलती हैं(समझे, आप?) अत: वह इस पर अभी छाप नहीं करेगा।

15 किसी दूसरे दिन धर्मशास्त्र का एक बड़ा ज्ञाता मेरे पास आया, या ऐसा किसी दूसरे दिन नहीं, वरन ऐसा तो लगभग तीन या चार साल पहले हुआ था। और उसने कहा, "मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ," बोला, "अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।"

मैंने कहा, "ठीक है, यह सच है।"

वह बोला, "मनुष्य इससे अधिक और क्या कर सकता है, कि वह विश्वास करे?"

मैंने कहा, "यही है वह सब कुछ जो वह कर सकता था।"

उसने कहा, "तो फिर आप उससे बाहर पवित्र आत्मा जैसी बेकार की बात के साथ कहाँ चले जाते हैं?" अब, आप जानते हैं, कि वह एक बैपटिस्ट था। और उसने कहा.. उसने कहा, "आप पवित्र आत्मा को लेकर क्या क्या कहते चले जाते हों? यदि कोई मनुष्य विश्वास करता है, तो जिस क्षण आप विश्वास कर लेते हैं, आपको पवित्र आत्मा मिल जाता है।"

मैंने कहा, नहीं, जी नहीं! अब, आप.. आप पवित्र वचनों में ही विरोधाभास उत्पन्न कर रहे हैं; और पवित्र वचन स्वयं अपना विरोधाभास नहीं कर सकते हैं। समझे? पौलुस ने उनसे पूछा था, 'जब से तुम ने विश्वास किया, क्या तुमने पवित्र आत्मा पाया?"

उसने कहा, "अच्छा...."

मैंने कहा, "यह सच है, कि अब्राहम जो विश्वासियों का पिता है उसे दिया गया...उसने परमेश्वर से प्रतिज्ञा पायी थी और उसने परमेश्वर पर विश्वास किया था; और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया; परन्तु परमेश्वर ने उसे खतने की मोहर के रुप में एक चिन्ह दिया था, कि उसने उसके विश्वास को ग्रहण कर लिया है।"

16 अब देखिए, यदि उसने आप पर अभी तक पवित्र आत्मा की कदाचित मोहर नहीं की है, तो उसने आपके उस विश्वास को जो आपका उस पर है अभी तक ग्रहण नहीं किया है; आप में अभी भी खाली जगाहें हैं। समझे? परन्तु जब आप उन सारी खाली स्थानों को अच्छी तरह से भर देते हैं, तो उसके बाद ही वह आप पर आपके छुटकारे के दिन तक के लिए पवित्र आत्मा से छाप कर देता है। यही परमेश्वर का पुष्टिकरण होता है, कि उसने आपके विश्वास को जो आप उसमें रखने का दावा करते हैं स्वीकार किया है।

अब्राहम ने विश्वास रखा था, और परमेश्वर ने कहा था, "मैं तुझे एक चिन्ह दूंगा, कि अब तू ने... कि .. कि मैंने तुझे ग्रहण किया है। और उसने उसे खतने का एक चिन्ह दिया।

अब, जब आप यीशु को अपने निजी उद्धारकर्ता के रुप में ग्रहण करते हैं, और उस पर विश्वास करते हैं, और उससे यह मांगते हैं, कि वह आपके जीवन को पाक- साफ करे, और उसके बाद जब वह पवित्र आत्मा समेत वापस आता है, और आपको पवित्र आत्मा का चिन्ह देता है, तब आप पर आपके छुटकारे तक के लिए छाप हो जाती है।

17 यहाँ पर यह मालवाहक डिब्बा है, यदि यह ढीला भरा हुआ है...जब यह अच्छी तरह से पूरी तरह से भर जाता है, तो वे उसके द्वार को बन्द करते हैं, और उसके ऊपर एक मोहर लगाते हैं; और वह..वह अपने गन्तव्य स्थान तक के लिए मोहरबन्द हो जाता है। यदि आप उसकी मोहर को तोड़ते हैं, तो मालवाहक कम्पनी आपको अजीवन कारावास दिलवा सकती है। वह तोड़ी नहीं जा सकती है। वह अपने गन्तव्य स्थान तक के लिए मोहरबन्द हो जाता है; इसलिए नहीं, कि कोई सारे रास्ते भर उसे खींचकर खोल लें, और उस पर दृष्टि करे; और उसकी जाँचपड़ताल सी करे, और उसका निरक्षण करे, और कुछ चीजों को निकालकर बाहर फेंक दे, और कुछ और चीजों को उसके अन्दर भर दे। नहीं, जी नहीं!

यह कलीसिया कहेगी, "अच्छा, यह तो एक धार्मिक मत-सिद्धांत है। यह बिलकुल भी अच्छा नहीं है। यह बिलकुल भी भला नहीं है।" जब परमेश्वर आपको पवित्र आत्मा दे देता है, तो मामला बस निपट जाता है। आप जानते होते हैं, कि आप कहाँ पर खड़े हुए हैं, आप जानते हैं, कि क्या घटित हुआ है; आप पर आपके छुटकारे के दिन तक के लिए सभी समय ; आपके इस दुनियावी सफर के गन्तव्य स्थान तक के लिए मोहर हो चुकी होती है। ओह, मेरे परमेश्वर! इसे तो ऐसा कर देना चाहिए, कि कोई भी परमेश्वर पर विश्वास और भरोसा कर ले; कि वह बस पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर ऊपर खड़ा हो जाये।

18 अब देखिए, इन कुंवारियों को पवित्र आत्मा नहीं मिला था; आप स्मरण रखिएँ, कि उनके पास केवल एक ही चीज की कमी पायी जाती थी, कि उनके चिरागदानों में तेल नहीं पाया जाता था। क्या यह सही है? बाइबिल कहती है, कि तेल पवित्र आत्मा को दर्शाता है; यही कारण है कि हम बीमारों पर तेल से अभिषेक तथा वगैराह वगैराह करते हैं, क्योंकि यह पवित्र आत्मा का प्रतीक है। अब, और तब यदि ... यदि पवित्र आत्मा उनपर नहीं आया था; और उनके पास तेल नहीं था... और जब वह आया तो उसने कहा... अब, उसने उन कुँवारियों से जिनके पास तेल नहीं था कहा था...

आप देखते हैं, वे पिछले कलीसियायी काल में थे, वहाँ उनमें से कुछ ऐसे थे जो भले लोग थे; परन्तु वे सितारे के उजियाले में नहीं थे; यहाँ पर मेरा अभिप्राय बत्ती के तेल में डुबे हुए होने से है; देखिए, और वे उससे बाहर थे; उन्होंने स्वयं अपने को उससे अलग कर लिया था। पौलुस ने अपने दिनों में कहा था, "वे जिन्होंने अपने आपको हम से अलग कर लिया, ऐसा लगता है, कि उनके पास विश्वास नहीं है।" देखिए, वे उनमें से बाहर निकल गये थे, वे हम में से इसलिए बाहर निकल गये क्योंकि वे हम में के थे ही नहीं।"

अब देखिए, ऐसा होना तो आरम्भिक इफिसुस काल में ही शुरु हो गया था, और ऐसा ही होता हुआ इस काल में आज तक आ गया है। उन प्रत्येक काल में ठीक ऐसी ही बात रही है- जो कुछ उन प्रत्येक काल में हुआ वह इन कालों में अध्यारोपित होता हुआ यहाँ तक आ गया। हम थोड़ी ही देर में इसका गहराई से अध्ययन करने जा रहे हैं।

19 अब ध्यान दीजिए, यद्यपि वह कुंवारी थी, फिर भी वह वहाँ से होकर गुजरी जहाँ रोना, विलाप करना, और दांतों का पीसना था।

मेरे प्यारे अमूल्य मित्र, मुझे यहाँ पर इस बात को कहने दें, क्योंकि आमतौर से यहाँ गिरजे में ऐसा होता है; कि जब मैं यहाँ पर होता हूँ तो मैं बस यहाँ पर आ जाता हूँ और चंगाई सभा करता हूँ और बीमारों के लिए प्रार्थना करता हूँ। परन्तु इस बार यह समय है जब मैं आपको एक लम्बे अरसे से यह कहता आ रहा हूँ, कि आप अपने विवेक को अपने पास धारण किये रखे रहें। अब देखिए, हम चाहते हैं... हम आना चाहते हैं, और एक दूसरे के प्रति सत्यनिष्ठ और सच्चे बने रहना चाहते हैं; क्योंकि हम अन्तिम दिन में रह रहे हैं। जी हाँ !

अब देखिए, यही है वह जहाँ तुम अमूल्य नाजरीन वालों, और पिलग्रीम वालों पवित्रीकारण के अन्त्रतगत असफल रह गये थे। समझे? अब, क्या आप जानते थे, कि यहूदा इस्करोइति भी ठीक इस स्थिति तक रहा था? यहूदा ने यीशु पर एक उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास किया था और उसने उसे उद्धारकर्ता के रुप स्वीकार किया था। और उसका भी पवित्रीकरण हुआ था। उसका यूहन्ना 17:17 में तब पवित्रीकरण हुआ था, जब यीशु ने कहा था, "हे पिता, सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है।" और वह वचन था। यह बिलकुल सच है।

मत्ती 10 में उन्हें बीमारों को चंगा करने, मरे हुओं को जिलाने, दुष्टात्माओं को बाहर निकालने का अधिकार दिया गया था। और वे देश के ... के सभी भागों में गये और उन्होंने दुष्टात्माओं को बाहर निकाला; और वे आनन्द मनाते हुए और चीखते-चिल्लाते हुए और परमेश्वर की बढ़ाई करते हुए वापस आये। और यीशु ने उन्हें बताया, "तुम इस बात से आनन्दित मत हो, कि दुष्टात्माएँ तुम्हारे वश में हैं, वरन इस बात से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं।" क्या यह सही है? और यहूदा उनके साथ था।

यहूदा उनके साथ था; परन्तु यह यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने से ढेड़ वर्ष पहले की बात थी।

20 अब देखिए, इसके बाद जब यहूदा के लिए पिन्तेकुस्त पर पवित्र आत्मा तथा और दूसरी ऐसी ही बात ग्रहण करने की बात आयी, तो उसने अपने रंग दिखा दिये थे। उसने... उसने यीशु का इन्कार कर दिया था; और वह उसके प्रति विश्वासघाती बन गया था।

और बिलकुल ठीक यही है वह जहाँ यह आत्मा आती है: लूथर, वैसली से होकर वह कलीसिया जो कुँवारे जीवन (वे ऐसे पाक-साफ, बढ़िया, भले लोग होते हैं जिनसे कभी आपने मुलाकात की हो) समेत पवित्रीकरण तक आ गयी थी; परन्तु जब इसकी बात आयी.... जब वे अन्यान्य भाषाओं में बोलने और पवित्र आत्मा ग्रहण करने वाली स्थिति पर पहुँचे, तो नाजरीनों, पिलग्रीमों, फ्री मैथोड़िस्टों ने यह कहा, "यह तो शैतान है।"

और ठीक तभी जब आप पवित्र आत्मा की निन्दा करते हैं, तो आप अपने आप को हमेशा हमेशा के लिए बन्द कर डालते हैं, क्योंकि जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध कुछ कहेगा उसका अपराध तो क्षमा कर दिया जायेगा, परन्तु जो पवित्र आत्मा के विरुद्ध कुछ कहेगा उसका अपराध कभी क्षमा नहीं किया जायेगा।" देखा, समझे?

21 स्मरण रखिए, सारे चेलों ने अन्यान्य भाषाएँ बोली थीं; यीशु ने क्रूस पर अन्यान्य भाषा बोलते हुए जान दी थी। समझे? यदि आप उनके साथ यहाँ पर व्यवहार नहीं कर सकते हैं, उनके साथ यहाँ पर मैत्रीपूर्ण रवैया नहीं अपना सकते हैं, तो आप वहाँ पर क्या करेंगे? फिर तो यदि ये दुष्टात्माएं हैं, तो वे ऐसी ही थी। अतः क्या आप देखते हैं, यही है वह जहाँ उसने अपना रंग दिखा दिया था?

यहाँ पर वह पाक-साफ कुँवारी चली आती है जो उन शेष लोगों के जैसे ही है जिनके जीवन शुद्ध हैं। मैं पुराने चलन वाली नाजरीन, पिलग्रीम ऑफ होलीनस कलीसियाओं को लूंगा जिन्होंने सचमुच में पवित्रीकरण पर विश्वास किया था; आप उनके जीवनों पर ऊंगली नहीं रख सकते हैं; वे उतने शुद्ध थे जितने कि वे शुद्ध हो सकते थे। यह एक अच्छी बात है कि हम सभों को भी उसी प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए। यह सही बात है कि आपको वैसा ही जीवन व्यतीत करना चाहिए।

22 अब देखिए, हम जानते हैं, कि हमारे पास पिन्तेकोस्तलों में बहुतेरे नकलची हैं। यह सच है। परन्तु जब आप एक नकली डॉलर को देखते हैं, तो आप जान जाते हैं, कि एक अच्छा डॉलर, एक असली डॉलर किसका बना हुआ होता है। यह सच है। और एक.. एक असली पवित्र आत्मा है, एक असली पवित्र आत्मा है जो अन्यान्य भाषाओं में बोलता है, और चिन्ह और आश्चर्यकर्म दिखाता है, और वह पिन्तेकुस्त के समय से रहा है। अत: हमारे पास इसकी नकल करनेवाले तो होने ही हैं।

हमारे पास एक ऐसी बुरी स्त्री तो होनी ही होती है जिसमें कोई भली बात नहीं होती है, ताकि एक असली सच्ची स्त्री प्रकाशमान हो सके। हमारे पास रात का- धोर अंधकार का एक समय होना होता है, ताकि दिखाया जा सके कि सूर्य का उजियाला महिमामय होता है। यह सच है, आपको बीमार पड़ना होता है, ताकि आप एक अच्छी सेहत का आनन्द उठा सके। यह अनुकूल-प्रतिकूल (सीधे-उल्टे) का नियम है, और ऐसा ही- - ऐसा ही हमेशा ही रहा है, और जब तक समय रहता है ऐसा ही हमेशा ही रहेगा... अब, अत: यही है वह जहाँ कलीसिया स्वयं अपने आप आगे बढ़ती रही।

23 अब देखिए, क्या यीशु ने (मत्ती 24 में) नहीं कहा था, कि ये दोनों आत्माएँ इतनी अधिक समानता में होगी, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भरमा दे? समझे ? परन्तु जिसे जगत की उत्पत्ति से पहले ही चुन लिया गया है उसके पास अनन्त जीवन है। और अनन्त जीवन ऐसा होता है, कि आप उससे पिण्ड नहीं छुड़ा सकते हैं। यह तो वैसा ही अनन्त है जैसे परमेश्वर अनन्त है। आपका अस्तित्व वैसे ही मिट नहीं सकता है जैसे परमेश्वर का अस्तित्व मिट नहीं सकता है। यह सच है। क्योंकि आप परमेश्वर के एक भाग हैं, आप परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं; आपका जीवन बदल चुका है और आप परमेश्वर का एक भाग हैं; आपके पास अनन्त जीवन है। ओह, मुझे यह बात अच्छी लगती है। क्या आपको अच्छी नहीं लगती

24 अब, यहाँ पर किसी ने मुझे एक छोटा सा लेख, एक छोटा सा प्रश्न दिया है। अब मैं इसका उत्तर देने में बहुत अधिक समय नहीं लूंगा। और स्मरण रखिए, कि प्रत्येक बार जब भी आप यहाँ पर एक छोटा सा प्रश्न रखते हैं, तो...तो... मैं उसका वह अच्छे से अच्छा उत्तर देने का यत्न करता हूँ जो मैं दे सकता हूँ। यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न था। एक व्यक्ति यह जानना चाहता है: क्या कलीसिया में स्त्री के लिए गवाही देना, या गीत गाना, या अन्यान्य भाषाओं में संदेश देना, संदेशों का अनुवाद करना, या भविष्यवाणी करना गलत है?

जी नहीं, यह गलत नहीं है; जब तक यह प्रबंध के अनुसार होता है यह गलत नहीं है। समझे। कलीसिया एक प्रबंध में रहती है, और केवल जब.... इसे करने का असली, सच्चा तरीका यह है: वे जो अन्यान्य भाषाओं में बोलते हैं और बातें करते हैं, या संदेश देते हैं; उन्हें यह सब कुछ उस मुख्य संदेश से पहले ही करना चाहिए जो प्रचारमंच से दिया जाता है; उन्हें इसे उस समय के दौरान कभी भी नहीं देना चाहिए, क्योंकि यह ऐसा ही होता है जैसा कि पौलुस ने वहाँ पर कहा था; पवित्र आत्मा उस एक स्थान पर एक ही समय पर विचरण कर रहा होता है।

परन्तु स्त्रियों को भविष्यवाणी करने का वरदान मिला हुआ होता है, और अन्यान्य भाषाओं में बोलने और उनका अनुवाद करने का वरदान मिला हुआ होता है, तथा ऐसे ही उन्हें सारे वरदान मिले हुए होते हैं; परन्तु एक प्रचारक होने के विषय में यह है: उन्हें प्रचारक नहीं होना है। उन्हें कलीसिया में प्रचार करने, प्रचारक का स्थान लेने, या शिक्षक होने के लिए, या कलीसिया में कुछ भी होने के लिए मना किया गया है। यह सच है। परन्तु जहाँ तक वरदानों की बात है, पहले कुरिन्थियों 12 के अनुसार स्त्रियों के पास वह सब वरदान हो सकते हैं, उन नौ वरदानों में से कोई एक या कोई सा भी एक वरदान हो सकता है; और इसमें कोई बंदिश नहीं है कि उनका संदेश अपने स्थान पर नहीं आना चाहिए।

25 आप देखिए?

हर एक संदेश अपने समय के लिए ठहरा करता है। यदि वहाँ कोई ऐसा है जो अन्यान्य भाषाओं में बोलता है, और वहाँ पर उसका अनुवाद करने के लिए कोई नहीं है, तो वह बोलने वाला तब तक खामोश रहे जब तक कि वहाँ पर कोई अनुवाद करने वाला नहीं हो जाता है। समझे? और ये वाले संदेश आमतौर से सभा से ठीक पहले ही दिये जाते हैं। इसके बाद भविष्यद्वक्ता या प्रचारक...जो कि नये नियम में एक भविष्यद्वक्ता ही है- एक प्रचारक जब आगे आता है, तो परमेश्वर उसमें से होकर विचरण या कार्य करने को जाता है। समझे? फिर जब वह अपना संदेश समाप्त कर चुका होता है, तो उसके बाद कोई दूसरा जन संदेश देता है, तब यह बस.... से पहले ही .... यह हमेशा ही , सर्वदा ही एक क्रम में - एक प्रबन्ध में होता है। परन्तु स्त्रियों के पास भी इसका अधिकार है।

26 इससे अगला यह है; मैं इसका उत्तर देने में बस थोड़ा सा ही समय लूंगा। मैं इस मुख्य पंक्ति को पढ़ने जा रहा हूँ:

एक ही बाइबिल के अनुवाद किये गये तीन विश्वास आरम्भ होते हैं।

अक्टूबर, वाशिंगटन:- कैथोलिक, प्रोटिस्टेन्ट, और यहूदी विद्वानों ने संयुक्त रुप से एक दल के रुप में पवित्र वचनों पर एक नये सिरे से काम करना आरम्भ कर दिया है; जो हो सकता है, एक बहुप्रतिक्षित प्रमाणिक धर्मग्रन्थ संग्रह प्रमाणित हो।

इससे पहले कि मैं इसकी उद्घोषणा करूं , कुछ बातें हैं जिनका मैं यहाँ पर थोड़ा सा अध्ययन करना चाहूँगा। दूसरे शब्दों में यह है, कि आप बिलकुल ठीक ठीक वह घटित होते हुए देख रहे हैं जिनके विषय में हम बातें कर रहे हैं—बिलकुल ठीक वह घटित हो रहा है जो पवित्रशास्त्र कहता है कि इन दिनों में घटित होगा; कि ये संस्थाएँ आपस में एक साथ मिल जायेंगी और पशु की एक मूरत खड़ी करेंगी। बिलकुल ठीक ऐसा ही है। उन्होंने ऐसा ही करने का यत्न किया है, और वे इस पर कार्य कर भी रहे हैं और अब उनके पास इसे प्रस्तुत करने का वह बेहतर अवसर हो गया है जो कभी उनके पास हो सकता था, क्योंकि यह सब कुछ उनके हाथों में ही है। और यही कारण है कि मैं भविष्यवाणियों से सम्बन्धित इन संदेशों को ला रहा हूँ, क्योंकि मैं सोचता हूँ कि ये समय के अनुसार हैं।

27 और यदि यहाँ पर कोई ऐसा है जो प्रत्येक रात्रि को वापस आ सकता है, तो हम इसे जल्दी आरम्भ करके जल्दी ही समाप्त करने का यत्न करेंगे। और यदि... यदि मैं विषय का समापन नहीं कर पाता हूँ, तो मैं अगली सुबह उद्घोषणा करूंगा। यदि हम 19 वें पद तक

अध्यापन करते हुए नहीं चले जाते है; यदि आज रात्रि हम नौवें पद से बीसवें पद तक नहीं ले पाते हैं, तो हम इसे कल सुबह दस बजे आरम्भ करेंगे; हम सभा की समाप्ति पर आपको इससे अवगत करा देंगे कि हम इसे किस प्रकार करेंगे।

इसके बाद कल रात्रि को हम इफिसुस की कलीसिया का अध्ययन करेंगे; हम इससे आरम्भ करके इफिसुस; इफिसुस कलीसियायी काल; और स्मुरना; और पिरगुमन; और थुआतीरा; और सरदीस; और फिलेदिलेफिया; और (अगले रविवार को) लौदीकियायी काल का अध्ययन करने जा रहे हैं।

28 और यह जानते हुए कि ये महान मोती पथ में पड़े हुए हैं; मेरे लिए उन पर से अपने हाथों को समय आने तक दूर रखना बहुत मुश्किल होता है। मैं बस उन्हें वहाँ नीचे देखता हूँ, और ऐसा अनुभव कर रहा होता हूँ, कि पवित्र आत्मा इसे लोगों को पोषित कर रहा है, कि मैं इससे ऐसा हो उठता हूँ कि मैं एक दम से जल्दी से उछल पड़ें और ..... और उनके विषय में कुछ कह डालें। परन्तु मुझे उन्हें थामे रहना होता है और उन्हें उनके काल और उनके समय पर सुव्यवस्थित करना होता है।

अत: यदि आप रात को आने में चूक जाते हैं, तो फिर आप टेप लेने के लिए या किसी उस माध्यम को लेने के लिए सुनिश्चित रहें जिस भी रीति से आप इसे समझ सकते हैं; क्योंकि मैं चाहता हूँ कि यह सभी जगह जाये। और मैंने ऐसा इसीलिए किया है, क्योंकि मैंने ऐसा करने के लिए पवित्र आत्मा की अगुवाई अनुभव की है; और मेरा ऐसा करने का यही एक मात्र कारण है। और मैं.... यदि मैं नहीं सोचता कि यह कलीसिया की सहायता करेगा.....

और स्मरण रखिएगा, इस दिन में शीघ्र ही एक ऐसी घड़ी आनेवाली है। जब हमारी ये सभाऐं नहीं होंगी; और आपको तो इसे अभी ही करना है जबकि हमारे पास इसे करने का समय है। देखिए, हम नहीं जानते हैं कि अब वे इसे किस समय रोक देंगे।

29 और चूँकि कलीसियओं में एक एकीकरण होगा, अत: वे आपस में एक साथ एकीकृत हो जायेंगी; ताकि वे कलीसियाओं के संध का एक अध्यक्ष बनायें जो कि उन्हें पहले ही से संयुक्त राष्ट्र की एक बड़ी इमारत में मिल चुका है; और हर एक नामधारी कलीसिया उसके अंदर हैं। और या तो आपको उन नामधारी कलीसियाओं में से किसी एक कलीसिया का सदस्य होना होगा, वरना आपको बाहर निष्कासित कर दिया जायेगा। और तभी वह समय होगा जब हमें अपना असली रुप दिखाना है और बस इस बात में सुनिश्चित रहना है, कि हम जानते हैं... यह कोई तुकबंदी नहीं है.... परन्तु हम तो यहोवा यूँ फरमाता है वाला वचन जानते हैं, कि हम कहाँ पर खड़े हुए हैं। सच्ची छोटी कलीसिया सर्वदा ही अल्पमत में रही है।

यह एक नन्हा सा, छोटा सा ही झंड़ होता है जो - एक छोटे धागे, उस छोटे से लाल डोरे के जैसा ही होता है जो बाइबिल से होकर हरकत कर रहा होता है; परन्तु यह हमेशा ही एक कलीसिया रहता है। और हम इसे स्मरण रखना चाहते हैं।

30 अब इससे पहले कि हम फिर से पढ़े, मैं एक छोटी सी टिप्पणी देना चाहता हूँ। इस सुबह हमने यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य के सर्वोच्च परमेश्वरत्व वाली स्थिति को लिया था, जिसे परमेश्वर ने हम पर इस सुबह सर्वोच्च परमेश्वर के रुप में प्रकट किया, कि : मैं वह महान हूँ (यह नहीं, कि मैं था, या मैं होऊँगा) मैं हूँ; वह सदैव ही मैं हूँ है। और हम ने .... के प्रकाशितवाक्य के ....प्रकाशितवाक्य के इस पहले अध्याय पर ध्यान दिया था....

यह किस का प्रकाशितवाक्य है? यीशु मसीह का। वह सबसे पहली क्या बात है जिसके रुप में वह स्वयं अपने को यहाँ पर प्रकट करता है? स्वर्ग के परमेश्वर के रुप में; त्रिएकता के एक ईश्वर के रुप में नहीं, वरन एक ही परमेश्वर के रुप में: वह एक ही परमेश्वर है, और वह स्वयं अपने को प्रकाशितवाक्य के पहले अध्याय में इसी प्रकार से ही प्रकट करता है; और वह पहले ही अध्याय में ऐसा चार बार बताता है, ताकि इसके विषय में कोई गलती न हो।

सबसे पहली बात तो आपको यह जाननी है, कि वह कोई भविष्यद्वक्ता नहीं है, वह एक छोटा ईश्वर नहीं है, वह द्वित्तयक ईश्वर नहीं है; वह तो परमेश्वर है। वह परमेश्वर है। और अत: यही कारण है कि यह प्रकाशन उजागर होता है, और आज रात्रि हम इसी पर ही बतलाना ज़ारी रखेंगे जबकि हम उसके व्यक्तित्व के सात -आयामी अस्तित्व पर आते हैं।

31 और ओह, होने पाये परमेश्वर ही हमारी सहायता करे, जबकि हम इन वचनों की शिक्षा देते हैं। मैंने.... मैंने इसका ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया है, लेकिन मैं तब तक बाट जोहता रहा जब तक कि मैं प्ररेणा पाने के लिए यहाँ प्रचारमंच पर नहीं आ गया। चूंकि मैं यह अनुभव करता हूँ, कि हम मसीह यीशु में एक साथ मिलकर स्वर्गीय स्थानों में बैठे हुए हैं, और वह आपका आत्मा, आपका भाग, वह आग (पवित्र आत्मा) की लौ जो आपके ऊपर है किसी दूसरे के पास आती है, और किसी दूसरे से किसी और के पास जाती है, और यह मसीह की एक बड़ी देह के समान होने लगती है जो अपनी लौ जलाये हुए दीप्तिमान हो; और यही है वह जहाँ प्रकाशन होते हैं.....

32 अब वह बात देखिए जिसके विषय में हम बातें कर रहे हैं। मुझसे यह प्रश्न पूछा गया था: क्या स्त्रियों को.... तथा वगैराह वगैराह बिलकुल ठीक यही है वह जो कलीसिया ने आरम्भ में अपने अन्धविश्वास- अपनी दुर्व्यवस्था में होकर आरम्भ किया था; उन्होंने जन साधारण से सारे धार्मिक कार्य-कलाप लेकर प्रचारमंच पर ठहरा दिये थे। परन्तु परमेश्वर तो जन साधारण का ही परमेश्वर है। वह तो हर एक मनुष्य में कार्य करता है; वह तो प्रत्येक उस हृदय में वास करता है जिसके अंदर वह जा सकता है। वह उन वरदान पाये हुए लोगों की खोज करता है और उनमें होकार काम करता है।

अब देखिए, यदि शैतान उन्हें किसी एक बात में पकड़ नहीं सकता है, तो वह फिर से वापस आता है और बेबात ही कोई बड़ा संगठन बना डालता है, और लोगों को पथ-विचलित कर डालता है। जैसाकि पौलुस ने कहा था, "जब तुम आपस में इकट्ठा होते हो और यदि तुम सब अन्यान्य भाषाएँ बोलो, और कोई अनजान तुम्हारे बीच में आ जाये, तो वह क्या तुम्हें सनकी, मूर्ख नहीं कहेगा?" कोई अन्यान्य भाषा में बोलता है, और यह करता है, और यह वाला बस व्यवस्था से ही बाहर हो जाता है, तो इससे काम नहीं बनेगा। परन्तु उसने कहा था, "तब यदि कोई... यदि कोई भविष्यवाणी करता है और हृदय के गुप्त विचारों को प्रकट करता है, तो वे कहेंगे, कि "सचमुच में परमेश्वर तुम्हारे साथ है।"

परन्तु यदि एक जन प्रकाशन के द्वारा अन्यान्य भाषाएँ बोलता है और उसका अनुवाद करता है, जो कोई ऐसी बात होती है जो कलीसिया की उन्नति के लिए है, तब तो उससे सारी कलीसिया की ही उन्नति होती है। जब कोई बोलता है, तो परमेश्वर ही उस भाषा में बोल रहा होता है जिसके विषय में हम कुछ नहीं जानते हैं, और वह इसे किसी एक जन के द्वारा देता है, और कोई दूसरा जन उसका अनुवाद करता है, और कोई बात कहता है जो बिलकुल ठीक वैसे ही घटित होती है जैसी कही गयी थी, तो फिर प्रभु का आत्मा आपके मध्य में है। और ओह, आइये हम इसके लिए मेहनत करते रहें, मित्रों; आइये हम.. हम उस आग को जलाये रखें।

33 अब, बस इससे पहले कि हम पवित्र शास्त्र के इस... इस महान संग्रह को खोलें, मैं जानना चाहूँगा, कि क्या यह बहुत बड़ी बात होगी, कि हम बस खड़े हो जायें और कुछ मिनटों के लिए अपनी मुद्रा को बदलें, जबकि हम प्रार्थना करते

हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर जिसने प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, और उन्नीस सौ वर्षों के बाद उसे हमारे पास स्वर्ग के अचूक परमेश्वर के रुप में पेश किया है, हम आपको इसके लिए और उसकी उस उपस्थिति के लिए जो हमारे साथ दिनों दिन हमारे दैनिक कार्य-कलापों में रहती है, धन्यवाद करते हैं। और हम यह जानकर अति आनन्दित हैं, कि यह वह असमंजस्य की घड़ी है जब संसार नहीं जानता है, कि क्या करना है, वे जमीन में खढ़ड़े खोद रहे हैं, और वे अपने आपको कांकरिट के अंदर किलाबंद कर रहे हैं; परन्तु हे परमेश्वर, वे अपने आपको परमेश्वर के कोप से नहीं बचा सकते हैं।

प्रभु, इसका तो केवल एक.. एक ही उपाय है; और हम बड़े आनन्दित हैं कि हमने उसे ग्रहण कर लिया है- "जब मैं लोहू देदूंगा, तो मैं तुम्हें छोड़ कर आगे निकल जाऊँगा।' ओह, हम आज रात्रि परमेश्वर के उस मेमने के लोहू की उस पूर्ण पर्याप्त सुरक्षा के लिए कितने आनन्दित हैं, जो हमारा महायाजक बना हुआ आज रात्रि महिमा में खड़ा हुआ हमारे अंगीकार पर हमारे लिए बिचवाई कर रहा है। हम आज रात्रि उसे, अर्थात् महान वक्ता, महान पवित्र आत्मा, महान मरहमदाता, महान जीवनदाता को अपने साथ पाकर बहुत प्रसन्न हैं।

और अब, प्रभु परमेश्वर, जैसा कि मैंने इन लोगों को आज रात्रि यहाँ पर इस छत के तले एकत्र होने के लिए बुलाया है और हम यहाँ पर एक कलीसिया के रुप में या उसके एक अंश के रुप में यहाँ पर किसी व्यक्ति-विशेष के नाम में नहीं, वरन यीशु मसीह के नाम में ही एकत्र हुए हैं, तो होने पाये वह पवित्रात्मा जिसने उसकी देह और मस्तिष्क को अपने आधीन रखा और उस पर काबू रखा; हमारे मध्य में आज रात्रि आये, और वचन का अर्थ बताये; और वचन का प्रचार करे; और इसे हमारे भूखे हृदयों को प्रदान करे, जबकि हम उसकी बाट जोहते हैं, क्योंकि हम यह उसी के नाम से और उसी की महिमा के लिए मांगते हैं । आमीन! (कृपया बैठ जायें)

34 अब, आप जिन जिन के पास अपनी अपनी बाइबिलें हैं, आप प्रकाशितवाक्य के पहले अध्याय को निकाले, और नौवें पद से आरम्भ करें। आप अपनी पेन्सिलें,और कागज तैयार रखें, मैं... मैं आपको छोटी छोटी तारिखें तथा ऐसी ही दूसरी बातें , जबकि मैं इसका अध्यापन कराता चला जाता हूँ।

अब देखिए, यह है... वास्तव में इस सुबह का संदेश एक उपदेश के जैसा था, जिसमें परमेश्वर के व्यक्तित्व के प्रकाशन के ऊपर नींव रखी गयी; जिसमें परमेश्वर मसीह में प्रकट हुआ। कितने लोग इसका विश्वास करते हैं? परमेश्वर मसीह में प्रकट हुआ था, यहोवा मसीह में प्रकट हुआ था। अब; परमेश्वर को कहाँ पर प्रकट होना है? अपने लोगों के साथ अपनी कलीसिया में; हम में। ठीक वही आत्मा, ठीक वही काम, ठीक वही प्रकटीकरण, ठीक वही प्रेम, ठीक वही क्षमा, ठीक वही संयम, नम्रता, धैर्य, मेल-शान्ति, दया, ठीक वही सब कुछ जो मसीह में था, कलीसिया में है।

इसे स्मरण रखिए, इसे अपने मस्तिष्क में संजोय कर रखिए: वह सब कुछ जो परमेश्वर था वह मसीह में उंडेल दिया गया था; वह सदेह परमेश्वरत्व की परिपूर्णता था; और वह सब कुछ जो मसीह था कलीसिया के अंदर उड़ेल दिया गया- परमेश्वर हमारे ऊपर, परमेश्वर हमारे संग, परमेश्वर हमारे अंदार; इस प्रकार से परमेश्वर की त्रिएकता यह है; परमेश्वर तीन भिन्न भिन्न प्रकार से प्रकट हुआ पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा।

35 प्रकाशितवाक्य यही दिखाता है, कि वह तीन ईश्वर नहीं है, और ना ही वह तीन टुकड़ों में कटा हुआ है। परन्तु वह तो एक ही परमेश्वर था जो पितृत्व वाले दिनों में था; वही एक परमेश्वर ही था जो पुत्रत्व वाले दिनों में था; और वही परमेश्वर ही पवित्र आत्मा की कार्य स्थिति के दिनों में है; यह एक ही परमेश्वर है, ये तीन अलग अलग नहीं हैं; ना ही तीन व्यक्ति है, और ना ही तीन व्यक्तित्व है।

आप बिना व्यक्ति हुए एक व्यक्तित्व नहीं हो सकते हैं। कुछ लोग कहते हैं, वह कोई तीन व्यक्ति नहीं है; परन्तु वह तो तीन व्यक्तित्व है।" आप उसे विभाजित नहीं कर सकते हैं, क्योंकि यदि वह "एक व्यक्तित्व है, तो वह एक व्यक्ति है; और व्यक्तित्व होने के लिए उसे एक व्यक्ति होना ही है। अत: वह एक व्यक्ति है, एक व्यक्तित्व है : वह कल, आज और युगानुयुग एक सा है। वही अल्फा, ओमिगा है; वही है वह जो था, जो है, और जो आयेगा। ओह, वही सब कुछ है। मुझे यह बात प्रिय लगती है।

36 उसके स्वभाव, उसके जीवन, उसके कामों पर दृष्टि डालिएँ। इसे ठीक यहाँ पर इस टेबरनिकल में ठीक वैसे ही प्रकट होना चाहिए जैसे यह उसके दिनों में प्रकट हुआ था (मैं यह बात पक्षपात में नहीं कह रहा हूँ; परमेश्वर यह जानता है) इसे ना केवल यहीं पर ही, वरन संसार भर में प्रकट होना चाहिए। मैं आनन्दित हूँ, कि ऐसा ही है। इसके बाद हमें मालूम होता है, कि हम कहाँ पर खड़े हुए हैं, क्योंकि ठीक वही आत्मा हमारे पास हमारे अंदर है, जो कि हमारे साथ विचरण कर रहा है, और दिखा रहा है कि वह यहाँ पर है।

यह हम नहीं हैं, यह तो वही है; हम उन कामों को नहीं कर सकते हैं; यह तो परमेश्वर ही है। इसके अतिरिक्त इस वैज्ञानिक जगत में उसने इस बात को होने दिया, कि उसकी तस्वीर उतारी जाये। वह हमारे साथ, हमारे चारों ओर, हमारे ऊपर, और हमारे अंदर और बाहर है; और हमारे में से होकर काम कर रहा है। ओह, यह क्या ही शानदार बात है !

वे एक छोटा सा गीत गाया करते थे।

मैं ही हूँ वह जिसने मूसा से जलती हुई झाड़ी में बातें कीं,
मैं ही अब्राहम का परमेश्वर, और भोर का चमकता तारा हूँ।
मैं ही शेरोन का गुलाब हूँ, तुम क्या कहते हो कि मैं कब आया?
क्या तुम मेरे पिता को जानते हो, या क्या तुम उसका नाम बतला सकते हो?
ओह, तुम क्या कहते हो, कि मैं कौन हूँ; या तुम क्या कहते हो, मैं कब आया?
क्या तुम मेरे पिता को जानते हो, या तुम उसका नाम बतला सकते हो?
मैं अल्फा, ओमिगा; आदि से लेकर अंत तक हूँ।
मैं ही सम्पूर्ण सृष्टि हूँ, और मेरा नाम यीशु है।

37 ओह, यह क्या ही जबरदस्त प्रकाशन है !अब आप स्मरण रखें, आप इसे धर्मशास्त्र के ज्ञाताओं के द्वारा प्राप्त नहीं कर सकते हैं; यह उस प्रकार से नहीं आता है। यह तो बस एक प्रकाशन के रुप में ही आता है। जल में डुबाकर बपतिस्मा देने में यीशु मसीह के नाम का उपयोग करना ; यह तो केवल प्रकाशन के द्वारा ही दिया जा सकता है। परमेश्वर और यीशु केवल एक ही व्यक्ति है, यह केवल प्रकाशन के द्वारा ही आता है। सम्पूर्ण बाइबिल का निर्माण प्रकाशन पर ही हुआ है। सम्पूर्ण कलीसिया का निर्माण प्रकाशन पर ही हुआ है। मत्ती 17 कहता है.... मैंने कहा, "मैं इस पत्थर पर (आत्मिक प्रकाशन पर) अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल नहीं होंगे।"

हम किसी को भी इसकी चुनौती देते हैं, कि वह हमें इतिहास या पवित्रशास्त्र में कहीं भी वह दिखाये जहाँ कभी किसी व्यक्ति का कैथोलिक कलीसिया के बाहर लूथर के दिन तक पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा हुआ हो। उसके बाद प्रोटिस्टेन्ट कलीसिया ऐसी ही थी....

38 और हर एक वह बुराई.... आप कान लगायें जबकि हम कलीसियायी कालों का अध्ययन करते चले जाते हैं। हर एक वह बुराई जो पहले कलीसियायी काल में थी, वह अध्यारोपित होती हुई अगले कलीसियायी काल में आ गयी, और यह सिलसिला आगे को चलता रहा जब तक कि आखिरकार इसका अंत इस अन्तिम दिन में पूर्ण धर्मत्याग में नहीं हो जाता है। हर एक वह बुराई, हर एक वह छोटा सा मत जो आरम्भ हुआ था वह प्रत्येक कलीसियायी काल में अध्यारोपित होता हुआ आगे बढ़ता चला गया। जैसे जिस दाखलता ने उत्पत्ति में बढ़ना आरम्भ किया था वह कलीसिया में से होकर अपना आड़ा-तिरछा मार्ग बनाती हुई अन्तिम दिनों में बाहर निकल कर आ जाती है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, कि बाइबिल कहती है, "धन्य हैं, वे जो उस दिन में बच निकलते हैं ; जी हाँ, श्रीमान, यह सब बातों से बच निकलने की ही बात है।

39 अब, परमेश्वर से मांगें.... जबकि हम प्रकाशितवाक्य पर बातचीत कर रहे हैं, आप उससे यह मांगें कि वह आपको इसका प्रकाशन दे। क्योंकि यह केवल प्रकाशन के द्वारा ही जाना जाता है; और केवल प्रकाशन के द्वारा ही आपका उद्धार हो सकता है। बौद्धिक रुप से तो आप केवल उसके ज्ञान को ही जानते हैं; लेकिन आपका उद्धार तब तक नहीं हो सकता है जब तक कि आपको इसका प्रकाशन नहीं मिल जाता है। कोई भी यीशु को मसीह नहीं कह सकता है, वरन केवल पवित्र आत्मा के द्वारा ही कह सकता है। यही है वह जो बाइबिल कहती है। कोई भी मनुष्य यह नहीं कह सकता है, कि यीशु ही मसीह है जब तक कि उसने पवित्र आत्मा ही न पाया हुआ हो।

वह शायद यह तो कह सकता है, "पादरी ने ऐसा कहा है, बाइबिल ने ऐसा कहा है। उनकी बात सच हो। "कलीसिया ऐसा कहती है।" यह सच है। परन्तु आप इसे अपने आप से तब तक नहीं जान सकते हैं जब तक कि पवित्र आत्मा ने ही इसे आप पर प्रकट न किया हो, और वह आपके अंदर वास्तविकता न बन गया हो। "कोई भी मनुष्य यीशु को मसीह नहीं कह सकता है, केवल पवित्र आत्मा के द्वारा ही कह सकता है।" ज्ञान के द्वारा नहीं, बुद्धि के द्वारा नहीं।

40 वे कैसे एक ऐसी बाइबिल बनाने जा रहे हैं, कैसे एक ऐसा निचोड़ निकालने का प्रयास करने जा रहे हैं, जो यहूदियों, कैथोलिकों, और प्रोटिस्टेन्टों को उपयुक्त लगे; जबकि वे आपस में एक दूसरे से ऐसे अलग अलग हैं जैसे दिन और रात । उन्होंने सोचा है, कि यहूदी उन से बेहतर जानते हैं, परन्तु मैं सोचता हूँ, कि वह समय बस शायद आने को है, जब इस सब को इस बड़े धर्मत्याग के अंदर जाकर विलीन हो जाना है। अत: इन सब बातों में यह है...

स्मरण रखिए, हम इसे रोक नहीं सकते हैं; परन्तु हम तो केवल एक ही काम कर सकते हैं, कि वहाँ बाहर उजियाला चमकायें। शायद हो सकता है, कि शायद ऐसा करने में हमें एक शहीद होकर गुजर जाना पड़े, अत: केवल यही एक तरीका है जो हम ऐसा कर सकते हैं। परन्तु बहुतेरों को ऐसा करना पड़ेगा। और इसी प्रकार से बाइबिल और वे बातें सुव्यवस्थित हैं जिनमें हम फंस जाते हैं। यदि मैं उन पर ध्यान नहीं देंगा तो मैं उन में फंस जाऊँगा।

41 अब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जो पहली बात है उसे देखिए, यह इससे आरम्भ हाती है, कि यह यीशु मसीह का प्रकाशन है, कि वह कौन है। अब देखिए, यीशु मसीह ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। हम यह जानते हैं। कितने लोग इसका विश्वास करते हैं, वे आमीन कहें? (मड़ेली "आमीन' कहती है- सम्पा.) वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, और उसका एक ही नाम है। वही नाम ही एक मात्र ऐसा नाम है जिससे स्वर्ग के नीचे आपका उद्धार होता है। वह नाम है: यीशु मसीह।

वे जलाश्य पर क्यों इससे भयभीत होते हैं; यह एक ऐसी बात है जिस पर मैं आश्चर्य नहीं कर सकता हूँ। समझे? ऐसा इसी लिए है, क्योंकि वह आत्मा जो पूर्वकाल में स्मुरना काल में थी रेंगकर अन्दर चली आयी और अपना आड़ा तिरछा मार्ग बनाते हुए उस बड़े अंधकार वाले काल के अन्दर चली आयी, और इसे एक शिक्षा -सिद्धांत बना ड़ाला, और वह इसके साथ ही इस अन्तिम दिनों में चली आयी है। अब आप इतिहास और बाइबिल पर निगाह लगाये रखें, जबकि हम इस सप्ताह इसका अध्ययन करते चले जाते हैं, यह कैसे उन बातों को उज़ागर करते हैं।

42 अब देखिए, अगली बात यह है: यह मसीह के द्वारा एक दूत के माध्यम से यूहन्ना को इस लिए दिया गया, ताकि यह (किसको?) उसकी कलीसियाओं को दिया जाये; ताकि यह उसकी कलीसियाओं पर प्रकट किया जाये। और वे सात तारे जो उसके हाथ में थे वे सात कलीसियाओं के सात सुसमाचारदूत हैं। और हर एक वह मनुष्य जिसके पास कभी वह संदेश होगा उसके पास यह होगाउसके पास ठीक वही सच्चा संदेश होगा जो आरम्भ में शुरु हुआ था।

और कल, जब हम अध्ययन करते हुए उन गहरी बातों पर आ पहुँचते हैं। जहाँ हम देखेंगे कि परमेश्वर ने इन बातों को किस प्रकार से अंदर गतिमान किया; तो यह बड़ी ही शानदार बात होगी, कि यह बस आप से जयनांद ही करवा डालेगी। मैं-. मैं इन्हें पढ़ता था और फिर थोड़ी देर के लिए इधर-उधर चलता फिरता, और जयजयकार करता, और वापस पीछे चलता, और फिर से नीचे बैठ जाता, और उसके बाद फिर थोड़ा सा चलता-फिरता। मैं बस यह जानकर कितना आनन्दित हूँ.... परमेश्वर हमारे प्रति कितना अनुग्रहकारी रहा है जो उसने हमें इन बातों को इस घड़ी में जिसमें हम रह रहे हैं देखने दिया हैं।

क्यों, यह तो ठीक वैसा ही है। जैसा कि यीशु ने यह कहा था, "एक आदमी ने एक निश्चित हीरे को खरीदने के लिए अपना सब कुछ बेच डाला था।" आप इसे पाने के लिए जगत, और जगत की बातें तथा हर एक वह बात जिनका सम्बन्ध किसी और से है बेच डालते हैं। यह सच है, कि आप अपना पूरा पूरा लंगर उसी पर ही डाल दें। उसके वचन का उसका प्रकाशन देखने के लिए तो प्राण के लंगर की ही आवश्यकता पड़ती है।

43 अब देखिए, जो कोई इसे पढ़ता है, वह आशीष पाता है। क्या यह सही है? और हमने इस सुबह ही कहा था, कि यदि आप इसे पढ़ नहीं सकते हैं....धन्य है वह जो कोई इसे सुनता है, जो कोई इसे पढ़ता है। अब, मैंने इसका आरम्भ उस एक आशीष से किया था जो उनके लिए है जो कभी बैठेंगे और इसे पढ़ते हुए सुनेंगे; और उसके ऊपर एक स्राप होगा जो कोई इसमें से कुछ निकालने का या इसमें कुछ जोड़ने का यत्न करेगा।

फिर तो यह है- यदि बाइबिल स्पष्ट रुप से यह प्रकट करती है, कि यीशु ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, तो हाय उस पर जो इस बात को वहाँ से बाहर निकालेगा। जी हाँ ! यह एक प्रकाशन ही है। जो कोई कुछ जोड़ेगा.... यह तो प्रकाशन का एक पूर्ण धर्मग्रन्थ-संग्रह है; यह परमेश्वर की अन्तिम पुस्तक है; उसका अन्तिम वचन है, उसका अन्तिम.... और कोई भी वह प्रकाशन जो इसके विपरीत आता है, वह एक झूठी भविष्यवाणी काही है, और वह परमेश्वर की ओर से नहीं है; क्योंकि यही सत्य है।

और स्मरण रखिए, बाइबिल में यही एक मात्र ऐसी पुस्तक है जिसे स्वयं यीशु मसीह ने पृष्ठांकित कराया। इसके विषय में सोचिएँ ! यही एक मात्र एक ऐसी पुस्तक है जो उसका अपना प्रकाशन है, यही एक मात्र ऐसी पुस्तक है जिस पर उसने अपनी मोहर लगायी है; और अपनी आशीषों और अपने स्रापों को ठहराया है: जो इसे ग्रहण करेंगे उनके लिए तो आशीर्षे हैं और जो इसे ग्रहण नहीं करेंगे उनके लिए स्राप हैं।

44 अब, अब देखिए, नौवें पद का आरम्भ करने के लिए हम अब इस पतमुस टापू पर आते हैं। सबसे पहले हम इसे कहना चाहते हैं... इसका शीर्षक है: पतमूस टापू का दर्शन ! यह 95 ईसवीं से लेकर 96 ईसवीं तक मिला था। इसका स्थान पतमूस का टापू था। इसकी स्थिति एशिया माइनर के पश्चिम से तीस मील दूर ऐजियन सागर में है जो भूमध्य सागर से घिरा है, इफिसुस की कलीसिया के सामने हैं। यही वह स्थिति है जहाँ पर यह है।

अब सोचिए! एक छोटा सा टापू एशिया माइनर के तट पर ऐजियन सागर में विधमान है। यह बस फिलेदिल.....की कलीसिया....या इफिसुस की कलीसिया के सामने था जहाँ पर पहला सुसमाचार दिया गया था; जहाँ पर उस समय में यूहन्ना याजक था। दूसरे शब्दों में यह है कि...कि वह वहाँ पर था कि जब वह वहाँ से पीछे मुड़कर पूर्व की ओर देखता ; तो वह सीधा ही अपनी कलीसिया जहाँ पर से कि वह था, की ओर दृष्टि लगा रहा था। और जो पहला संदेश उसकी कलीसिया के लिए था उसने एक कलीसियायी काल को दर्शाया था। यह बिलकुल ठीक बात है, यह दर्शन संत यूहन्ना दिव्य को दिया गया था, जो उस समय पर इफिसुस की कलीसिया का याजक था।

45 तब उस समय इसकी क्या स्थिति थी? यह कहाँ पर था और इसकी क्या स्थिति थी? बिलकुल ठीक है: यह इतिहास में एक पत्थरीला टापू जाना जाता है, जो सांपों, बिच्छुओं और छिपकलियों तथा इसी प्रकार के दूसरे जीवों से भर पड़ा था। और यूहन्ना के दिनों में इसका एक "एल्कतरज"के रुप में प्रयोग किया जाता था, यह एक ऐसा स्थान होता था जहाँ रोमन सम्राट उन अपराधियों को, उन बहुत ही बुरे अपराधियों को; बुरे अपराधियों को काला-पानी की सज़ा देते थे, जिन्हें वे जेल में तथा ऐसे ही दूसरे स्थान में नहीं रख सकते थे; अत: उन्हें वहाँ उस टापू । पर मरने के लिए छोड़ दिया जाता था; उन्हें वहाँ पर तब तक रहने दिया जाता था जब तक कि वे मर नहीं जाते थे।

अब प्रश्न यह है: वह क्या कारण है जो यूहन्ना वहाँ पर था, वह तो एक भक्त जन था, एक धर्मी जन, एक अच्छी प्रतिष्ठा वाला, भले चरित्र का व्यक्ति था, कभी मुसीबत में न पड़ा था, तो फिर क्योंकर ऐसा व्यक्ति वहाँ पर था? बाइबिल कहती है, "परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह की गवाही के कारण।"

46 अब देखिए, हमें इसकी यह स्थिति मिलती है: पतमुस टापू ऐजियन सागर में समुद्री तट से तीस मील दूर था, वह छिपकलियों और बिच्छुओं और ऐसे ही और दूसरे जीवों से भरा पड़ा था; और उसका बंदीगृह के रुप में वैसे ही प्रयोग किया जाता था, जैसे "एल्कतरज" का होता है। वे उस कैदी को वहाँ पर छोड़ देते थे जिसे वे बंदीगृह में नहीं रख सकते थे, वे.... ऐसे बूंखार अपराधियों को यहाँ बाहर एल्कतरज में छोड़ देते थे।

और अब उन्होंने इस संत जन यूहन्ना दिव्य को जो शिष्यों में अन्तिम था, और जो केवल एक मात्र ऐसा था जो स्वाभाविक मौत से मरा था, लिया.... इससे पहले कि यूहन्ना इस टापू पर पहुँचता उस पर जादू-टोना करने का आरोप लगाया गया था, और उसे चौबीस घंटे के लिए खोलते हुए तेल (ग्रीस) में डाला गया था, और वह झुलसा तक नहीं था। आप किसी इन्सान में से पवित्र आत्मा को उबालकर जला नहीं सकते हैं.... वह तो खुद अपने आप में एक आग है। उन्होंने उसे खोलते तेल के कड़ाहे में चौबीस घंटे के लिए रखा और उसे कोई हानि नहीं पहुँची थी। और कहा जाता है, इसी कारण ही रोमियों ने उस पर यह आरोप लगाया, कि वह एक जादू-टोना करने वाला है और उसने खोलते तेल पर अपना जादू कर दिया है। दुनियावी मस्तिष्क क्या क्या सोच सकता है!

47 अब, आप देखते हैं, जब वे हमें दिमाग पढ़नेवाला, और भावी बतानेवाला, और बालजबूल कहते हैं, तो क्या आप देखते हैं, कि वही पुरानी आत्मा कहाँ से आती है? परन्तु आप दृष्टि करते हैं, कि असली सच्चा पवित्र आत्मा कहाँ से आता है? यह एक कलीसियायी काल है ! समझे? उन्होंने उसे चौबीस घंटे धधकते , खोलते हुए तेल में रखा और उसने उसे कदाचित स्पर्श तक भी नहीं किया था। ओह, परमेश्वर ने उसे अपने में पवित्र आत्मा के द्वारा किस प्रकार से बचाये रखा था। उसका कार्य समाप्त नहीं हुआ था।

उन्होंने उसे उस टापू पर दो साल रखा। और जबकि परमेश्वर ने ही उसे वहाँ पर अकेला किया था, तो उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी थी, जैसा कि प्रभु के दूत ने इसे उस पर प्रकट किया था। और ज्यों ही यह काम पूरा हो गया, वह अपने निवास स्थान लौट आया, और इफिसुस की कलीसिया का चरवाहा बना रहा, और यह यूहन्ना दिव्य इफिसुस में ही मरा और उसे इफिसुस में ही मिट्टी दी गयी।

48 ओह, अब यह क्या ही रुपरेखा है! यह बिलकुल सच है, कि तब कलीसिया यूहन्ना के अन्त्रतगत या बड़े कलेश के अन्त्रतगत थी; यूहन्ना नौवें पद में लिखता है:

मैं यूहन्ना जो तुम्हारा भाई, और क्लेश..... यीशु के क्लेश और राज्य, और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूँ, परमेश्वर के वचन, और यीशु की गवाही के कारण पतमुस टापू में था।

दूसरे शब्दों में, उसने परमेश्वर का वचन ग्रहण किया था, और वह इसे प्रमाणित कर रहा था, कि यह परमेश्वर का वचन है; और मसीह उसके द्वारा इसके समर्थन में वापस आया और पुष्टि की, कि वह सही है। आप ऐसी ही स्थिति में है। परमेश्वर का वचन उसमें साक्षात् प्रकट हुआ था; और यह प्रमाणित कर रहा था कि वह परमेश्वर का सेवक है।

इसके बाद वे इसका इन्कार नहीं कर सकते थे; अत: उन्हें उसके लिए कहना पड़ा, कि "वह एक जादू-टोना करनेवाला है, और उसने खोलते तेल पर जादू कर दिया, और वह उसकी कोई हानि नहीं करेगा; और उसने लोगों पर जादू टोना कर दिया और वे चंगे नहीं हुए; और वह भावी बतानेहारा है जो नहीं कर सकता... वह किसी प्रकार का कोई बुरा इन्सान है, जो एक बुरी आत्मा से, एक दुष्ट आत्मा से ग्रसित है।" और यही कारण था कि उन्होंने उसे वहाँ बाहर छोड़ दिया था; क्योंकि उन्होंने सोचा था, कि वह समाज के बीच एक बूंखार इन्सान है।

परन्तु वह तो परमेश्वर की ही इच्छा पूरी कर रहा था; और इन सब परिस्थितियों में परमेश्वर का एक उद्देश्य था।

49 उन सब सतावों और ऐसी ही दूसरी बातों के चलते वह उसका उपयोग नहीं कर सकता था; क्योंकि पवित्र लोग उसके पास आकर पूछ रहे थे, "हे भाई, यूहन्ना, हम इसके विषय में क्या करेंगे? हम क्या करेंगे?" यूहन्ना एक भविष्यद्वक्ता था, हम यह जानते हैं।

अत: वे उससे यह प्रश्न पूछ रहे थे, अत: परमेश्वर ने ही उसे रोमन सम्राज्य से पकड़वाकर वहाँ बाहर उस टापू पर छुड़वा दिया था। उसने कहा था, "यूहन्ना, अब, आ, मैं तुझे कुछ दिखाने जा रहा हूँ जो घटित होने जा रहा है।" वह अन्तिम प्रेरित था, और इसे लिखने के लिए यूहन्ना को छोड़ और कोई बाकी बचा न रहा था। अत: उन्होंने उसे पतमुस टापू पर 95 ईसवीं से लेकर 96 ईसवीं तक के लिए छोड़ दिया था, और उसने इसे लिखा था; और उसने कहा था: ".....मैं क्लेश में तुम्हारा भाई और सहभागी हूँ...."

अब, उसने महापीड़ा के विषय में नहीं कहा था, वह तो महा क्लेश या महा पीड़ा नहीं थी; और वह कलीसिया पर आकर नहीं पड़ती है। महा पीड़ा कलीसिया पर नहीं, वरन यहदियों पर ही आकर पड़ती है। अत: वह पीड़ा महापीड़ा नहीं थी।

50 अब दसवाँ पद देखिएं:

मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया, और अपने पीछे.... एक शब्द.... तुरही का सा शब्द ..... सुना..

"मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया.." अब, आप तब तक कुछ भी भला नहीं कर सकते हैं, जब तक कि आप आत्मा में नहीं आ जाते हैं; तब तक परमेश्वर आपका उपयोग नहीं कर सकता है। आप हैं... आप है.... आप है.... आपके सारे प्रयास व्यर्थ ठहरते हैं, जब तक कि आप पहले आत्मा में नहीं आ जाते हैं। संत पौलुस ने कहा था, "यदि मैं गाऊँगा, तो मैं आत्मा में गाऊँगा। यदि मैं प्रार्थना कराँगा, तो मैं आत्मा में प्रार्थना कॅरुगा।" और उसके बाद कोई भी वह भली बात जो आपके द्वारा आती है, उसे मुझ पर आत्मा के द्वारा प्रकट होना होता है और वचन के द्वारा उसकी पुष्टि होनी होती है; और उन परिणामों के द्वारा साक्षात् प्रकट होना होता है जो उससे प्राप्त होते हैं।

51 अब, दूसरे शब्दों में मैं कहूँ, तो यह ऐसा है, जैसा यीशु ने वचन में प्रतिज्ञा की है, कि यदि मैं प्रायश्चित करके यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लूंगा, तो मैं पवित्र आत्मा का दान पाऊँगा। मेरे लिए करने के लिए... सबसे पहला करने के लिए काम यह है, कि मैं प्रायश्चित करें। जब मुझ पर यह प्रकट हो गया कि यह सच्चा है, तो उसके बाद मैंने यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लिया, और इसके बाद परिणाम यह है कि मैं पवित्र आत्मा पाता हूँ।

यदि मैं बीमार हूँ, और उसने मुझ से प्रतिज्ञा की है, कि यदि मैं विश्वास कहँगा और कलीसिया के प्राचीन से तेल मलवाता हूँ, और वे मेरे ऊपर प्रार्थना करते हैं, तो विश्वास की प्रार्थना से रोगी चंगा हो जायेगा। "प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ! ये भाई नेविल हैं जो मुझ पर तेल मलकर प्रार्थना करते हैं....." मामला बस यही खत्म हो जाता है, यह बिलकुल .... यह बिलकुल ठीक हो जाती है।

52 ओह, आप कहते हैं, कि हालांकि आप अभी भी कोई अंतर महसूस नहीं करते हैं। यीशु पैदा नहीं हुआ था..... जब परमेश्वर ने उसका जगत की उत्पत्ति से भी पहले वध किया था, जब वह था... वह परमेश्वर का मेमना था जो जगत की उत्पत्ति से भी पहले वध हुआ था। परन्तु परमेश्वर अपने निज मस्तिष्क (विचार) में ऐसा कर चुका था। ना ही मैं तब यहाँ पर था और ना ही आप थे। परन्तु परमेश्वर की पुस्तक में.... यदि कभी वहाँ पर हमारे नाम लिखे हुए थे, तो उन्हें जगत की उत्पत्ति से भी पहले लिख दिया गया था।

जब परमेश्वर कोई बात कहता है, तो उसे घटित होना ही होता है। आप बस यह स्मरण रखें। अत: जब आप परमेश्वर की मांगों को पूरा कर देते हैं, तो परमेश्वर ही स्वयं अपने को प्रकट करेगा और शेष बातों का ध्यान रखेगा; आप तो ऐसे आगे बढ़े जैसे मानो मामला खत्म हो गया है।

ओह, क्या यह अद्भुत बात नहीं है? ओह, ज़रा इसके विषय में सोचिए ! आप बस अपनी बात परमेश्वर को बतलायें। परमेश्वर ने कहा था, "तुम यह करो; और मैं यह कहँगा।" ठीक है, यदि आप यह करते हैं, तो उसे वह करना ही होता है।

53 अब देखिए, शैतान कहता है, "देखो, वह देरी करता है।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। दानिय्येल ने एक बार प्रार्थना की थी, और इसमें इक्कीस दिन लग गये थे, कि कभी दूत उसके पास पहुँचता। परन्तु वह हत्तोत्साहित नहीं हुआ था; वह जानता था, कि कैसे भी हो वह आयेगा; और उसने तब तक इन्तजार किया जब तक कि वह आ न गया। यह सच है। ओह, यही वह समय होता है, जब आप विश्वास पा रहे होते हैं। अब, हमें इससे हटना है; जल्दी ही हमारी एक चंगाई सभा होगी; क्या हमारी नहीं होगी? यह सच है। जी हाँ, विश्वास की.....

परन्तु हम तो अपने अन्त:करण की चंगाई के लिए प्राणों की एक चंगाई सभा चाहते हैं, क्योंकि यही है वह जो विधमान रहने जा रहा है। आपके पास अनन्त जीवन है, और अनन्त जीवन मिटता नहीं है, और ना ही बूढ़ा होता है; वह तो सर्वदा एक सा ही रहता है।

54 अब देखिए, इससे पहले कि कुछ भी घटित होता, वह आत्मा में आ गया था। वह पहला काम जो उसने किया वह यह था, वह पतमुस टापू पर था (यही है वह सब कुछ जो उसने किया था) ; और उसने कहा, "मैंने एक शब्द सुना"; तथा इसके साथ ही उसके साथ ये सब दूसरी बातें हुईं। परन्तु इससे पहले कि कुछ भी घटित होता, वह आत्मा में आ गया था। और यदि आप अपनी बाइबिल में ध्यान दें, तो आप देखते हैं जो बड़े अक्षर से आत्मा (Spirit) लिखा है वह पवित्र आत्मा ही है। आमीन! वह आत्मा में आ गया! ओह, मैं बस सोचता हूँ यह बड़ी ही अद्भुत बात है।

मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया..... किस दिन में? प्रभु के दिन में ! अब देखिए, इस पर एक बड़ा विवाद हुआ है ! आइये हम बस एक मिनट के लिए इसे ज़रा निपटा लें।

अब देखिएँ, जैसा कि हमने इस सुबह कहा था, कि किसी ने कहा था, कि संत मत्ती के 17 वें अध्याय का जो प्रकाशन है वह पतरस था। कैथोलिक कलीसिया का कहना है, "उसने पतरस के ऊपर अपनी कलीसिया बनायी, वही पहला पोप था।" वह कैसे एक पोप और शादी-शुदा हो सकता था? समझे? और उनका कहना है, "पतरस रोम गया, और उसे वहीं पर मिट्टी दी गयी...." फिर तो मुझे इतिहास में या कहीं भी कोई एक ऐसी जगह दिखाये जब पतरस कभी रोम गया हो। समझे? पौलुस तो वहाँ गया था, लेकिन पतरस नहीं गया था। यह बिलकुल सच है।

55 अत: हम देखते हैं, कि ये सारे मत और बातें बस रेंगकर अंदर चली आयीं। समझे? परन्तु आज लोग... वे...जहाँ कहीं भी आप जाते हैं.... किसी बड़ी कलीसिया के पास कोई निश्चित कील है जो उसके हाथ में गाड़ी गयी थी। क्या आप जानते हैं कि उनके पास आज कितनी कीले हैं, उनके पास कितनी प्रमाणिक कीलें हैं जो उनके पास अंदर हैं? उन्नीस! उनके पास हड्डियाँ हैं, उनके पास हैं.... और उनके पास अंगरखों के टुकड़े हैं, वे उन्हें छूते और पकड़ते हैं। और हमारे पास नहीं है.... हमारे पास वे चीजें नहीं हैं। हमें उनकी कोई आवश्यकता नहीं है।

मसीह तो जीवता है। ना कोई कील या कपड़े का टुकड़ा, या हड्डी का टुकड़ा, या कोई चीज नहीं, वरन वही हमारे अन्दर है। वह जीवता परमेश्वर है, और वही अब हमारे अन्दर वास कर रहा है और स्वयं अपने को प्रकट कर रहा है। और हमारे पास यादगारी की एक ही चीज है, और वह प्रभु भोज है- जो कि उसकी मृत्यु का एक स्मृति चिन्ह है। परन्तु जहाँ तक स्वयं मसीह की बात है, वह हमारे साथ है और हमारे अन्दर है। और यही है वह चीज (पवित्र आत्मा की महिमा) जिसे हम संसार पर लहराते रहना चाहते हैं, जिसे हम तब तक लहराते रहना चाहते हैं जब तक कि उजियाला चला नहीं जाता है। यह बिलकुल सच है।

56 अब ...अत: आप देखते हैं, कि हमने मार्ग का दूसरा छोर पकड़ लिया है। आप जानते हैं, कि मैं हमेशा ही ऐसा ही होने की चेष्टा की है, और परमेश्वर ने हमेशा ही इसे मुझ पर प्रकट किया है, कि एक ऊँचा तथा उससे भी और ऊँचा मार्ग है, लेकिन मार्ग के ठीक मध्य में सच्चाई विद्यमान रहती है। क्या आपने यशायाह पर, यशायाह पैंतीस पर ध्यान दिया है, जहाँ उसने कहा था, कि एक राजमार्ग होगा? और आप जानते हैं, कि आपको स्मरण है;कि हमारे नाज़रीन भाई-बन्धु किस प्रकार से उस गीत को गाते थे: "एक पवित्रता का मार्ग है, एक पवित्रता का मार्ग है?"

उसने कहा था, "वहाँ एक मार्ग और एक राजमार्ग होगा; और वह कहलायेगा".... पवित्रता का राजमार्ग नहीं, वरन पवित्रता का मार्ग । यह "और" एक शब्द संयोजक है जो आपके वाक्य को समाप्त करता है। समझे? वहाँ एक राजमार्ग और एक मार्ग होगा; और वह पवित्रता का राजमार्ग नहीं, वरन पवित्रता का मार्ग कहलायेगा।

देखिए, एक सड़क, एक राजमार्ग बन चुका है.... एक अच्छा मार्ग बन गया है; उसका सबसे ऊँचा भाग उसके मध्य में ही होता है; क्योंकि वह सारे कूड़ेकरकट को दानों तरफ से बह जाने देता है। ऐसा ही यह है। जब एक मनुष्य सचमुच में मसीह के पास आता है, तो उसकी आँखे मसीह पर ही केन्द्रित रहती हैं। यदि वह थोड़ा सा भावुक है, तो वह सनकी हो जायेगा। यदि वह थोड़ा सा ठंड़ा है, तो वह इस दूसरी तरफ पहुँच जायेगा और बस लुढ़कने वाली चीज ही बन जायेगा (समझे?) उसका ज्ञान उस ओर चला जायेगा। परन्तु मुख्य चीज तो मार्ग के ठीक मध्य में होती है; जहाँ पर आपके अंदर पर्याप्त आत्मा होता है कि आपको गर्म और चलायमान रखे (आमीन) और आप यहाँ पर स्वयं अपने को आत्मा की आज्ञाकारिता में रखना जानते हैं; और जैसे आत्मा चलता है वैसे ही आप चलते हैं; ऐसा नहीं है कि आप केवल तब तक या केवल बाद में ही चलते हों, वरन आप तो वैसे ही चलते हैं जैसे आत्मा चलता है।

57 कैथोलिक कलीसिया ने कहा, "वह प्रकाशन पतरस था।" प्रोटिस्टेन्ट कलीसिया ने कहा, "वह मसीह था।" परन्तु बाइबिल सिखाती है, कि यह प्रकाशन था जो उसने (परमेश्वर ने ही उसे दिया था) मसीह का दिया था। "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।"

...धन्य है, तू शिमौन.... योना पुत्र;.... यह बात तुझ पर मांस और लोहू ने प्रकट नहीं की, किसी मनुष्य, किसी सैमनेरी, या किसी धार्मिक-मठ ने, या किसी और ने तुझे नहीं सिखायी। परन्तु मेरा पिता जो स्वर्ग में है उसने यह बात तुझ पर प्रकट की है।

और तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।"

58 अब हम यहाँ पर एक दूसरे स्थान पर आते हैं जहाँ आपको दो भिन्न भिन्न विचार मिलते हैं। अब, हो सकता है, मैं गलत होऊँ; यदि मैं गलत हैं, तो परमेश्वर मुझे क्षमा करे। परन्तु मैं सेवन्थ डे एड़विनटिस्टों से असहमत हूँ, जो कहते हैं, कि यह सातवाँ दिन था जिसमें वह प्रभु के दिन आत्मा में आ गया था। सेवन्थ डे एड़विनटिस्ट भाई-बन्धु तथा उनमें से कई यह दावा करते हैं, कि यह सब्त का ही दिन था जिसे उसने प्रभु का दिन कहा था।

दा क्रिसचियन चर्च उसे, -रविवार को, पहले दिन को, प्रभु का दिन कहता है। और बहुत सी बार हम ध्यान देते हैं, कि.. कि आज अभी भी दा क्रिसचियन चर्च, प्रोटिस्टेन्ट लोग, रविवार को ही प्रभु का दिन कहकर हवाला देते हैं।

बाइबिल में रविवार प्रभु का दिन नहीं, वरन यह सप्ताह का पहला दिन था। और ना ही यह सातवां दिन अर्थात् सब्त था। यह असम्भव होगा कि उन दिनों में से कोई एक दिन यह हो- प्रभु का दिन हो, क्योंकि यूहन्ना को प्रकाशितवाक्य लिखने में दो वर्ष लग गये थे। अत: यह कौन सा दिन था? वहाँ पर तो कई सातवें और पहले दिन बीत चुके थे।

59 बाइबिल का प्रकाशितवाक्य दो वर्षों में अर्थात् 95 ईसवीं से लेकर 96 ईसवीं तक लिखा गया था। यही प्रभु का दिन था। प्रभु का दिन तो बिलकुल ठीक वही था जो इसने बताया था; और यह ठीक वही था। यूहन्ना आत्मा में प्रभु के दिन ऊपर उठा लिया गया था। यह तो मनुष्य का ही दिन है, परन्तु प्रभु का दिन तो आएगा। हम पवित्र वचनों का अध्यापन करते हुए यह ज्ञात करेंगे, कि वह प्रभु के दिन में था, उसे ऊपर उठा लिया गया था और प्रभु के दिन में पहुँचा दिया गया था। आमीन! यह सच है। देखिए, वह प्रभु के दिन में आ गया था। बाइबिल प्रभु के दिन के विषय में बताती है। हम वचन के कई लेखों के द्वारा इसका थोड़ी ही देर में अध्ययन करने जा रहे हैं।

60 सबसे पहले तो सब्त का दिन देखिए, जैसा कि हम इसके विषय में बातें कर रहे हैं : सब्त का दिन किसी निश्चित दिन को मानना नहीं है। हमें इसकी कोई आज्ञा नहीं दी गयी, कि हम रविवार को सब्त के दिन के रुप में मनायें। नये नियम में सप्ताह के प्रथम दिन को सब्त के रुप में मनाने की कोई आज्ञा नहीं दी गयी है।

बाइबिल इब्रानियों के चौथे अध्याय में कहती है, "और यदि यहोशू उन्हें विश्राम में प्रवेश करा लेता, तो उसके बाद किसी दूसरे दिन की चर्चा न होती।" यह सच है। "परन्तु परमेश्वर के लोगों के लिए विश्राम.... या सब्त का मानना बाकी है। क्योंकि हम भी जो विश्वास करते हैं, जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया, उसने भी परमेश्वर की नाई अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया।

देखिएगा, ओह, प्रभु की महिमा होवे! मुझे बस बहुत अच्छा सा महसूस होने लगा है; मैं बस अपने आपे से ही बाहर हो गया हूँ।

61 सब्त के दिन में... पर ध्यान दीजिए। परमेश्वर ने छः दिनों में पृथ्वी बनायी, और उसने सातवें दिन में विश्राम में प्रवेश किया, और वह उसके बाद फिर और संसार का निर्माण करने के लिए वापस कभी नहीं आया। उसके बाद उसने लोगों को इसे एक स्मृति के रुप में दिया। परन्तु आप आज इसे नहीं रख सकते हैं, क्योंकि जब आप यहाँ पर सब्त का दिन मना रहे होते हैं, तो संसार के किसी दूसरे छोर पर फिर से रविवार आ चुका होता है। समझे? अत: यह ये ही दिखाता है, कि यह इस्राएल के लोगों के लिए, एक निश्चित लोगों के लिए, एक स्थान और एक समयावधि के लिए ही था।

परन्तु इसके बाद भी परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का मनाया जाना बाकी रह गया है।

मैं इब्रानियों के चौथे अध्याय का हवला दे रहा हूँ; आप इब्रानियों चार लिख

क्योंकि हम जिन्होंने विश्वास किया है, उसके विश्राम में प्रवेश करते हैं.... यद्यपि काम... यद्यपि जगत की उत्पत्ति के समय से उसके काम हो चुके थे।

क्योंकि उसने एक निश्चित जगह में बात की.... उसके रीति में.... वह सातवां दिन.....

...तो फिर वह किसी विशेष दिन को ठहराकर...दाऊद की पुस्तक में उसे आज का दिन कहता है, और यह सुना जाता है,...या कहाः यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो।

क्योंकि ....यदि यहोशू उन्हें विश्राम (दिन) में प्रवेश करा लेता,..... तो उसके बाद दूसरे दिन की चर्चा न होती।

परन्तु एक सब्त... विश्राम...(सब्त का मनाया जाना) बाकी है।

62 "विश्राम" शब्द .."सब्त' शब्द जिसका अर्थ "विश्राम होता है, हमारे लिए एक विचित्र शब्द है। यह एक सब्त का दिन एक इब्रानी शब्द है जिसका अर्थ विश्राम दिवस है: कोई काम-काज न करना, विश्राम करना।

क्योंकि यदि यहोशू ने उन्हें विश्राम दे दिया होता- - तो वह नहीं करता... तो किसी दूसरे दिन की चर्चा न होती।

परन्तु परमेश्वर के लोगों के लिए.... एक विश्राम (या सब्त का मनाया जाना).... बाकी है।

क्योंकि जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया.... उसने भी परमेश्वर की नाई अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया।

हम इस सप्ताह के अगले दिन कभी वापस नहीं लौटते और फिर से शुरू करते हैं। हमने एक विश्राम में प्रवेश किया है।

यीशु पहाड़ी पर दिये गये उपदेश में कह रहा था, उसने कहा था, "तुम सुन चुके हो, पूर्वकाल में लोगों से कहा गया था, कि हत्या न करना; मैं तुम से कहता हैं, जो कोई अपने भाई पर अकारण क्रोध करे, वह उसकी हत्या कर चुका।

तुम सुन चुके हो, पूर्वकाल में उनसे कहा गया था, तू व्यभिचार न करना (यह एक आज्ञा थी) परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह उससे अपने मन में व्यभिचार कर चुका।" क्या यह ठीक है?

63 अत: ये सब बातें सब स्मृतियाँ ही थीं, चिन्ह, अचरज, थीं, जो असली समय के आने की बाट जोह रही थीं।

परन्तु जब मत्ती 11 में यीशु पहाड़ी पर उपदेश दे चुका, तो उसने कहा था: हे सब परिश्रम करने वालों-(थकित)... और बोझ से दबे लोगों मेरे पास आओ, और मैं तुम्हारे प्राण को विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो; और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं नम्र और दीन हूँ .... (क्या यह ठीक है?).... हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे लोगों मेरे पास आओ; मैं तुम्हारे प्राणों को विश्राम दूंगा। यदि तुम ने एक दिन, दस दिन, पाँच वर्ष, पैंतीस वर्ष, पच्चास वर्ष, नब्बे वर्ष परिश्रम किया है, और तुम थक चुके हो और ज़रज़रा चुके हों, तो तुम मेरे पास आओ; मैं तुम्हे विश्राम दूंगा। मैं तुम्हारे ऊपर से पाप का सारा बोझ उठा लूंगा, और तुम्हारे अन्दर प्रवेश करूँगा, और मैं तुम्हें सिद्ध विश्राम और सन्तुष्टि दूंगा।

64 अब देखिए, वह विश्राम क्या है? आइये.. आइये हम बस इस बात को थोड़ा सा निपटा लें; और देखें कि यह क्या है? उनमें से कुछ का कहना है, "क्यों, यह तो आपका कलीसिया में शामिल होना ही है।" जी नहीं। "यह आपका नाम पुस्तिका में लिखवाया जाना है।" जी नहीं! "अच्छा, तो यह जल से किसी प्रकार का दिया जाने वाला बपतिस्मा है।" जी नहीं। आइये हम बस इस गुत्थी को सुलझा लें, और देखें कि यह क्या है। क्या आप ऐसा ठीक यहीं पर करना चाहते हैं, जबकि हम प्रतीक्षा कर रहे हैं? हम देखें कि यूहन्ना कहाँ चला गया था, वह किस प्रकार के दिन में चला गया था?

जब यीशु पृथ्वी पर मरा, और उसका काम खत्म हो गया, तो उसने कहीं पर प्रवेश किया था।

65 अब, आइये हम वापस यशायाह के 28 वें अध्याय और आठवें पद में चलते हैं। मेरा यकीन है, कि यह यशायाह 28 :8 है। और आइये हम इसे पढ़ें: यशायाह 28 ; यहाँ पर यह नबी इसके घटित होने से सात सौ बारह वर्ष पहले ही बता रहा। है। कितने लोग यह जानना चाहेंगे, कि असली सब्त क्या है, सच्चा विश्राम क्या है? ये रहा वह: अब देखिए, यह है वह जहाँ नबी ने इसके विषय में बताया, और मैं आपको दिखाऊँगा कि यह कहाँ पर घटित हुआ था; आप यशायाह 28 :8 देखें। "क्योंकि सब....(नबी इन दिनों की भविष्यवाणी कर रहा है)...."

क्योंकि सब भोजन-आसन वमन और मल से भरे हुए हैं....(वे लोग जो धूम्रपान करते हैं, और शराब पीते हैं, और झूठ बोलते हैं, और चोरी करते हैं, प्रभु भोज ले रहे हैं) ...कोई शुद्ध स्थान नहीं बचा ।

वह किसको ज्ञान सिखायेगा....

आप आज किसे ज्ञान सिखा सकते हैं?...

66 कितनों ने आज बिली ग्रहाम को सुना था? वह एक शानदार प्रवचन था जो उसने प्रचारा था, कि लोग झूठ का किस प्रकार विश्वास कर सकते हैं, और बस उसी झूठ में आगे बढ़ते चले जा रहे होते हैं, और.. और अपने आपको तर्कसंगत ठहरा रहे होते हैं, और सोच रहे होते हैं, कि जो वे कर रहे हैं वह बिलकुल ठीक है। उसने कहा था; और कह रहा था और...और कह रहा था, कि अमेरिकन लोग यह ले रहे हैं.... "एक समझदार मनुष्य की छन्नी, और सिगरेट पीने वाले मनुष्य की सिगरेट"; वे शैतान के झूठों में से एक झूठ को ग्रहण कर रहे हैं, और बदले में अपने को ही पागल बना रहे हैं। चाहे वह कोई क्यों न हो, जो इस प्रकार की चीज का सेवन करता है और अपने आपको एक समझदार बनाने की चेष्टा करता है, वह तो यहाँ तक कि उसे पीने के लिए पगलाये रहता है, जबकि.... जबकि यह मौत, और कैंसर तथा इसी प्रकार की दूसरी सभी चीजों से भरी पड़ी है, और फिर भी वह अपने फेफड़ों को नाश करता है। वह मूर्ख ही है; वह समझदार मनुष्य की छन्नी नहीं है; ऐसी तो कोई चीज नहीं है। एक समझदार मनुष्य तो उस जैसी बेकार की चीज का सेवन ही नहीं करता है।

कहा जाता है, "ओरटेल के 92 में ही जीवन है, उसके अतिरिक्त कहीं जीवन नहीं है" ; या इसी प्रकार की किसी चीज के विषय में कहा जाता है। मसीह के बाहर का कोई जीवन नहीं है; क्योंकि वही एक असली सच्चा जीवन है। स्त्री और पुरूष उस प्रकार की बेकार की चीज क्यों पीते हैं? इसलिए क्योंकि वे उस प्यास को जो परमेश्वर ने उनके अन्दर उसके लिए प्यासा रहने के लिए रखी है, दुनियावी चीजों के द्वारा तृप्त करने की चेष्टा कर रहे हैं। और यही कारण है, कि हमारे पास उस प्रकार की चीजें हैं। यही कारण है, कि लोग उस प्रकार से व्यवहार करते हैं, क्योंकि वे उस प्यास को जो उनके अंदर परमेश्वर के लिए है बुझाने की चेष्टा कर रहे होते हैं; और शैतान उन्हें जीवन देने की बजाये मौत दे रहा होता है।

67 सारे भोजन-आसन वमन से...भरे हुए हैं... पादरी वर्ग के लोग तथा ऐसे ही दूसरे लोग कहते हैं, "एक साफ-सुथरी छोटी सी मज़ाकबाजी करना बिलकुल ठीक है।" ऐसी तो कोई चीज ही नहीं होती है।

वह किसको ज्ञान सिखायेगा? और किसको अपने सुसमाचार का अर्थ समझाएगा? क्या उनको जो दूध छुड़ाये हुए और स्तन से अलगाए

हुए हैं?(अब देखिए, हम बालक नहीं रहे हैं)

क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, थोड़ा यहाँ, और थोड़ा वहाँ।

वह तो इन लोगों से परदेशी होंठों और विदेशी भाषावालों के द्वारा बातें करेगा।

जिनसे उसने कहा, इसी से ही (यह क्या है? सब्त का मानना) ... विश्राम इसी से मिलेगा; इसी के द्वारा थके हुओं को विश्राम दो; (हे सब बोझ और चिन्ता से दबे लोगों मेरे पास आओ) .... विश्राम इसी से मिलेगा, इसी के द्वारा थके हुओं को विश्राम दो; परन्तु उन्होंने सुनना न चाहा।

ऐसा कब हुआ था? इसके सात सौ बारह वर्ष के बाद पिन्तेकुस्त के दिन पर जब लोगों के होंठ बुदबुदा रहे थे, और वे सब पवित्र आत्मा से भर गये थे; और पवित्र आत्मा ने उनके जीवनों को अपने अधिकार में ले लिया था, और उन्होंने अपने संसारिक कामों से छुटकारा पाया था। इसके बाद वे मसीह के साथ एक विश्राम में प्रवेश कर गये थे।

पौलुस ने इब्रानियों के चौथे अध्याय में कहा था, कि हम जितनों ने उसके विश्राम में प्रवेश किया हमने अपने संसारिक कामों से वैसे ही छुटकारा पाया - हमने वैसे ही उन्हें पूरा किया जैसे परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के दिन पर किया था। उसने अपने विश्राम में प्रवेश किया था, और हम उसके अन्दर उसके साथ प्रवेश करते हैं, जैसे कि हमारे संसार पर के काम-काज चल रहे होते हैं। यही आपका असली सच्चा सब्त है।

68 ऐसे ही पौलुस को ऊपर उठा लिया गया था, और वह सब्त की उस आत्मा में प्रवेश कर गया था, और वह पवित्र आत्मा के द्वारा बदले जाने के द्वारा प्रभु के दिन में पूरी तरह से आ गया था।

हमारी क्यों लड़ाइयाँ होती हैं? हम पर क्यों मुसीबतें आती हैं? क्यों राष्ट्र राष्ट्र के खिलाफ हैं? जीवन का राजकुमार आया, और लोगों ने उसे ही जान से मार डाला था। अब से कुछ हप्तों में या, यहाँ तक के ठीक इस समय वहाँ पर रेनडीयर, और सानता क्लोस और.. और जिंगल बेल्स, तथा ऐसी ही सभी प्रकार की चीजें लटकी हुई हैं, जो पागान के धार्मिक अनुष्ठान की ही चीजें हैं। यह कैथोलिक कलीसिया की ही एक चीज है। लोग बड़े बड़े मूल्य चुका रहे हैं, और एक दूसरे को उपहार तथा ऐसी ही दूसरी चीजें भेज रहे हैं, और यह पागान का ही क्रियाकलाप है। क्रिसमस तो आराधना-उपासना का ही दिन है।

69 और खैर, मसीह दिसम्बर की 25 तारिख को नहीं जन्मा था। वह तो तब जन्म ले ही नहीं सकता था। यदि आप तब कभी यहूदिया में रहे हों, तो आप जानते होंगे, कि वहाँ पर पहाड़ियाँ बर्फ से भरी रहती हैं, वहाँ पर यहाँ से भी बुरी हालत होती है। वह तो अप्रैल में ही जन्मा था जब सारी कुदरत फल उत्पन्न कर रही होती है। अब देखिए, यह एक रीति रिवाज ही है।

और क्यों... क्यों हम उन कामों को करते हैं? क्योंकि हम परमेश्वर की आज्ञाओं के बजाये मनुष्य के रीति रिवाजों को मानते हैं। तब तो इस प्रकार के कार्य-कलापों का कोई महत्व है ही नहीं, लेकिन लोगों ने इसे एक व्यापारिक दिन बना डाला है। उनके लिए ऐसा काम करना लज्जा और शर्म की बात होनी चाहिए। पागान के कर्मकाण्ड का।

सेंटा क्लोस का यीशु से कब कोई सम्बन्ध था? ईस्टर के खरगोशों और चूँजों का, या किसी प्रकार की स्याही से रंगी चीजों का, या किसी चीज का, या किसी प्रकार के छोटे सफेद खरगोश का यीशु मसीह के पुनरूत्थान से क्या कोई सम्बन्ध था?

क्या आप नहीं देखते हैं कि किस प्रकार से व्यापारिक जगत....? यही कारण है कि वे रॉक एन रोल की उन पुरानी पुस्तकों को, और गंदीअश्लील तस्वीरों को और भद्दी, और अश्लील, और इसी प्रकार की चीजों को बेचते हैं, क्योंकि लोगों की प्राकृति का झुकाव इस प्रकार की बेहूदी चीजों के लिए है। ऐसा इसी लिए है, क्योंकि उनके दय के अंदर कुछ गलत है; और उन्होंने कभी भी परमेश्वर के साथ विश्राम में प्रवेश नहीं किया है, और उन्होंने इन कार्यकलापों से छुटकारा नहीं पाया है। लेकिन जब वे उसके अंदर आ जाते हैं और पवित्र आत्मा पा लेते हैं, तो वे संसार और संसार की चीजों के लिए खत्म हो जाते हैं।

70 परमेश्वर ने उसे प्रभु के दिन में पहुँचा दिया था। अब, मेरा मानना है, कि उसे पौलुस के जैसे ही तीसरे आकाश पर उठा लिया गया था, और उसने उन बातों को देखा था। यह बिलकुल ठीक है, अनमोल पवित्र आत्मा ने कुछ हफ्ते पहले ही ठीक ऐसा ही यहाँ पर किया था, उसने मुझे देखने दिया था... दूसरे शब्दों में यह है, कि मैं मृत्यु से डरता था, और पवित्र आत्मा ही मुझे ऊपर उठा कर ले गया था और उसने ही मुझे दिखाया था कि यह क्या है। आपने यह गवाही सुनी है।

इसके बाद जब मैं आया, तो मैं कह सकता हूँ, "हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?" यह देख सकें कि परदे के पार क्या है मुझे ऊपर उठा लिया गया था... उसने मुझे वापस आने दिया, ताकि मैं आपको बताऊँ, कि उसके पार हम भूत-प्रेत या आत्मा नहीं होते हैं, हम तो उस परदे के पार बस जवान स्त्री और पुरुष ही होते हैं, वहाँ हम कभी नहीं मरते हैं, कभी भी बीमार नहीं पड़ते हैं। मृत्यु आपके साथ इससे अधिक कुछ नहीं कर सकती है, सिवाये इसके कि आपको ठीक उस स्थान के अंदर पहुँचा दे।

71 अब देखिए, यूहन्ना को आत्मा में पतमुस टापू पर से प्रभु के दिन में ऊपर उठा लिया गया था। यह तो मनुष्य का दिन है - लोग लड़ झगड़ रहे हैं, परन्तु प्रभु का दिन तो तब आएगा जब ये राज्य हमारे प्रभु और मसीह के राज्य बन जायेगे; और उसके बाद महान सहस्राब्दि आ जाती है। वही प्रभु का दिन, उसके आगमन का दिन उसके न्याय का दिन होगा। वही प्रभु का दिन होगा।

यह तो इन्सान का दिन है; यही कारण है कि वह आपको यहाँ-वहाँ हैरान परेशान किये रहते हैं, और जो चाहे आपके साथ करते हैं; परन्तु एक ऐसा समय होगा..... वे आपको कहते हैं.... वे अब आपको होली रोलर (पवित्र पाखंडी)और सनकी-पागल कहते हैं, परन्तु एक ऐसा समय आएगा (समझे?), कि वे ऐसा नहीं करेंगे। वे चीखेंगे, और चिल्लायेंगे और विलाप करेंगे और आपके चरणों पर गिरेंगे।

बाइबिल मलाकी चार में कहती है, जब वे भस्म हो जायेंगे, तो आप उनकी राख पर चलेंगे: उनकी ना तो जड़, और ना शाख ही छोड़ी जायेगी। बिलकुल ठीक यही है वह जो बाइबिल कहती है, "धर्मी जन दुष्टों की राख पर चलेंगे।" यह पूर्णत: सच है। उनकी ना तो जड़ और ना ही उनकी शाख छोड़ी जायेगी, उनका कुछ भी बाकी ना छोड़ा जायेगा जो फिर से वापस आ जाये। और उनका नामोनिशान ही मिट जाएगा।

अब देखिए, यह मनुष्य का दिन है, मनुष्य के कामों का, मनुष्य के कार्यकलापों का, मनुष्य की कलीसिया का, मनुष्य की विचारधाराओं का दिन है; परन्तु प्रभु का दिन तो आनेवाला है।

72 अब देखिए, वह प्रभु के दिन में आत्मा में था। यह बिलकुल सच है, कि जब वह प्रभु के दिन में आत्मा में था, तो उसने सबसे पहली

बात जो सुनी.... अब, आइये हम दसवाँ पद पर आ पहुँचे है;

.....मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया, और अपने पीछे तुरही... का सा शब्द ...कहते हुए सुना....

अब आइये हम एक भी दृष्टान्त खाली न जाने दें। यदि हमें इसे कल लेना पड़ा तो हम इसे कल ले सकते हैं। समझे? बस कोई जन घड़ी पर निगाह लगाये रखे, ताकि मुझे देरी न हो जाये।

ठीक है, अब देखिए, वह प्रभु के दिन आत्मा में आ गया..., अब स्मरण रखिए, कि सबसे पहला काम आपको क्या करना होता है? आत्मा में आना होता है ! आप पर ये प्रकाशन कभी कैसे प्रकट होने जा रहा है? आपको आत्मा में आना होता है। आप कैसे कभी पवित्र आत्मा प्राप्त करने जा रहे हैं? आप आत्मा में आ जायें। आप आत्मा में आ जायें।

जब आप एक पापी थे और आप नाँच के लिए जाया करते थे, तो आप उस आत्मा के अंदर ही प्रवेश कर जाया करते थे। ओह, आप अपने दोनों हाथों से तालियाँ बजाना शुरू कर देते थे और अपने पैरों से थाप देने लगते थे और थिरकने लगते थे और अपनी टोपी को फर्श पर फेंकने लगते थे और चारों ओर इधर उधर जा रहे होते थे, और मूर्खतापूर्ण-छिछौरे काम कर रहे होते थे। आप उसकी आत्मा में होते थे।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं, एक व्यक्ति जो नाँच का शौकीन होता था नाँच के लिए जा रहा होता था, कह रहा होता था, "अच्छा, मैं सोचता हूँ, आप सबों का एक बहुत अच्छा समय चल रहा है।"

वे कहेंगे, "ओह, तुम दीवार पर टंगने वाले फूल, यह से बाहर निकल जाओ।" समझे?

73 आप बेसबॉल का खेल देखने के लिये जाते हैं, और कोई 'होम रन' में गेंद को दे मारता है, या ऐसा ही अन्य कुछ कर डालता है; आप बैठे हुए देखते हैं और कहते हैं, "अच्छा, मैं सोचता हूँ, कि यह तो बहुत बढ़िया है।" नहीं, आप तो बेस बॉल के एक शौकीन नहीं होंगे; आप नहीं होंगे सचमुच में एक... आप तो बेसबॉल वाली आत्मा में नहीं होंगे। जब कोई एक होम रन मारता है, तो आप ऊपर खड़े हो और जोर से चिल्लाये, "वाह! मेरी जीत हुई।" यह ऐसा है, किसी की टोपी को इस प्रकार से किसी के सिर पर से उतार दे, और वह कोई भी इसके विषय में एक भी शब्द न कहे।

फिर जब आप कलीसिया में आकर उस आत्मा में आ जाते हैं, तो आप ऊपर खड़े हो जाते हैं, और जोर जोर से चिल्लाते हैं, "महिमा होंवे ! हाल्लिलूय्याह ! प्रभु की स्तुति होवे !" कोई पीछे मुड़ता है, और कहता है, "होली रोलर-पवित्र पाखंड़ी।"

ठीक है, भाई वुड़, मैं आपसे एक प्रश्न पूछने जा रहा हूँ: यदि हम पवित्र पाखंड़ी हैं, क्योंकि हम ऐसा करते हैं, तो वे जो वहाँ बाहर हैं, वे अपवित्र पाखंड़ी हैं। मैं तो एक अपवित्र पाखंड़ी होने के बजाये एक पवित्र पाखंड़ी ही होना चाहूँगा। क्या आप नहीं होना चाहेंगे? निश्चय ही ! वे अपवित्र पाखंड़ी....

74 अब देखिए, वह आत्मा में था। वह आत्मा में आया, और उसके बाद ही ये बातें घटित होने लगीं। और जब वह वहाँ पर पहुँचा तो उसने तुरही का एक शब्द सुना। अब देखिए, तुरही हमेशा ही किसी के आगमन के विषय में उद्घोषणा करती है। जैसे जब आप आते हैं.... एक राजा आ रहा होता है, तो वे एक तुरही बजायेंगे। जब यीशु आता है, तो वह तुरही फेंकेगा। समझे? क्या यह सही है? जब यूसुफ बाहर निकलकर आता था, तो वे तुरही फेंकते थे।

और अब कोई आगे आ रहा था, और यूहन्ना आत्मा में आ गया था, और उसने तुरही का एक शब्द सुना था। जब वह आत्मा में आ गया था, तो उसके बाद उसने तुरही का एक शब्द सुना, और जब उसने तुरही का शब्द सुना, तो वह यह देखने के लिए पीछे मुड़ा कि उसके पीछे क्या है।

75 हो सकता है, वह उस टापू पर सभी जगह चारों ओर नाँच रहा हो, उछाले भर रहा हो, दौड़ता भागता फिर रहा हो। उसका एक अच्छा समय चल रहा था, वह आत्मा में था। अत: और वह... शायद यह बात विचित्र सी प्रतीत होगी, परन्तु मेरा उस प्रकार से तात्पर्य नहीं है। समझे? वह ऐसा कर सकता था।

ऐसा है... वह शायद ऐसा कर रहा हो। मेरा विश्वास है, कि आत्मा में उसका एक अच्छा समय चल रहा था; वह परमेश्वर की जयजयकार कर रहा था; क्योंकि बिलकुल ठीक ऐसा ही तब हुआ था जब पहली बार उनके ऊपर पवित्र आत्मा उतरा था।

जब पवित्र आत्मा उनके ऊपर उतरा था, तो वे मदिरा पीये हुए स्त्री पुरूषों के जैसे ही लड़खड़ा रहे थे, और ऐसा व्यवहार कर रहे थे जैसे मानो मदिरा के नशे में हो, वे बुदबुदा रहे थे, और कहला रहे थे- ऐसा ही कर रहे थे, कि लोगों ने कहा, "ये लोग तो नई मदिरा के नशे में हैं।" इसी प्रकार से उन्होंने पहली बार आचरण-व्यवहार किया था। अत: जब आत्मा फिर से उतरा, तो शायद उसने इसी प्रकार का आचरणव्यवहार किया हो। समझे? वहाँ इसके विषय में कोई नयी बात- - बात नहीं है; यह तो पुराने समय वाला ही धर्म है। जी हाँ।

76 प्रभु के दिन वह आत्मा में।

अब, हम इस पर कान लगायें। क्या हुआ था? और उसने क्या किया था? अब, वह पतमुस टापू से प्रभु के दिन में आत्मा में पहुँचा दिया गया था। और ज्यों ही वह प्रभु के दिन में पहुँच गया था, त्यों ही उसने तुरही का एक शब्द सुना। यह क्या है? किसी का आगमन हो रहा है।

वह एक जो महान है उसका आगमन हो रहा है। तुरही ने शब्द करके जताया, कि कोई आ रहा है। उसने दृष्टि डाली। हाल्लिलूय्याह ! तुरही का शब्द हुआ, "कह रहा था, मैं ही अल्फा और ओमिगा, प्रथम और अन्तिम.... हूँ, [किसी दूसरे के विषय में नही, किसी तीसरे के विषय में नहीं, वरन केवल उस एक ने ही अपने ही विषय में उद्घोषणा की।] मैं ही अल्फा और ओमिगा दोनों हूँ। इससे पहले कि मैं तुझे कुछ दिखाऊँ, मैं तुझे इससे अवगत करा देना चाहता हूँ, कि मैं कौन हूँ। आमीन।"

प्रकाशनों में जो सबसे महानतम् प्रकाशन है वह यह है: हमारा प्रभु यीशु ही परमेश्वर, सर्वोच्च परमेश्वर है। आप तब तक तह तक नहीं पहुँच सकते हैं, जब तक कि आप इसका विश्वास करके अमल नहीं करते हैं.... यही है जो पतरस ने कहा था, "मन फिराओ, और फिर सर्वोच्च परमेश्वर की ओर देखो। तुम अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लो और तब तुम आत्मा में आने के लिए तैयार होते हो।"

सबसे पहले तो आपको मसीह के परमेश्वरत्व वाले चरित्र को जानना होता है। "मैं ही आल्फा और ओमिगा हूँ। मैं ही अ से ह तक हूँ। और कोई नहीं वरन मैं ही मैं हूँ। मैं ही आरम्भ में था; मैं ही अंत में होऊँगा। मैं ही वह सर्वशक्तिमान हूँ जो था, जो है, और जो

आएगा।"आप ज़रा इसके विषय में सोचिए। यही है वह जो तुरही के शब्द ने कहा था।

77 "यूहन्ना सावधान हो जा। तू आत्मा में प्रवेश कर चुका है। तेरे पर कुछ प्रकट होने जा रहा है। यह क्या है? तुरही का एक शब्द होता है, और सबसे पहली बात यह सुनायी देती है, "मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ।" यही सब प्रकाशनों में का सबसे पहला प्रकाशन है।

हे पापी जन, घुटने हो जाओ, और ठीक इस समय ही प्रायश्चित कर लो, इससे पहले कि बहुत देर हो जाये। "मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ।" यही वह सबसे पहली बात थी जो उसने उसे जानने दी थी, कि वह कौन है। (यह कौन है जिसका आगमन हो रहा है? क्या यह यीशु राजा है? क्या यह परमेश्वर राजा है? क्या यह पवित्र आत्मा राजा है?. उसने कहा, "मैं ही यह सब कुछ हूँ। मैं ही अ से ह तक हूँ। मैं ही आदि और अंत हूँ। मैं ही अविनाशी, अनन्त हूँ।"

इसके थोड़ी देर बाद ही हम उसे उसके सात-अयामी व्यक्तित्व वाले गुणचरित्र में देखते हैं। दृष्टि डालकर देखिए कि तब वह क्या है। समझे? "मैं ही आदि और अंत हूँ। मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ। मैं प्रथम और अन्तिम हूँ। इससे पहले कि कोई पहला होता मैं था, और मेरे बाद भी कोई नहीं होगा, मैं ही मैं होऊँगा।" दूसरे शब्दों में उसने कहा, "मैं ही प्रथम और अन्तिम हूँ।"

...और जो कुछ तू देखता है, उसे पुस्तक में लिख कर सातों कलीसियाओं के पास भेज दे,... अर्थात् इफिसुस,... और स्मुरना... और पिरगुमन, और थुआतीरा,... और सरदीस,... और फिलदिलफिया,... और लौदीकिया में ।

78 यह बिलकुल ठीक है, सब प्रकाशनों में सबसे पहला प्रकाशन यीशु मसीह के सर्वोच्च परमेश्वर होने के विषय में ही है। जब आप शब्द सुनते हैं, तो आपको जानना चाहिए, कि वह कौन है, (यह बिलकुल ठीक बात है) यही वह ठीक वही शब्द है जो सीनै पर्वत पर हुआ था, यह ठीक वही शब्द है जो रूपान्तरण वाले पर्वत पर हुआ था, यही ठीक वही है , यही वह एक है जो मनुष्य के पुत्र के सरीखा था। अब, आप इससे अगले पद पर दृष्टि डालिए। बिलकुल ठीक है! ... देखने के लिए अपना मुँह फेरा.... (अब यह बारहवाँ पद है)

हम बस एक मिनट के लिए इन कलीसियओं को ऐसे ही छोड़ने जा रहे हैं, क्योंकि हम इस आगामी सारे सप्ताह इन कलीसियओं का अध्ययन करने जा रहे हैं। देखिए, हम बस उसे छोड़कर आगे बढ़ने जा रहे हैं।

परन्तु उसने कहा, "ये बातें..... इस संदेश को जो मैं तुझे दिखाता हूँ भेजने के लिए मैं तेरा मार्ग-दर्शन करने जा रहा हूँ।" यह कौन है? "मैं ही प्रथम और अन्तिम हूँ। मैं ही वह हूँ जो सर्वोच्च है। मैं ही वह हैं जो सर्वशक्तिमान है। और मैं तुझे यह बताने के लिए आया हूँ, कि मैं तुझे सात कलीसियओं के लिए एक सुसमाचार देने जा रहा हूँ। मैं चाहता हूँ, कि तू इन्हें लिखने के लिए तैयार हो जा।" समझे? "और जो सात कलीसियाऐं एशिया में हैं...."

अब देखिए, तब वहाँ पर जो कलीसियाऐं थीं उनमें पाये जाने वाले गुण-चरित्रों ने उन कलीसियायी कालों को प्रदर्शित किया था जो आगे आने वाले थे।

79 अब देखिए:

और मैंने उस शब्द को जो मुझ से बोल रहा था, देखने के लिए अपना मुँह फेरा; और पीछे घुम कर मैंने सोने की सात दीवटें देखीं।

"सोने की सात दीवटें !" अब, यह है.... किंग जेम्स संस्करण में, शायद आपके पास यही है, या स्कोफफिल्ड में या..या शायद थोम्पसन श्रृंखला में, या उन में से किसी में भी यह सही नहीं है। यह दीवटें नहीं कहता है; यह तो चिरागदान ही कहता है; मेरा मानना है कि मूल अनुवाद में जो इसके लिए सही शब्द है वह चिरागदान ही है, यही सही शब्द है। देखिए, दूसरे शब्दों में यह है, कि ये सात दीवटें सात कलीसियाऐं थीं।

वह थोड़ा आगे चलकर यहाँ बीसवें पद में कहता है, "जो सात दीवटें तू ने देखीं वे सात कलीसियाऐं हैं।" अत: आप देखते हैं कि यदि वह एक दीवट (मोमबत्ती) होती, तो वह शीघ्र ही जलकर खप गयी होती, और थोड़ी देर में ही जलकर बुझ गयी होती। परन्तु यह दीवट (मोमबत्ती) नहीं थी, यह तो एक...एक चिरागदान ही था। यह ऐसे दिया गया है जैसे एक चिरागदान होता है।

जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, तो मैंने सोने की सात दीवटों के बीच... के मध्य में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरूष देखा।

80 अब, अब, देखिए। दीवट (मोमबत्ती) तों शीघ्र ही जल जायेगी, और बुझ जायेगी, और उसका कुछ भी शेष नहीं बचा रहेगा; वह तो कुछ ही घंटों में जल कर बुझ जायेगी। परन्तु एक चिारगदान... एक चिरागदान ऐसा होता है.... आइये हम... आइये हम... यहाँ पर...

यहाँ पर इसके लिए वचन का एक लेख लें, आइये हम जकर्याह 4:1 निकालें, इसके बाद हम जकर्याह से वहाँ पर आ सकते हैं जहाँ पर हम आना चाहते हैं। जकर्याह 4:1; और मेरा मानना है, कि हो सकता है कि इसमें से हम वह निकाल सकें कि हम उसे आपस में एक साथ मिला सकें जिसे हम लेना चाहा रहे हैं। मैं सपन्याह में जकर्याह नहीं ढूंढ़ सकता हूँ, क्या मैं ढूंढ़ सकता हूँ ? यह बिलकुल ठीक है। यह ठीक बात है। मेरी पुरानी बाइबिल ज़रज़रा गयी है। अब आप जकर्याह 4:1 को सावधानी पूर्वक सुनें; अब आपको यहाँ पर इसकी एक सुंदर तस्वीर मिलती है।

और दूत से ..... अब यहाँ पर यह नबी मसीह से पाँच सौ उन्नीस वर्ष पहले ही.... फिर जो दूत मुझसे बातें करता था, उसने मुझे आकर ऐसे जगाया, जैसे कोई नींद से जगाये...(अब, यह भविष्यद्वक्ता दर्शन में था)

और उसने मुझ से पूछा, तुझे क्या दिखाई पड़ता है? मैंने कहा, एक दीवट (चिरागदान)..... (अब देखिए, यह चिरागदान के लिए अनुवादित ठीक वही शब्द है।) .....जो सम्पूर्ण सोने की है, और उसका कटोरा उसकी चोटी पर है, ...(यह चिरागदान ही था।).... और उस पर उसके सात दीपक हैं, जिनके ऊपर बत्ती के लिए सात नालियाँ हैं। (देखिए, ठीक वही कलीसियायी काल उज़ागर हो रहे हैं। समझे?)

और दीवट के पास जलपाई के दो वृक्ष हैं....(अब, किस प्रकार का एक...एक.. एक..- बाइबिल के समयों में वे उन दीवटों में क्या जलाते थे? क्या कोई जानता है? तेल! किस प्रकार का तेल? जैतून का तेल...)..... दो जलपाई के वृक्ष... (यह क्या है? नया नियम और पुराना नियम; ये दो उसके पास खड़े हुए हैं।) एक उस कटोरे के दहिनी ओर,

और दूसरा उसके बांयी ओर। तब मैंने उस दूत से जो मुझ से बातें करता था, पूछा, हे मेरे प्रभु, ये क्या है? जो दूत मुझ से बातें करता था, उसने मुझ को उत्तर दिया, क्या तू नहीं जानता है कि ये क्या हैं? मैंने कहा, हे मेरे प्रभु, मैं नहीं जानता।

तब उसने मुझे उत्तर दे कर कहा, जब्बाबेल के लिए यहोवा का यह वचन है: न तो बल से, न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है.....(वह यरूशलेम को फिर से बसायेगा।)

81 अब देखिए, एक दीवट क्या होता है? वह एक चिरागदान होता है। और ध्यान दीजिए, कि यहाँ पर यह कितना सुंदर है, जब वह मुड़ा, तो उसने सोने के सात चिरागदानों के बीच जिनका अर्थ वे सात कलीसियायी काल हैं जो आगे आने थे- उसको जो मनुष्य के पुत्र के सरीखा था खड़ा हुआ देखा। और हर एक नाली... या... या हर एक चिरागदान बड़ी वाली मुख्य तेलदानी के अंदर संगलित रहता था... और इस तेल में ही से एक छोटा चिरागदान उभर कर निकलकर आता है जिसकी बत्ती इसके अंदर ही डुबी रहती है, और यह बत्ती तेल के अंदर लटकी रहती है।

और जब तक.. वे स्तम्भ की चोटी से तेल उंडेलते थे जो कि उस बड़ी मुख्य नालिका को भरा करता था; और दूसरी नालियाँ इस प्रकार से उसमें से बाहर निकलती थीं। और चिरागदान जिनकी बत्ती नीचे को लटकी रहती थी इसी नाली के अंदर ही होता था, और दिन और रात जलता रहता था। आपको उसे कदाचित जलाना नहीं पड़ता था, वह कभी बुझता नहीं था; वे तो बस मुख्य नालिका में ही तेल उड़ेलते रहते थे।

और ये चिरागदान इस प्रकार से बाहर को उभर कर निकले रहते थे, और उनकी चोटी पर लौ विद्यमान रहती थी। इस चिरागदान की बत्ती यहाँ निकलकर यहाँ नीचे पड़ी रहती थी, और वह अपना जीवन यहाँ से लिया करती थी। ओह, यह मोमबत्ती से क्या ही अलग है, यह कैसा अलग है। यह एक चिरागदान ही होता है और तेल अवशोषित कर रहा होता है।

82 अब देखिए, इन चिरागदानों पर... पुराने नियम में इन चिरागदानों पर जो लौ होती थी....जब वे एक चिरागदान को जलाते थे, तो वे ठीक उस आग से जो उनके हाथ में होती थी दूसरे वाले चिरागदान को नहीं जला सकते थे। वे एक चिरागदान को जलाते, और उससे आग लेकर दूसरे चिरागदान को जलाते, और फिर इससे आग लेकर इस वाले चिरागदान को ठीक उसी आग से जलाते थे जिससे उन्होंने आरम्भ में जलाना शुरु किया था।

ओह! मैं आशा करता हूँ, कि यह बात आपके सिर के ऊपर से नहीं निकली है, कि यीशु मसीह कल, आज और युगानुयुग एक सा है; ठीक उसी आग ने, ठीक उसी पवित्र आत्मा ने उन प्रत्येक कलीसियायी काल को उनके अपने काल के दौरान प्रज्ज्वलित रखा।।

83 क्या यीशु ने संत यूहन्ना के 15 वें अध्याय में नहीं कहा था, "मैं दाखलता हूँ, और तुम डालियाँ हों"? अब, वही मुख्य दाखलता है; हम तो डालियाँ हैं।

अब, देखिए दाखलता पर फल नहीं लगते.... (टेप में रिक्त स्थान-सम्पा.) .... आप एक रसदार पेड़ जैसे एक संतरे का पेड़ ले सकते हैं, और आप.... मैं कहूँगा... कि आप चकोतरे के पेड़ से एक...एक डाली काटकर ले सकते हैं, और संतरे के पेड़ में एक चीरा लगा कर उसमें चकोतरे की डाली- कलम लगा सकते हैं, वह बढ़ेगी। आप यहाँ पर जाते हैं , और नीबू की एक कलम लेते हैं, और उसे संतरे के पेड़ में साठ देते हैं और वह बढ़ेगी।

या आप छोटे चकूतरे की कलाम लेते हैं, और आप इसे लेते हैं, या किसी रसदार फल जैसे नारंगी, खट्टे की कलम लेते हैं; उन रसदार फलों में से किसी की भी कलम लेते हैं, और उसे इस पेड़ में साठ देते हैं और वह इसी संतरे के पेड़ में से जीवन लेकर फलेगी-फूलेगी; परन्तु उस पर संतरे नहीं लगेंगे; उस पर तो चकोतेरे ही लगेंगे; उस पर तो खट्टे ही लगेंगे; उस पर नीबू ही लगेंगे; परन्तु वह असली दाखलता से जीवन लेकर पनप रहा होता है।

परन्तु दाखलता में से कोई और दाखलता.... कोई और डाली बाहर निकलती है, तो उसमें ठीक वही जीवन होगा जो उसके अंदर होता है; और उस पर संतरे ही लगेंगे, क्योंकि सबसे पहले तो उसकी जड़ में ही संतरे के पेड़ का जीवन है। परन्तु वे दूसरे वाले उससे ही जी रहे हो सकते हैं जब तक कि वे रसदार फल के स्वभाव के हैं। परन्तु उन पर मूल पेड़ के फल नहीं लग सकते हैं; क्योंकि वे असली वाले की डाली नहीं हैं।

84 ठीक इसी प्रकार से ही कलीसिया होती है। उन्होंने दाखलता को चीरा है, और उसके अंदर प्रेसबीटेरियन, मैथोडिस्ट, बैपटिस्ट तथा इसी प्रकार की दूसरी कलमें सांठी दी गयी हैं। उस पर बैपटिस्ट फल, प्रसबीटेरियन फल, मैथोडिस्ट फल लग रहे होते हैं; परन्तु यदि यह कभी.... उस पेड़ से कभी कोई और दाखलता बाहर निकलती है, तो वह ठीक उसी प्रकार की ही दाखलता होगी जो पिन्तेकुस्त के दिन उगायी गयी थी: वह मूल दाखलता ही होगी।

वह अन्यान्य भाषाओं में बोलेगी, और उसके अंदर मुरदों में से जी उठे मसीह की सामर्थ और चिन्ह होगें। क्यों? क्योंकि वह उस कुदरती स्रोत से जीवन लेकर पनप रही होती है, जिसके अंदर वह लगायी गयी है। सचमुच में तो वह उसमें लगायी ही नहीं गयी है, उसने तो उसके अंदर जन्म ही लिया है। महिमा होवे! ओह मेरे परमेश्वर! तब ठीक उस समय उसके विषय में नहीं सोचा था।

देखिए, दूसरी वाली तो उसके अंदर सांठी गयी हैं; उन्होंने उस पेड़ में उनकी कलमें लगा दी हैं; अत: उनपर उनके ही फल लगते हैं। वे इसे ग्रहण नहीं कर सकते हैं। वे इसका विश्वास नहीं करते हैं, क्योंकि उन्होंने कभी भी इसके विषय में कुछ नही जाना। परन्तु यदि उन्होंने उस जीवन से ही जन्म लिया होता, जो उस पेड़ में से बाहर निकलकर आता है; तो उन पर एक ही जीवन लग सकता था; और वह उस असली तने का ही जीवन होता है।

85 इन चिरागदानों की सारी नालियाँ एक बड़े कटोरे, एक बड़ी तेलदानी के अंदर ही होती थीं; और उससे नौ- - या सात अलग अलग चिरागदान बाहर निकलकर आते थे। और जब वे ऐसा करते थे, तो उनमें से प्रत्येक लौ मुख्य स्रोत से ही अपना जीवन ले रही होती थी। और उसकी लौ इस लिए ही जलती थी, क्योंकि उसकी बत्ती इस मुख्य कटोरे के अंदर डुबी रहती थी।

ओह, ये उन सात तारों की क्या ही सुन्दर तस्वीर है जिन्होंने उसे दर्शाया और जिनका जीवन यहाँ पर पवित्र आत्मा से प्रज्वलित रहा। और वह.. वह विश्वास के द्वारा ही पवित्र आत्मा से प्रज्वलित रहा, और उसका जीवन एक मोमबत्ती (दीवट) रहा ... या एक मोमबत्ती नहीं है। परन्तु एक बत्ती ही है जो पवित्र आत्मा (मसीह) के अंदर ही डुबी रहती है और वह उस बत्ती के द्वारा ही परमेश्वर के जीवन से जीवन खींच रहा होता है ताकि उसकी कलीसिया को उसका उजियाला दे। ओह, यह सच्चे विश्वासी की क्या ही तस्वीर है !

वह किस प्रकार का उजियाला दे रहा होता है? ठीक उसी प्रकार का ही उजियाला जो तब था जब पहली दीवट जलायी गयी थी। जब पहला कलीसियायी काल आरम्भ हुआ, तो यह इफिसुस था। पौलुस जो कि उन सितारों में से एक था.... इस कलीसिया का दूत था....

वहाँ जो सात सितारे थे उनका अर्थ सात दूत, सात सुसमाचारदूत है। इस सप्ताह मैं आप पर यह इतिहास से और पवित्र वचन के लेखों से प्रमाणित कर सकता हूँ, कि यह बात उन प्रत्येक दूत के संदर्भ में सच्ची है, और प्रत्येक दूत के पास ठीक एक सा ही उजियाला था। यह सच है । इसके बाद इन कलीसियायी कालों के मध्य में वह आता है जो महान है।

86 ध्यान दीजिए।

अब वे तेल के इस मुख्य कटोरे से, उस मुख्य उजियाले से ही उजियाला ले रहे हैं। वह जीवन मसीह के अंदर डुबा हुआ है। आप तो मरे हुए हैं, और आपका जीवन.... के द्वारा मसीह में छिपा हुआ है... या मसीह के द्वारा परमेश्वर में छिपा हुआ है और पवित्र आत्मा के द्वारा मोहरबंद है। ऐसा बिलकुल भी कोई तरीका नहीं है, जो आप वहाँ से कभी दूर हो सकें। आप ऐसा कर ही कैसे सकते हैं? आप के साथ कोई भी दखलांदाजी नहीं कर सकता है। आपके जीवन का छोर तो पवित्र आत्मा से प्रज्वलित होता रहता है, ओह, प्रज्ज्वलित होता रहता है और उजियाला देता रहता है।

आपके जीवन का दूसरा छोर कहाँ पर डुबा रहता है? मसीह के अंदर। आप मरे हुए हैं और मसीह के अंदर छिपे हुए हैं। पवित्र आत्मा ही इसे वहाँ पर चारों ओर से घेरे हुए माहरबंद करके रखता है...शैतान आपको छू नहीं सकता है। आमीन। वह फूकारे भर सकता है और हो-हल्ला ही मचा सकता है। यहाँ तक कि स्वयं मृत्यु भी आपको छू नहीं सकती है : "हे मृत्यु , तेरा डंक कहाँ रहा? तेरी जय कहाँ रही? हमारे परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जय देता है।"

87 आइये इस पद का अन्तिम भाग पढ़े, आइये हम इसे पढ़ें।

.....और पीछे घूमकर मैंने सोने की सात दीवटें देखीं।

और उन सात दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरूष को देखा...

क्या आपने ध्यान दिया? तारों का, दीपकों का, दीवटों का क्या अर्थ होता है? इसका क्या अर्थ होता है? वह प्रबन्ध जिसमें हम रह रहे हैं वह तो रात का समय है, दीवटों, और उजियाले और तारों का अभिप्राय रात से ही होता है। और एक तारा क्या करता है? वह सूर्य के उजियाले को तब तक चमकाता रहता है। जब तक कि सूर्य वापस लौट नहीं जाता है। हमारे प्रभु का नाम मुबारक होवे!

और परमेश्वर का सच्चा सेवक कोई वैधुतीय- प्रकाश, किसी तल्ली का प्रकाश, या किसी जलते हुए भूसे का प्रकाश नहीं चमकाता है; वह तो कलीसिया पर मसीह की इन स्वर्णिम प्रकाश-पूँज को ही चमकाता है, कि वह एक सा है, और जीवता है, और वह मुझ पर चमकता है। आमीन। यही वह उजियला होता है जिसे वह प्रतिबिम्बित करता है। जैसे तारा सूर्य के उजियाले को ही चमकाता है, समझे? वैसे ही हम परमेश्वर के पुत्र के उजियाले को चमकाते हैं, और ठीक उन्हीं कामों को कर रहे होते हैं जो उसने किये थे; और हम उजियाला दे रहे होते हैं। किस प्रकार का उजियाला दे रहे होते हैं? उन पर... सुसमाचार का उजियाला...

88 अब आइये हम बस उसे थोड़ा सा और आगे देखें जबकि हम इस 13 वें पद के शेष भाग को पढ़ते हैं।

और उन दीवटों के बीच...(यह मध्य में है)... मनुष्य के पुत्र के सरीखा एक पुरूष को देखा, जो पांव तक वस्त्र पहने, और छाती पर सुनहला पटुका बान्धे हुए था।

अब देखिए, यह प्रभु का दिन था, यहाँ पर इस शिक्षा का सही होने का और अधिक प्रमाण है। क्या आपने उस पर ध्यान दिया? वह इस समय के दौरान ना तो एक राजा, ना तो एक याजक ही था, वरन वह तो एक न्यायी ही था। ध्यान दीजिए, जब एक याजक, महायाजक पवित्र स्थान के अंदर सेवा करने के लिए, सेवकाई करने के लिए अंदर जाता था, तो वह अपनी कमर पर कमरबंध बाँध कर ही जाया करता था। उसका बागा उसकी कमर पर बंधा होता था, इसका अर्थ यह था, कि वह सेवा कर रहा होता था: तब वह उसे कभी भी अपने कन्धे पर नहीं बांधता था।

परन्तु वह यहाँ पर बाहर निकलकर आता है जिसने ऊपर कमरबंध बाँधा हुआ है, कंधे पर बागा रखा हुआ है, और उसने ऊपर तक वस्त्र पहना हुआ है, और छाती पर ऊपर तक सुनहला पटुका बाँधा हुआ है.... वह क्या है? एक न्यायी, एक न्यायाधीश है, वह एक ऐसा न्यायी है जिसके कंधे पर बागा, कमर पर पटुका बन्धा है; वह यहाँ पर याजक के रूप में नहीं है। देखिए, ये यही दिखाता है, कि अब वह अपनी याजक पद वाली कार्य स्थिति में नहीं था। यूहन्ना प्रभु के दिन में सारा का सारा ही चला गया था, और उसने उसे एक न्यायी के रूप में ते हुए देखा था।

89 क्या आप विश्वास करते हैं, कि वह एक न्यायी है? आइये हम जल्दी से यूहन्ना 5:22 पढ़ें, और हम देखेंगे , कि वह एक न्यायी है, कि नहीं। संत यूहन्ना 5:22

और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता है, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को ही सौंप दिया है।

क्या यह सच है? वह न्यायी है, वह सर्वोच्च न्यायी है। और यूहन्ना यहाँ पर दिखाता है, कि वह ना तो वह एक भविष्यद्वक्ता के रूप में अपनी भाविष्यवाणी के दिन वाले के जैसा था, और ना ही वह ऐसा था जैसे वह अपने राज-पद के दिनों में होता है, परन्तु वह तो एक न्यायी के रूप में प्रभु के दिन में था।

अब कितने लोग यह जानते हैं, कि जब याजक का अपना पटुका, उसका अपना अंगोछा उसकी कमर पर बंधा होता था, तो इसका अर्थ होता था, कि वह सेवा में लगा हुआ है। वह कोई भी जो नियम पढ़ता है, जो पुराना नियम जानता है ; वह यह जानता है। जब याजक अपना पटुका अपनी कमर पर बाँधे हुए होता था, तो वह सेवा करने में लगा हुआ होता था; वह एक सेवक होता था। परन्तु उस ने तो अपना पटुका यहाँ पर बाँधा हुआ था; वह एक न्यायी था।

90 आइये हम इससे थोड़ा सा और आगे पढ़ते हैं। "....और छाती पर सुनहला पटुका बान्धे हुए था।" यह बिलकुल सच है, वह यहाँ ऊपर बन्धा हुआ था; और वह एक न्यायी था।

अब, हम उसके व्यक्तित्व के सात-आयामी महिमा के विषय में पढ़ने जा रहे हैं। ओह, मेरे परमेश्वर ! इससे पहले कि मैं इसका अध्ययन करूं इसने मुझे ऐसा करने दिया है, कि मैं जयजयकार करूं। ध्यान दीजिए, यह बड़ी ही शानदार बात है। बस ज़रा कान लगाये रखिए। "और उसका सिर...." अब दृष्टि डालिएं! वह यहाँ पर उस की इन सात बातों का वर्णन करता है: उसके बाल, उसकी आँखें, उसके पाँव, उसका शब्द! वे सात बातें जिनका उसने यहाँ पर उल्लेख किया है वे यीशु मसीह के सात आयामी तेज का वर्णन करते हैं। आइये मैं

इसे पढ़ता हूँ।

उसका सिर और उसके बाल ऊन की नाई श्वेत.. श्वेत ऊन की नाई... उसकी आँखें आग की ज्वाला की नाई थीं ....

और उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे, जो मानो भट्टी में तपाए गए हों.. और उसका शब्द... बहुत जल के शब्द की नाई थी।

और में... और वह अपने दहिने हाथ में सात तारे लिए हुए था; और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी; और उसका मुख ऐसा प्रज्ज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।

यह क्या ही दर्शन है! उसने यहाँ पर क्या देखा था? परमेश्वर का महिमान्वित पुत्र और एक उपमा। अब, आइये..आइये हम बस अब तैयार हो जायें।

91 ओह, मेरे परमेश्वर! मैंने सोचा था, कि नौ बज गये हैं, अभी तो केवल आठ ही बजे हैं। मैंने तो अभी तक शुरुवात भी नहीं की है। यह बिलकुल ठीक बात है। यह तो एक अच्छी बात है। अब, मुझे माफ करना, कि ये भाई खड़े हुए। हैं। मैं... उन्हें खड़ा देखाकर मैं व्याकुल हो उठता हूँ (समझे?) क्योंकि मैं जानता हूँ, कि उनके पांव में दर्द हो रहा है। भाइयों, यदि मेरे पास कोई ऐसा तरीका होता, या मेरे पास कुछ ऐसा होता कि मैं कुछ कर सकता होता, तो मैंने उसे निश्चय ही कर दिया होता। और मैं यह बहुत बुरी तरह से चाहता हूँ कि आप इसे समझ जायें और आप थोड़ी देर खड़े रहिएं; और परमेश्वर आपको बहुतायत से प्रतिफल दे; यही मेरी प्रार्थना है।

92 अब देखिए, अब ध्यान दीजिए! अब सबसे पहली वह चीज जिस पर हम ध्यान देते हैं वह है कि उसका सिर और उसके बाल ऊन की नाई श्वेत थे। उसका सिर और उसके बाल ऊन की नाई श्वेत थे। अब, इस अर्थ यह नहीं है, कि वह एक ऐसा उम्रदराज़ था कि उसने ऐसा किया। इसका यह कारण नहीं था। वह इसे करने के लिए उम्रदराज़ नहीं था। वह था... यह तो उसके अनुभव, और योग्यता, और उसकी बुद्धि के कारण ही था। क्योंकि वह अनन्त है, और अनन्त की कोई उम्र नहीं हो सकती है। क्या आप इसे समझ गये हैं?

अब, आइये हम सबसे पहले निकालें, और हम- हम उसको इसके रूप में ही चित्रित करेंगे, और यह मालूम करेंगे, कि वह क्या है। अब आइये हम बस एक मिनट के लिए दानिय्येल 7:9 लें; आप दानिय्येल में ठीक यही तस्वीर देखते हैं जबकि वह यहाँ पर... समय के प्राचीन के जैसे आता है। और आप में से अधिकतर हर एक जन, बाइबिल का विद्वान बिलकुल ठीक ठीक यह जानता है, कि हम किस बात की ओर आगे को बढ़ रहे हैं। दानिय्येल सातवां अध्याय और नौवां पद। हम इसे आठवें पद से ही पढ़ना आरम्भ करेंगे।

और मैं उन सींगों को ध्यान से देख रहा था....तो क्या देखा कि उनके बीच एक और छोटा सा सींग निकला, और उसके बल से उन पहले सींगों में से तीन उखाड़े गये ; फिर मैंने देखा इस सींग में मनुष्य की सी आँखें, और बड़ा बोल बोलनेवाला मुँह भी है।

और मैं तब तक देखता रहा जब तक कि सींग उखाड़े न गये...

अब सुनिएं, अब ध्यानपूर्वक सुनिएं। आप जो पीछे हैं, क्या आप मुझे बिलकुल ठीक ठीक सुन सकते हैं? यदि आप सुन सकते हैं, तो आप आमीन कहें। मैंने ऐसा ही वहाँ पीछे अपनी पत्नी से पूछा था। मैं सोचता हूँ यहाँ पर जो माइक है ..... यह यहाँ पर काफी अधिक काम कर रहा है; क्या ऐसा नहीं है? मैं सोचता हूँ कि मैं इसमें बहुत जोर लगाकर बोलता हूँ।

93 यह बिलकुल ठीक बात है। अब दानिय्येल 7:9 देखिए।

और मैंने देखते देखते अंत में क्या देखा कि सिंहासन रखे गये, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ; उसका वस्त्र हिम का सा उजला, और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे; ...(अति प्राचीन)...उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिये धधकती हुई आग के से देख पड़ते थे।

उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा... आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हजारों हजार उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके साम्हने हाज़िर थे; फिर न्यायी बैठ गए, और पुस्तके खोली गईं।

श्वेत बाल... सब कोई... हर कोई यह जानता है, कि प्राचीन दिनों में प्राचीन न्यायाधीश , जैसे अंग्रेज न्यायाधीश हिम के समान श्वेत बालों वाला विग पहनते थे। कितने लोगों को यह स्मरण है? प्राचीनकालीन न्यायाधीश श्वेत विग पहना करता थे...क्योंकि वे थे... और वह यहाँ पर प्रभु के दिन में यूहन्ना को अपने आप को फिर से ऐसा दिखा रहा है; वह उसे स्वयं अपने को, एक न्यायी के रूप में दिखाता है; (आमीन) एक याजक के रूप में नहीं, एक राजा के रूप में नहीं, एक भविष्यदूक्ता के रूप में नहीं, वरन एक न्यायाधीश के रूप में दिखाता है। यूहन्ना 5:22 में पिता ने न्याय करने का सारा अधिकार उसी को ही सौंप दिया था। और अब वह न्यायी है, और वह जाति जातियों को न्याय करने के लिए आता है।

ओह, वह क्या ही है, जब आप उसे उस दिन के लिए उस प्रक़ार देखते हैं! उसके बाल हिम की नाई श्वेत थे, दानिय्येल ने उसे एक अति प्राचीन के रूप में इसी प्रकार से ही आते हुए देखा था। आप इन दोनों की तुलना करते हुए उस पर दृष्टि डालें। यह बिलकुल ठीक बात है।

94 ...और न्याय चल रहा था, और पुस्तकें खोली गयीं।

और मैं उन्हें देखता रहा, क्योंकि .... और मैं उसे देखता रहा, क्योंकि उस समय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर मैं देखता रहा, ...(नहीं, मैं गलत जगह पर आ गया हूँ, क्या मैं नहीं आ गया हूँ?)।

दानिय्येल 7:9 ! जी हाँ, हम यहीं पर है।

...और उसके पहिये...

और उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हज़ारों हज़ार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे,.....

और उस समय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर मैं देखता रहा, और देखते देखते अंत में देखा कि वह जन्तु घात किया गया, और उसका शरीर धधकती हुई आग से भस्म किया गया।

और रह गये जन्तुओं का अधिकार ले लिया गया, (ये सब अन्यजातियों की सत्ताऐं और राज्य हैं जिनका पतन हो जायेगा।) .... परन्तु उनका प्राण कुछ समय के लिए बचाया गया।

मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था,... [हमने इस सुबह उसे तीसरे पद में किस प्रकार से आते हुए देखा था? स्वर्ग के बादलों में आ रहा है]

वह मनुष्य का पुत्र आकाश के बादलों समेत आ रहा था। और वह उस अति प्राचीन के पास आ पहुँचा, और वे उसको उसके समीप लेकर आये।

तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देशदेश और जाति- जाति के लोग और भिन्न- भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके आधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य....और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।

95 वह उस अति प्राचीन के पास आता है जिसके बाल ऊन के समान श्वेत थे। और जब यूहन्ना ने देखने के लिए अपना मुँह फेरा, तो उसने सोने की सात दीवटों के बीच उसको खड़ा देखा जो मनुष्य के पुत्र के सरीखा था और उसके बाल हिम की नाई श्वेत थे: वह न्यायाधीश के रूप में था, उसका पटुका उसकी कमर पर नहीं, वरन उसकी छाती पर बन्धा था; वह एक न्यायी था। न्यायाधीश वाला बागा उसके कंधे पर डला था; वह एक शुद्ध , पवित्र, परिशुद्ध सुनहला पटुका जो उसकी धार्मिकता संजोय हुए था, जो उसका कवच था, बान्धे हुए खड़ा था। वह ऊपर से लेकर पांव तक पूरी तरह से ढंका हुआ था। उसके व्यक्तित्व और उसकी महिमा के सात-आयामी प्रकटीकरण को देखिए।

96 अब, मेरा मानना है, कि यह चौदहवां पद है।

उसके बाल... उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन पाले के से उज्जवल थे और उसकी आँखें... आग की ज्वाला की नाई थीं।

"उसके बाल.... उसका सिर, और उसके बाल" ! "उसकी आँखें आग की ज्वाला की नाई थीं।" ज़रा इसके बारे में सोचिएं। एक बार को वही आँखें मानवीय आँसूओं से भर कर नम हो गयी थीं, और अब आग की ज्वाला बन गयी हैं। वह क्रोध से भरा हुआ एक क्रोधी न्यायाधीश के रूप में खड़ा हुआ है। तुमने उसे क्यों ठुकरा दिया? हे पापी, ज़रा इसके विषय में सोचों ! हे गुनगुनी कलीसिया के सदस्यों, इसके विषय में सोचों ! कैथोलिकों, बैपटिस्टों, प्रेसबीटेरियनों, पिन्तेकोस्तलों।

इसके विषय में सोचो। आपकी कुंवारी मरियम को पिन्तेकुस्त तक जाना और पवित्र आत्मा ग्रहण करना पड़ा था; और वह मदिरा पी हुई स्त्री के जैसे ही लड़खड़ा रही थी और आचरण कर रही थी। मसीह की माँ को इस स्थिति तक आना पड़ा था इससे पहले कि उसे स्वर्ग में जाने के लिए अनुमति दी जाती। तुम स्त्रियों, उससे कम हालत में कैसे कभी वहाँ पहुँचने जा रही हो?

पुरूषों, तुम में से हर एक इसके विषय में सोचें।

97 उसके बाल... और उसकी आँखें एक बार को मानवीय आंसूओं से भर कर नम हो गयी थीं; हालांकि मैं आप से यह चाहता हूँ, कि आप उन आँखों के विषय में किसी बात पर ध्यान दें। जब वह यहाँ पृथ्वी पर था, तो एक इन्सान के जैसे ही उसकी आंखें आंसूओं से धुंधला गयी थीं, क्योंकि वह लाज़र की कब्र पर रोया था। यह सच है। उसकी मानवीयता सहानुभूति से भरी हुई थी, उसने लिबास पहना हुआ था, वह परमेश्वर ही था जिसने मानवता का लिबास पहना हुआ था; ताकि वह पाप को दूर कर सके। परन्तु फिर भी उस मानवता के पीछे उसके पीछे अभी भी कुछ ऐसा था, कि वह मनुष्य के हृदय के अंदर छांक कर देख सकता था और उसके विषय में सब कुछ जान सकता था। क्यों? क्योंकि हालांकि उसने मरनहार लिबास पहना हुआ था, फिर भी उसके पीछे कोई बात थी। परन्तु वे जानते थे, कि वह कौन था, उसने कहा था, 3

"यदि तुम विश्वास नहीं करते हो, कि मैं वही हूँ, तो तुम अपने पापों में मरोगे।" यह सच है। "यदि मैं अपने पिता के कामों को नहीं करता हूँ, तो तुम मेरी प्रतीति न करो, परन्तु यदि मैं अपने पिता के कामों को करता हूँ; तो तुम कामों की ही प्रतीति करो, यदि तुम मेरा विश्वास नहीं कर सकते हो।" ओह, उसने उन्हें किस प्रकार से संदेश, किस प्रकार से प्रकाशन देना चाहा था। वह मनुष्य के हृदय के अंदर छांक कर देख सकता था और उसके विषय में सब कुछ जान सकता था ।

मैं कैसे उसके विषय में सोच सकता हूँ, कि : वे आँखें जिन्होंने एक बार को पहाड़ों पर दृष्टि डाली थी, और वही आँखें एक मनुष्य की आँखों के जैसे ही रो सकती थीं, परन्तु फिर भी वह वहाँ उस दृष्टि के पीछे परमेश्वर के आत्मा को ले सकता था, और उन सब बातों को देख सकता था जो थीं, और जो बातें थीं...थीं, और जो होंगी, वह आरम्भ से लेकर अंत तक की बातों को पहले ही से बता सकता था; क्योंकि परमेश्वर ही उन मानवीय आँखों के पीछे था।

होने पाये परमेश्वर ही आपके जीवन के अंदर आये और आप पर अपना अधिकार कर ले, और वही आपको आनेवाली बातों को दिखायेगा। क्योंकि फिर आप खुद आप नहीं रहते हैं, यह तो पवित्र आत्मा ही आपके जीवन के अंदर होता है जो उन विनाशी आँखों के पीछे से होकर दृष्टि डाल रहा होता है, ताकि बातों को लेकर उज़ागर करे।

98 ओह, परमेश्वर की महिमा होवे! "मैं सब मनुष्यों पर अपना आत्मा उंडेलूंगा; और तुम्हारे बेटे और बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे; तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे।"हाल्लिलूय्याह ! कभी कभी उसे आपको नींद में सुलाना पड़ता है, ताकि वह आप में से होकर दृष्टि डाल सके , परन्तु वह निश्चय ही, बहुत सी बार आपको बहुत कुछ दिखायेगा।

"तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे; मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर अपने आत्मा में से उंडेलूंगा। डीकनों, और पादरियों पर नहीं, और अपने.... उन सब मनुष्यों पर जो चाहेंगे कि मैं अपने आत्मा में से उन पर उंडेलू।"

आपको हैरानी होती है कि मैं इसे खूब ऊँची आवाज से बोलकर क्यों बताता हूँ, लेकिन यही तो इन्हीं कलीसियायी कालों में घटित होने जा रहा है।

99 वहाँ पर वह था, वहाँ पर वे आँखे नम थीं। और स्मरण रखिए, एक दिन जो आँखें आँसूओं से नम हो गयी थीं, वे ही आँखें न्याय पर विद्यमान होंगी। अब वे- वे आग की ज्वाला की नाई हैं जो सारी पृथ्वी पर आगे और पीछे दृष्टि डाल रही हैं, और कोई भी ऐसी घटना नहीं है जो वह न जानता हो। ओह, मेरे खुदा!

इसका तो रिकॉर्ड पाया जाता है। वह सारी पृथ्वी पर आगे पीछे हर एक हरकत पर दृष्टि लगा रहा होता है; हर एक विचार को जाँच रहा होता है; हर एक उस काम को जो आप कर रहे होते होते हैं, आपके हृदय के विचारों को, आपके काम करने के ध्येय को कि वे क्या हैं जाँच रहा होता है। वह इसके विषय में सब कुछ जानता है। वह जानता है कि क्या आप उससे प्रेम करते हैं। वह जानता है कि उसकी सेवा करने का आपका ध्येय क्या सही है। वह इसके विषय में सब कुछ जानता है। और यह उस दिन क्या होगा जब आप उसके समाने खड़े होते

हैं और आपका हर एक पाप उसके आगे उधाड़ा जाता है; और वह वहाँ न्याय के श्वेत सिंहासन पर खड़ा हुआ होता है?

100 हे परमेश्वर, मुझे उस जगह से छुड़ाकर रखिएं। मैं उसे नहीं देखना चाहता हूँ। जब क्रोध से भरा हुआ परमेश्वर वहाँ से बाहर निकलकर आता है, तो उसकी आँख उसकी धार्मिकता से धधक रही होती हैं; और उसकी आँखें जो आपके हृदय के हर एक विचार को जानती हैं, और उस सब को जानती हैं जो करने का आपका ध्येय था; आग से धधक रही होती हैं। हे युगानुयुगी चट्टान, मुझे अपनी दरार में छिपा लेना।

एक बुजुर्ग व्यक्ति इस गीत को गाया करते थे, : "जब यह जगत आग से जल रहा हो; तो तू मेरे पास ही खड़ा होना। मेरे पास खड़ा होना, होने पाये कि तेरा सीना मेरा तकिया हो। हे युगानुयुगी चट्टान, मुझे अपने में छिपा लेना। परमेश्वर, मैं आपका न्याय नहीं चाहता हूँ। मैं तो आपका.... नहीं चाहता हूँ....क्या.... प्रभु, मैं तो आपका अनुग्रह ही चाहता हूँ। प्रभु, आप मुझे अपना न्याय नहीं, वरन अपना अनुग्रह ही प्रदान करें। प्रभु, मुझे आप अपनी व्यवस्था नहीं, बस अपना अनुग्रह ही प्रदान करें। आप.... में से कुछ भी प्रदान न करें... प्रभु, मुझे बस अपना अनुग्रह ही प्रदान करें; यही है वह सब कुछ जिसके लिए मैं अनुनयविनती कर सकता हूँ। मैं अपनी बांहों में कुछ भी लेकर नहीं आता हूँ, (मुझमें कोई भलाई नहीं है; मेरे पास मेरे भले का कोई लेखा नहीं है)मैं तो बस आपके क्रूस से ही लिपटा रहता हूँ। प्रभु, मैं तो बस यही सब जानता हूँ: एक है जो मेरा स्थान लेने के लिए आता है।

101 अब आप उसके व्यक्तित्व के सात-आयामी व्यक्तित्व पर दृष्टि डालें, और आप देखेंगे कि उसने क्या किया था। उसका सिर... उसका सिर और उसके बाल पाले के से उज्जवल... (उसके बाल ऊन के समान उजले)...और उसकी आँखें... की नाई थीं... (आइये हम देखें) ..... उसका सिर पाले के से उज्ज्वल थे; और उसकी आँखें ....आग की ज्वाला की नाई थीं। और उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्टी में तपाये गये हों;

अब देखिए, आप जानते हैं, हमने अभी वहाँ पर ध्यान दिया था जहाँ वह ओढ़े हुए था। अब आप इस पर दृष्टि डालें, अब जबकि वह उसके सिर, उसके बाल से होते हुए नीचे तक उसके पीतल के समान पांव पर आता है, तो आप इस पर ध्यान दें। देखिए, यहाँ पर यूहन्ना ने यीशु की जो मूरत देखी थी वह उससे भिन्न थी जो दानिय्येल ने जगत के सम्राज्य के विषय में देखी थी, जिसका सिर सोने का तथा इसी प्रकार से उसके विषय में और दूसरी बातें थीं।

देखिएगा, कि यहाँ पर यह क्या था, वहाँ पर वह ऐसे खड़ा था जैसे पीतल.....होता है। पीतल क्या दर्शाता है? पीतल न्याय को, दिव्य न्याय को दर्शाता है। यह यही दिखाता है, कि उसका यहाँ पृथ्वी पर आने का पूर्ण उद्देश्य यही था, कि परमेश्वर देहधारी हो, और हमारे लिए जान दे, और परमेश्वर के न्यायों को, दिव्य न्यायों को अपने ऊपर ले ले। और उसने एक ऐसा राज्य पाया है जो पीतल का है और ठोस है ; और यह हिल नहीं सकता है। पीतल से अधिक कठोर और कुछ नहीं होता है; उन्होंने ऐसा कभी भी कुछ नहीं पाया है जो पीतल को चकनाचूर कर सके।

102 न्याय ! पीतल यही बताता है, कि दिव्य न्याय पारित हो चुका है। आप जंगल में लटके पीतल के सांप पर दृष्टि डालें। पीतल के उस सांप ने क्या दर्शाया था? सांप ने पाप को दर्शाया था, परन्तु चूँकि वह पीतल का था, अत: न्याय पापों पर पहले ही से पारित हो चुका था।

अब एलिय्याह के दिनों पर भी ध्यान दीजिए, जब उन्होंने एलिय्याह को एक भविष्यद्वक्ता के रूप में ठुकरा दिया था, वह जो प्राचीन कलीसियायी काल का एक छोटा सा सूत्र था- जब उन्होंने उसे ठुकरा दिया था। मैं इन्हीं दिनों में से किसी दिन इसे लेकर आऊँगा और आप को दिखाऊँगा कि इस्राएल के पास भी सात कलीसियायी काल थे, और वे बिलकुल ठीक ठीक इन वालों से मेल खाते हैं। उनके कलीसियायी काल में, एलिय्याह के दिनों में उन्होंने उसे ठुकरा दिया था, और वहाँ पर साढ़े तीन वर्ष के लिए बिलकुल भी वर्षा नहीं हुई थी। और उस प्राचीन नबी ने कहा था, कि आकाश पीतल के समान दिखायी पड़ता है। परमेश्वर को ठुकराने और इजाबेल पर कान लगाने के कारण लोगों पर दिव्य न्याय आ पड़ा था।

103 पीतल उस वेदी पर जहाँ बलिदान को मारा जाता था दिव्य न्याय को दर्शाता था, वह वेदी पीतल की बनी हुई होती थी। मारा जाता था... वे नेव ही पीतल की अर्थात् न्याय की ही होती थी। उसने परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड़ में दाख को रौंदा था, और उसने हमारे न्याय को अपने ऊपर ले लिया था।

अब ज़रा एक मिनट के लिए प्रकाशितवाक्य 19:15 निकालिएं; आइये हम देखें कि उसने क्या किया था। प्रकाशितवाक्य 19 और 15। आइये हम बस एक मिनट के लिए पढ़ते हैं। क्या मैं इसे ढूँढ़ सकता हूँ। जी हाँ, आइये हम... से शुरू करते हैं... आइये हम लगभग 12वें पद से देखें।

और उसकी आँखें... आग की ज्वाला हैं। और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं; और उसका एक नाम है जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता।

और वह लोहू से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है: और उसका नाम परमेश्वर का वचन कहलाता है.....

अब, स्मरण रखिए, उसका नाम परमेश्वर का वचन नहीं था, उसका नाम तो वह कहलाता है। समझे? .....उसका नाम परमेश्वर का वचन कहलाता था।

और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है।।

और जाति जाति को मारने के लिए उसके मुँह से चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राज दंड़ लिये हुए उन पर राज्य करेगा;.... (यह क्या है?).... और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड़ में दाख रौंदेगा।

104 उसने क्या किया था? पापी होने के कारण परमेश्वर का कोप हमारे ऊपर था। क्या यह सही है? कोई भी अपने आप को बचा नहीं सकता था। हम कुछ भी नहीं कर सकते थे; हम सभों ने पाप में जन्म लिया, अधर्म में बढ़े हुए, और झूठ बोलते हुए संसार में आये। और उसने क्या किया था? वह जगत में आया, (हाल्लिल्याह!) और मदिरा के कुंड़ में दाख को रौंदा।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सारी जलजलाहट उसके ऊपर उंडेल दी गयी थी। "हे परमेश्वर के मेमने केवल तू ही योग्य है, क्योंकि तू ही वध हुआ था। उसने जगत के पापों को अपने ऊपर ले लिया था, और उसने हमारे पापों का बोझ अपने ऊपर उठा लिया था; और परमेश्वर ने अपने प्रकोप की जलजलाहट उसके ऊपर उंडेल दी थी, "और वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया; और हमारे अधर्म के कामों हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उसे ताड़ना पड़ी, और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गये थे।

कभी भी कोई भी मनुष्य उस मनुष्य के जैसे नहीं मरा। उसने तब तक दुख-पीड़ा सही जब तक कि उसकी अपनी देह में खून और पानी अलग अलग न हो गया। उसकी मौत से पहले ही खून की बूंदें उसकी भौंह से निकलकर फूट पड़ी थीं। ..... सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकाप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड़ में दाख रौंदेगा।

105 न्यायी के वे ही पांव किसी दिन ... (महिमा होवे).... जब वह एक न्यायी के रूप में आता है, तो वह मसीह विरोधी को और अपने सब बैरियों को रौंदेगा। हाल्लिलुय्याह ! वह अपने हाथ में लोहे का राजदंड़ लेकर पृथ्वी पर चलेगा। आमीन!

हे पापी मित्र, प्रायश्चित कर लो, जब कि तुम्हारे पास प्रायश्चित करने का अवसर है। आप बस यह सोचकर इसे दर किनारे करने की चेष्टा करते हैं, कि यह एक छोटी सी गाथा है जो घटित नहीं होगी; जबकि यह घटित होगी ही। आप सोचते हैं, "यह तो बस मेरे साथ हो ही नहीं सकता है। यह आपके साथ ही होगा। उसके पीतल के पांव उसके बैरियों को चकनाचूर कर देंगे। क्योंकि उसने हमारे पापों का दाम चुकाने के लिए दुख-पीड़ा सही, और परमेश्वर के प्रक़ोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड़ में दाख को रौंदा था। और इसके बाद भी हम जो पापी, कंगाल, अभागे और कीड़े-मकोड़े के जैसे हैं, अपनी नाक को ऊपर करते हैं- घमंड़ करते हैं, और किसी प्रकार की निरीश्वरात्मक पुस्तक को पढ़ते हैं, और यह सोचने की कोशिश करते हैं, कि कोई परमेश्वर नहीं है, और यह कहने की कोशिश करते हैं, कि इस जैसी कोई चीज नहीं है, और न्याय नहीं आ सकता है।

वह अपने उन पांवों से अपने बैरी को कुचल डालेगा। वह मसीह विरोधी को चकनाचूर कर डालेगा। वह धर्मत्याग करनेवाली कलीसियाओं को लेगा, और उन्हें कहीं सुदूर भस्म करनेवाली उस आग में फेंक देगा जहाँ वे भस्म हो जायेंगे और उनका अस्तित्व मिट जायेगा। और वह पृथ्वी पर, अर्थात् वह और उसकी कलीसिया पृथ्वी पर युगानुयुग राज्य करेंगे। महिमा होवे!

106 "उसका सिर ऊन की नाई श्वेत था, जो कि उसकी धार्मिकता, अनुभव, वाकपुट्ता, भरपूरी, बुद्धि को दर्शाता है। वयोवृद्धता, सफेदी, बुद्धि और उम्रदराजी के विषय में बताती है। वह जानता है कि वह क्या कर रहा है, वह है। वह बुद्धि का सोता है। वह अनुभव का सोता है। वह सारी भली वस्तुओं का सोता है; यही कारण है कि वह ऐसा प्रकट हुआ जैसे एक पुरूष मनुष्य के पुत्र के सरीखा, और उसके बाल श्वेत थे जो नीचे को लटक रहे थे।

दानिय्येल ने उसे कई वर्षों पहले, सात सौ वर्ष पहले देखा था, और कहा था, वह अति प्राचीन था और वह एक ऐसा था जैसे मनुष्य का पुत्र सामर्थ में आता है और वह दिनों के इस प्राचीन से मेल खाता था; और न्याय का सिंहासन लगा हुआ था।

107 अब मैं आप से कुछ पूछना चाहता हूँ। मैं यह तुझ नीमगर्म कलीसिया से कह रहा हूँ। दस कुंवारियाँ प्रभु से भेंट करने के लिए गयी थीं, और उनमें से पाँच तो समझदार थीं, और पाँच मूर्ख थीं, जैसा कि हमने इस सुबह ही उस वृक्ष के उदाहरण में देखा था जिस पर कलमें सांठी हुई थीं। अब स्मरण रखिए, जब वे परमेश्वर से भेंट करने के लिए गयीं.... अब देखिए, बाइबिल कहती है, कि "पुस्तकें खोली गयीं।" दानिय्येल 7:9 कहता है, "पुस्तकें खोली गयीं।" यह पापी की पुस्तक थी।

और एक और पुस्तक खोली गयी। उसके साथ कौंन आता है? स्वर्ग पर ऊपर उठायी गयी कलीसिया। ओह! "फिर उसके साथ हजारों हजार लोग आये जो उसकी सेवा टहल कर रहे थे।" यह उसकी दुल्हन, उसकी पत्नी थी। ओह, महिमा होवे ! उसकी पत्नी, उसकी कलीसिया उसके साथ आती है। न्याय का सिंहासन लगा हुआ था, और पुस्तकें खोली गयी थीं। तथा एक और पुस्तक खोली गयी जिससे सोयी हुई कुंवारियों (मूर्ख कुंवारियों) का और हर एक मनुष्य का न्याय किया गया। आप से कारण बताने के लिए कहा जायेगा कि

आप ने क्यों नहीं किया था, और तब आप क्या करेंगे? अब आप बेहतर जानते हैं, आप बेहतर जानते हैं। हो सकता है कि शायद आप इसे पहले न जानते हों, लेकिन अब आप जानते हैं। समझे? "यदि धर्मी जन ही मुश्किल से उद्धार पायेगा, तो फिर पापी और अधर्मी का क्या ठिकाना?" वह जो इसे बेहतर जानता है, और इसे ठुकरा देता है-इसे फिर भी ठुकरा देता है, तो उसका क्या ठिकाना होगा? उसके पांव पीतल के समान थे- यह दिव्य न्याय को दर्शाता है।

108 अब, आइये हम देखें, हम शीघ्र ही.... अब आइये हम इस पृष्ठ को नीचे तक अंत तक देखें।

..... उसके बाल श्वेत ऊन के से उज्जवल, और उसकी आँखें आग की ज्वाला की नाई थीं;

और उसके पांव...के समान... उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे....जो मानो भट्टी में तपाये गये हो,... और उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाई था।

बहुत से जल का शब्द। ये जल क्या दर्शाते हैं? यदि आप इसे रेखांकित करना चाहते हैं, तो आप प्रकाशितवाक्य 17: 15 निकालें; और आप यह ज्ञात करेंगे, कि बाइबिल कहती है, "वे पानी जो तू ने देखे, वे लोग, और भीड़, और जातियाँ और भाषा हैं।" यह बिलकुल ठीक बात है।

शब्द। यह उस भटकनेवाले प्राण के लिए क्या ही भंयकर बात है, जो जीवन के सागर पर बिना किसी चालक के बिना दिशा-निर्देश के भंवरों में ढीला होकर हिलोरे खा रहा होता है, और महा जल प्रपात के गर्जन को, जल प्रपात के गर्जन को सुनें; यह इधरउधर भटकनेवाले प्राण के लिए क्या ही भंयकर बात होगी। या अर्थात् लोग था, वह वहाँ - बहुत से जल का शब्द।

उसका शब्द क्या है? यह न्याय है ; यह उन प्रचारकों- सेवकों का शब्द है जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रत्येक काल में लोगों से पुकार कर बोला था, वह वहाँ पर खड़ा हुआ होता था। उन से बहुत से पानियों का, अर्थात् लोगों, और भीड़ का शब्द बोला था। उन सात तारों के द्वारा जो उसके हाथ में हैं प्रत्येक कलीसियासयी काल के लिए शब्द हुआ, वे पवित्र आत्मा के बपतिस्में, और यीशु के नाम में बपतिस्मे के विषय में, अन्यान्य भाषाओं के बोले जाने , परमेश्वर की सामर्थ, मसीह के जी उठने, मसीह के दूसरे आगमन, दिव्य न्याय के विषय में प्रचार कर रहे थे।

बहुत से जल का शब्द इस एक में से होकर आ रहा था जो मनुष्य के पुत्र सरीखा दिखायी पड़ता था। बहुत से पानियों....

109 यह जानना क्या ही भंयकर बात होगी, कि आप सभाओं में बैठे और आपने सुना कि आपको परमेश्वर से अपना सम्बन्ध ठीक कर लेना चाहिए और पवित्र आत्मा प्राप्त कर लेना चाहिए; और आपके चलायमान-भटकनेवाले प्राण ने इस शब्द को उस सभा में सुना जिसमें आप बैठे हुए थे, और आपने परमेश्वर के न्यायों के विषय में प्रचार होते हुए सुना; और फिर भी उसे ठुकरा दिया, तो आपके आगे जलप्रपात है, वह महाजलप्रपात है जो आपको लेकर आपके अनन्त विनाश पर पहुँचा देगा।

बहुत से जल का शब्द... उसके व्यक्तित्व का चौथा चरित्र बहुत से पानियों का शब्द है। आप इसे कैसे करने जा रहे हैं, जबकि यह महिमा में रिकॉर्ड होता है, जबकि आज रात्रि यह शब्द स्वर्ग में रिकॉर्ड होता है? "जैसा मनुष्य अपने हृदय में विचार करता है, वैसा ही वह होता है।"

ध्यान दीजिए स्वर्ग में आपके....से आपके शब्द की आवाज अधिक ऊँची होती है; मेरा अभिप्राय है, कि स्वर्ग में आपके विचारों की आवाज आपके शब्दों से कहीं ऊँची होती है। निश्चय ही, ऐसा ही है। परमेश्वर आपके मन के विचारों और भावनाओं को जानता है। वह इसके विषय में सब कुछ जानता है। उसने फरीसियों से कहा था, "तुम पाखंड़ियों, तुम कैसे कोई भली बात बोल सकते हो, क्योंकि जो तुम्हारे मन में भरा है वही मुँह पर आता है ? तुम मुझे 'भला गुरू' कहते हो, और मैं यह जानता हूँ; और मैं तुम्हें परख सकता हूँ और देख सकता हूँ कि तुम ढोंगी हों। "तुम्हारा इससे कोई मतलब नहीं है।' ओह, उस दिन क्या होगा, जब उन बहुत से पानियों का शब्द जो कई कलीसियायी कालों से निकलकर बाहर आया गरजकर बोलेगा?

110 अब मैं आपसे कोई और बात पूछना चाहता हूँ। आइये मैं तुम लोगों से जिनका उद्धार हो गया है कुछ कहता हूँ। आइये मैं आप से यह बात कहूँ।

अब, आप जो भटकने वाले प्राण हों, आप जो इधर उधर भटकने वाले हों जो उस बड़े महाजलप्रपात में भटकते फिरते हो; आप सावधान हो जाओ। यह आपके लिए बहुत ही भंयकर बात होगी, जब आप यह जानेंगे, कि तब आपके लिए कोई बचना नहीं है। आप तब बच नहीं सकते हैं; तब तो आप यही जानेंगे कि आपका विनाश आपके ठीक सामने हैं। आप यह कुछ ही मिनटों में तब जान जायेंगे जब आप उस शब्द को यह कहता सुनेंगे, "हे कुकर्म करनेवालों, मुझ से दूर हो जाओ, और उस युगानुयुगी आग में चले जाओ जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गयी है। आप इसे तब जान जायेंगे, जब आप उस महा जलप्रपात को - उन सभाओं के शब्द को गरजते हुए सुनते हैं, जबकि आप उससे होकर गुजर रहे होते हैं। ओह, यह क्या ही भयानक बात होगी, यह क्या ही भयानक दुस्वप्न होगा। होने पाये, ऐसा तुम लोगों के साथ न हो। प्रायश्चित कर लो, परमेश्वर से अभी अपना सम्बन्ध ठीक कर लो, जबकि आप परमेश्वर से अपना सम्बन्ध ठीक कर सकते हो ।

111 अब मैं आप से कोई और बात पूछना चाहता हूँ। उस मनुष्य के लिए जिसने अपना लंगर डाला हुआ है, जो कहीं सुदूर सदाबाहर के वृक्ष के तले लेटा हुआ है, कलकल-छलछल करते झरने की आवाज को सुनता है, उसके लिए इस से मधुरतम् और क्या हो सकता है? ओह, यह तो ऐसा ही है जैसे मानो कलीसिया परमेश्वर के उस शब्द के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठी हुई हो जो मधुरतापूर्वक कलकल-छलछल कर रहा हो और उनसे.... में बातें कर रहा हो— देखा यह क्या है? यह पापी के लिए तो दोषी ठहराया जाना और उद्धार पाये हुए जन के लिए एक आशीष है।

एक मनुष्य जिसने अपनी नाव का लंगर मसीह यीशु रूपी चट्टान पर डाला हुआ है, वह तो बस लेटता है और सुनता है, और वह किस प्रकार से क्या ही विश्राम कर सकता है ! वह तो उस विश्राम में ही प्रवेश कर जाता है। मुझे यह कैसा अच्छा लगता है, कि मैं वहाँ पहुँच जाऊँ जहाँ जल बह रहा हो। यदि हम कभी मछली पकड़ने या ऐसे ही किसी काम के लिए जाते हैं, तो मैं अक्सर अपने लिए एक ऐसा स्थान ढूंढने की कोशिश करता हूँ जहाँ पानी कलकल-छलछल कर रहा हो, क्योंकि इससे बस आपको विश्राम मिल जाता है। आप तों बस उसे सारी रात ही बोलते हुए सुनते हैं। ओह मेरे परमेश्वर !

112 क्या यह तब बहुत ही सुंदर बात नहीं होती है, जब आप सचमुच में अपने प्राण का लंगर मसीह में डाल सकते हैं, मसीह में एक ऐसे स्थान पर लंगर डाल सकते हैं कि आप उसके सम्मुख शान्त हो सकते हैं और आप उसके वचन को यह कहते हुए सुन सकते हैं, "मैं ही वह प्रभु हूँ जो तुझे चंगा करता है। मैं ही वह प्रभु हूँ जो तुझे अनन्त जीवन देता है। मैं तुझसे प्रेम करता हूँ। मैंने तुझे जगत की उत्पत्ति से भी पहले जाना था। मैंने ही तेरा नाम अपनी पुस्तक में लिखा था, तू मेरा है। तू डर मत; यह मैं ही हूँ। तू भय न खाना, मैं तेरे साथ हूँ।"

तब मैं यह गीत गाता हूँ:

मैंने स्वर्ग के विश्राम में अपना लंगर डाला हुआ है,

मैं समुद्र की जंगली तूफानी लहरो पर न डोलूंगा

चाहे आज़माइशें जंगली तूफानी लहरों की तरह मुझ पर आ पड़े।

लेकिन मैं तो यीशु में सदा के लिए सुरक्षित हूँ।

स्मरण रखिए, ठीक वही शब्द जो आप से मधुरतापूर्वक बातें करता है, पापी को दोषी ठहरायेगा। ठीक जिस जल की बाढ़ ने पापी का सर्व-नाश किया, ठीक उसी जल की बाढ़ ने नूह को बचाया था। क्या आप समझे मेरा कहने का क्या तात्पर्य है? बहुत से जल का शब्द.....

113 अब देखिए, उसके बाल ऊन के समान; और आँखें आग की ज्वाला की नाई और पांव पीतल के समान, और उसका शब्द बहुत से जल के समान था।

और उसके दाहिने हाथ में सात तारे थे। अब, सात तारे देखिए । अब आइये हम ठीक यहीं पर बीसवाँ पद लें।

उन सात तारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दाहिने हाथ में देखा था; और उन सात सोने की दीवटों का भेदः वे सात तारे सातों कलीसियाओं ... के सात दूत हैं... (या सात सुसमाचारदूत हैं, सात सेवक हैं) और वे सात सोने की दीवटें जो तूने देखीं सात कलीसियाएँ हैं।

वह उसके लिए इसका अर्थ बताता है, ताकि इस बात में सुनिश्चित हो जाये कि इस बात के विषय में कोई गलती न हो। प्रत्येक कलीसियायी काल के लिए एक सुसमाचारदूत। ओह, इस सप्ताह यह एक बहुत ही सुंदर पाठ होगा जबकि हम इतिहास में पीछे छांक कर देखते हैं और उन सुसमाचारदूतों को लेते हैं और उस सेवकाई को देखते हैं जो उनके पास थी। उनके पास ठीक एक सी ही सेवकाई थी; छोटी कलीसिया में सभी काल में बिलकुल एक सी ही सेवकाई थी।

114 कुछ समय पहले ही किसी ने मुझ से कहा था, "आप जानते हैं, कैथोलिक कलीसिया के विषय में एक भला कथन यह है, कि यही असली कलीसिया है, क्योंकि यह सभी कालों में विद्यमान रही है।

मैंने कहा, "मेरे लिए तो इसमें कोई भेद की बात नहीं है, जब उसके समर्थन में सारी सत्ताएँ तथा अन्य सभी कुछ था, तो वह कैसे कायम रही और तूफान उठा खड़ा किया। परन्तु मेरे लिए तो भेद की बात यही है कि कैसे उस छोटे से, नन्हे से झंड़ ने उस तूफान का कभी सामना

किया; जबकि उन्हें आरे से चीरा गया; और सिंहों की मांद में फेंक दिया गया, और उन्हें लटका दिया गया, और जला दिया गया, और उन्हें शेरों से खिलवा दिया गया, और मरवा दिया गया, तथा उनके साथ अन्य सभी कुछ किया गया; और इस पर भी वे कैसे बचे रहे थे। यह यही दिखाता है, कि परमेश्वर का हाथ उनके साथ था। उनके विषय में यही सारी बात है। और आज अभी भी उसका उजियाला प्रज्वलित हो रहा है। आमीन। जी हाँ, श्रीमान !

115 अब देखिए, "वे सात तारे जो मेरे दाहिने हाथ में थे।" उसके दाहिने हाथ में जो सात तारे थे, इसका अर्थ सात कलीसियायी कालों के सात दूत- सात सेवक हैं। ओह यह है... यह सुंदर है ! कैसे हम बीते समय में जाकर उस सेवक को लेते हैं जो इफिसुस कलीसिया के पास सुसमाचार लेकर आया, और जिस सुसमाचार को वह सुसमाचारदूत लेकर आया वह उस पर मृत्यु तक अटल बना रहा; और फिर स्मुरना कलीसिया के पास, और पिरगुमन कलीसिया के पास और थुआतीरा कलीसिया के पास, और यहाँ तक कि अन्य सभी कालों से होते हुए इस काल के पास भी अब सुसमाचार लेकर आते हैं। वे सेवक जिन्होंने उस उजियाले को थामे रखा और उसी उजियाले को आगे लेकर आये, और उसे उसी प्रकार से थामे रखा जिसका कि वह आरम्भ में मूल रूप में था, और जो उजियाले को आगे को फैलाते आयें।

उसने उन्हें अपने दाहिने हाथ में थामे रखा। ज़रा इसके विषय में सोचिएं! इस दाहिने हाथ का बिलकुल ठीक ठीक वह अर्थ नहीं है जैसा कि इसका होता है कि मसीह परमेश्वर के दाहिने विराजमान है। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर का दाहिना हाथ है, क्योंकि परमेश्वर तो आत्मा है। परन्तु मसीह तो सामर्थ का प्रबल जन था। आपका दाहिना हाथ वाला मनुष्य, वह एक ऐसा मनुष्य..मनुष्य होता है जो आपके बिलकुल निकट खड़ा होता है।

116 और स्मरण रखिए, वे सात तारे उसके दाहिने हाथ में थे। ज़रा सोचिएं, वे अपनी ऊर्जा-धारा, अपना उजियाला उसी से ही प्राप्त कर रहे थे। वे उसके दाहिने हाथ में उसके पूरे नियन्त्रण में थे।

परमेश्वर का सेवक ठीक इसी प्रकार से ही होता है। थामे रहता है... उन्हें कौन हानि पहुँचा सकता है? उनकी कौन हानि कर सकता है? जैसाकि उन पिछले दिनों में उन दूतों में से एक वहाँ पर ऐसा ही पुकार कर कह रहा था। स्मरण रखिए, दूत का अर्थ सुसमाचारदूत या संदेशवाहक होता है। आगे आने वाले सप्ताह में हम उन गहरी बातों का अध्ययन करेंगे। "दूत" का अर्थ "सुसमाचारदूत" या "संदेशवाहक होता है। और उसने कहा था, "हमें परमेश्वर के उस प्रेम से जो हमारा मसीह में है कौन अलग कर सकता है? क्या बीमारी? क्या संकट? क्या नंगापन? क्या तलवार? क्या मृत्यु? मैं तो उसमें ऐसा दृढ़ हो चुका हूँ, कि कुछ भी ऐसा नहीं है जो हमें परमेश्वर के उस प्रेम से जो हमारा मसीह में है अलग कर सके।" यह पौलुस था जिसने यह कहा था। क्योंकि हम तो पूरी तरह से उसके दाहिने हाथ को समर्पित हो चुके हैं।

कोई कहता है, "पवित्र पाखंड़ी! पवित्र पाखंड़ी!" इससे वे लेशमात्र भी विचलित नहीं होते हैं। "तुम एक धार्मिक हठधर्मी हो।" वे इस पर कान तक नहीं लगाते हैं। वे तो पूरी तरह से उसकी सामर्थ के दाहिने हाथ में समर्पित रहते हैं। और उसकी सामर्थ के दाहिने हाथ से अपना उजियाला प्राप्त कर रहे होते हैं; और नम्रता और भलाई, और सुशीलता और धैर्य, के साथ उसके उजियाले को चमका रहे। होते हैं, और उसके चिन्हों और चमत्कारों,और आश्चर्यकर्मों को दिखा रहे होते हैं। चाहे संसार इसे भूतसिद्धि कहे, वे इसे जो कहना चाहे वह कहें, हमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। हम तो उसके दाहिने हाथ में पूरी तरह से समर्पित और मौजूद रहते हैं। क्या यह अद्भुत बात नहीं है?

117 अब आइये हम शीघ्रता करें; क्योंकि हम आपको थकित नहीं करना चाहते हैं। "उसके दाहिने हाथ में सात तारे हैं....."।

अब आप उसके व्यक्तित्व का सातवाँ और अन्तिम प्रकटीकरण देखिएं:

....और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी: (मेरा अभिप्राय है कि यह उसका छठवां प्रकटीकरण है) ...उसके मुख से दोधारी चोखी तलवार निकलती थी....

अब इस, बहुत से जल का शब्द; देखिए जो उसके मुंह से निकलता है.... उसके दाहिने हाथ में उसके तारे थे। ...और उसके मुख से दोधारी तलवार निकलती थी: ...

अब क्या आप जानते हैं, कि बाइबिल में दोधारी तलवार का क्या अर्थ होता है? आइये हम बस इसे पकड़ लें जिससे कि आप इसे जान जायें। इब्रानियों 4:2 लीजिए, आपको यह एक या दो पृष्ठ के पीछे ही मिल जायेगा। समझे? यहाँ पर इब्रानियों प्रकाशितवाक्य के बस ठीक पीछे हैं; यहूदा और उसके बाद प्रकाशितवाक्य है। अब आप इसे ध्यानपूर्वक सुनें । इब्रानियों.... इब्रानियों का चौथा अध्याय; हम यहीं पर हैं। बिलकुल ठीक है, इब्रानियों का चौथा अध्याय और बारहवां पद:

क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके , वार पार छेदता है ; और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है।

और फिर भी लोग आपको मस्तिष्क का पढ़नेवाला कहते हैं। यह तो परमेश्वर का ही वचन है जो आपकी कलीसिया में साक्षात् प्रकट होता है। यह तो परमेश्वर का ही वचन है जो दोधारी तलवार से भी चोखा है।

118 कहिए, मैं वहाँ की किसी और बात को बस सोचने लगा था। मैं नहीं जानता हूँ, कि मैंने वचन के ले.... लिखा है कि नहीं.... आप ज़रा एक मिनट के लिए प्रकाशितवाक्य 19 निकालें। आइये हम इसे फिर से लें, मैं सोचता हूँ, कि यह ठीक है। हो सकता है, कि शायद मैं.... प्रकाशितवाक्य 19 और 11:

फिर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा; और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है और उस पर एक सवार है....(यहाँ पर फिर से श्वेत अर्थात् न्याय आता है)...और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य, और सत्य कहलाता है, और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है।

आप जानते हैं कि वह कौन था, क्या आप नहीं जानते हैं? बिलकुल ठीक है।

उसकी आँखें .....आग की ज्वाला है.....(वह कौन था?)..... और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं: ... (ओह, ओह , अब यहाँ पर वह अपने राज्य में आ चुका है)... और उसका .... और... और उसका एक नाम लिखा है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता।

और वह लोहू से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है; और उसका नाम परमेश्वर का वचन है, और उसका नाम परमेश्वर का वचन कहलाता है।

उसके मुंह से क्या बाहर निकलता है? क्या बाहर निकलता है? यह श्वेत घोड़े का सवार था। और प्रकाशितवाक्य सात में भी...जब... मेरा मानना है कि प्रकाशितवाक्य आठ में भी एक श्वेत घोड़े का सवार है। जब वह श्वेत घोड़े का सवार.... नहीं, यह प्रकाशितवाक्य छ: है। जब

यह वाला श्वेत घाड़े का सवार बाहर निकल कर गया, तो उसे जय पाने के लिए एक...एक धनुष दिया गया, ताकि वह और भी जय पाये।

119 और उसके मुख से एक तलवार बाहर निकलकर गयी। वह क्या था? प्रकाशितवाक्यों का श्वेत घोड़े का सवार!

आप इस तलवार पर ध्यान दें। "उसके मुंह से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी", अर्थात् वचन निकलता था। और आखिरकार उसके वचन के द्वारा ही.... जब वह परमेश्वर के सारे पुत्रों पर प्रकट किया जाता है, तो वह प्रत्येक जाति को अपने वचन से, इस चोखी तलवार से वार-पार काट डालेगा। आप यहाँ पर दृष्टि लगाकर देखें, कि क्या घटित हुआ है। जबकि हम इसका अध्ययन करते चले जाते हैं।

...उसके दाहिने हाथ में.....और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी; और उसका मुंह ऐसा प्रज्वलित था, जैसे सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।

एक चोखी दोधार तलवार। इस व्यक्ति के मुख से क्या निकल रहा था? परमेश्वर का वचन! यही चोखी दोधारी तलवार है। यह क्या कर रहा था? मन की भावनाओं और विचारों को जांच रहा था; वह मांस और गूदे, और रूधिर कोशिकाओं, हड्डियों के अंदर गहराई तक जाता है, गांठ- गांठ, गूदे- गूदे में भी गहराई में वार पार जाता है, जिससे कि वह हृदय के विचारों और भावनाओं को जांचता है। यही है वह जो परमेश्वर का वचन करता है।

120 "और वचन देहधारी हुआ और उसने हमारे बीच में डेरा किया।"

और अब वचन अपनी कलीसिया में देहधारी हुआ है, वह हमारे मध्य में डेरा कर रहा है। उसके दूत, उसके सेवक उसके हाथ में हैं। परमेश्वर अपनी कलीसिया के ऊपर निर्भर कर रहा है। परमेश्वर इस युग में मर रहे, मूर्तिपूजा-बन्धित, रीति-रिवाज ग्रसित जगत पर इस सुसमाचार के उजियाले को चमकाने के लिए हम पर आश्रित हो रहा है। परमेश्वर इस बोझ को मेरे और आपके ऊपर रख रहा है। हाय हम पर, यदि कोई मूर्तिपूजक इसे जाने बगैर ही मर जाता है।

ओह, वे कुछ पाठन सामग्री, लेख, गणितीय गणनाएँ और धार्मिक परचे लिये चलते हैं, और उन्होंने नास्तिकों के झुंड़ से ज्यादा और कुछ नहीं बनाया है। मेरा तात्पर्य तो सुसमाचार से है, और सुसमाचार शब्द ही नहीं है, वरन यह तो वैसा ही है जैसा कि पौलुस ने कहा था।

पौलुस ने कहा कि सुसमाचार हमारे पास केवल शब्द के द्वारा ही नहीं पहुँचा, बल्कि वचन साक्षत् प्रकट हुआ था। जब वचन पवित्र आत्मा के द्वारा... जब वचन उस हृदय में जिसके पास पवित्र आत्मा है बोया जाता है, तो वह वही उत्पन्न करता है जो वचन ने कहा था कि वह उत्पन्न करेगा। और वचन ही हृदय के विचारों को जांचता है। ओह, महिमा होवे ! वह मन की भावनाओं और विचारों को जांचनेचाला है; वचन ऐसा ही करता है।

121 उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती है।

हे मूर्ति-पूजक जगत जाग जा! इन्हीं दिनों में से किसी एक दिन कुछ न कुछ घटित होने जा रहा है। जी हाँ, परमेश्वर का वचन, उसका नाम परमेश्वर का वचन था; और वचन ही प्रकट हुआ था। इससे पहले कि यीशु कलीसियायी काल में स्वयं अपने को प्रकट करने के लिए लौटता , उसने कलीसिया को यह अन्तिम आदेश दिया था, उसने मरकुस 16 में कहा था, "सारे जगत में जाओ, और सारी सृष्टि के हर एक प्राणी को सुसमाचार का प्रचार करो।" क्या करो? सुसमाचार का प्रचार करो। मरकुस 16, "हर एक प्राणी को सुसमाचार का प्रचार करो।" यह क्या है? दूसरे शब्दों में यह है, कि: पवित्र आत्मा की सामर्थ का प्रकटीकरण करो। इसे तो ऐसा ही करना है।

122 अब, देखिएगा, हर एक को... अब वचन की शिक्षा मात्र ही नहीं देनी है। उसने कभी नहीं कहा था, कि जाकर वचन की शिक्षा दो । उसने तो कहा था, हैं। "जाकर सुसमाचार का प्रचार करो;" उसने वचन की शिक्षा देने के लिए नहीं, वरन सुसमाचार का प्रचार करने के लिए ही कहा था।

"और जो इस सुसमाचार का विश्वास करते हैं, उनके ये चिन्ह होंगे, : वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषाएँ बोलेंगे।

यदि वे सांपों को उठा लेंगे, या नाशक वस्तु भी पी जायेंगे, तौभी उनकी कोई हानि न होगी; यदि वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, तो वे चंगे हो जायेंगे।"

और पवित्र वचन कहता है, "वे बाहर निकल कर गये, वे सभी जगह प्रचार कर रहे थे, और परमेश्वर उनसे काम करवा रहा था, और चिन्हों के द्वारा वचन को प्रमाणित कर रहा था।" यही तो सुसमाचार है, यही तो सुसमाचार का प्रकटीकरण है।

ये चिन्ह कितनों के होंगे ? जगत के अंत तक हर एक काल के ! वहाँ पर एक छोटा झुंड़ था जो उस उजियाले को थामे हुए आगे बढ़ता चला जा रहा था। इसमें कोई अचरज नहीं है, कि यीशु ने कहा था, "हे छोटे झंड, मत डर, तेरे पिता को यही भाया है कि तुझे राज्य दे।" वह हमेशा ही एक छोटा झुड़ ही रहा है, वह बहुसंख्याँ में नहीं, वरन अल्प संख्याँ में ही रहा है।

123 बिलकुल ठीक है,

अब एक और टिप्पणी है। और हमने बीसवाँ पद लिया था। अत: अब, आइये हम यहाँ पर इस पद को देखें। अब 16 वां पद:

और उसके दाहिने हाथ में सात तारे थे..... अब आइये हम लें..... और उसका मुंह.... और उसके मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती थी; और उसका मुंह ऐसे प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।

यदि आप इसे निकालना चाहते हैं, तो आइये हम देखें, हम मत्ती 17 निकालें। आइये हम इसे बिलकुल ठीक से समझ लें, जबकि हम इसी पर हैं ; अत: हम बस इसका अध्ययन करते चले जा रहे हैं। और बहुतेरे लोग जो इसे रेखांकित कर रहे हैं, या इसे लिख रहे हैं, अत: आइये हम बस इसे उन्हें ही पढ़ने दें, जिससे कि हम इसे जान जायें।

यह बिलकुल ठीक बात है, मत्ती 17 लें:

...छः दिन के बाद यीशु ने पतरस, याकूब, और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया,

और उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुंह सूर्य की नाई चमका और उसका वस्त्र ज्योति की नाई उजला हो गया।

उसका रूपान्तरण हो गया था। उसने क्या किया था? वह स्वयं अपने को रूपान्तरण में ; अपने आगमन के दिन में लेकर चला गया था।

124 अब देखिए, इससे कुछ घंटे पहले ही यीशु ने यहाँ पर इससे अगले अध्याय में यह टिप्पणी की थी, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, यहाँ पर कुछ ऐसे खड़े हैं..." कितने लोग वह जानते हैं जो मैं कहने जा रहा हूँ? यहाँ पर कुछ ऐसे खड़े हैं जो तब तक न गुज़रेंगे, तब तक न मरेंगे जब तक कि मनुष्य के पुत्र को महिमा में आते हुए न देखेंगे।

क्या यह सच है? और उसने पतरस, याकूब, और यूहन्ना को अपने साथ तीन गवाहों के रूप में लिया था; क्योंकि पुराने नियम में हर एक बात.... कोई भी बात तीन गवाहों के द्वारा सच्ची ठहरायी जाती थी; और वह उन्हें लेकर पहाड़ के ऊपर गया।

अब ध्यान दीजिए, कि सबसे पहले क्या आता है। ओह, मैं बस ठीक यहीं पर ही नहीं रूक सकता हूँ ; मुझे तो बस इसे लेना ही है। उन्होंने सबसे पहली चीज क्या देखी थी? वे यीशु को पहाड़ के ऊपर लेकर गये थे.... या वह उन्हें लेकर ऊपर गया था; और उसका उनके सामने रूप बदल गया था... उसका रुपान्तरण हो गया था। उसका वस्त्र ऐसा उजला हो गया था जैसे कड़ी धूप के समय सूर्य होता है। और वहाँ पर उसके पास मूसा और एलिय्याह दिखायी दिये।

अब मनुष्य का पुत्र किस रुप में आ रहा है? और जो सबसे पहले दृष्टिगोचर होंगे, वे मूसा और एलिय्याह ही होंगे।

125 अब ध्यान दीजिए, इससे पहले कि यीशु पृथ्वी पर फिर से लौटे.... अब यह समय से थोड़े से आगे की बात है; परन्तु एलिय्याह का आत्मा पृथ्वी पर फिर से वापस आएगा, और वह बालकों के मनों को पितरों की ओर फेरेगा। बाइबिल ऐसा ही कहती है। यीशु ने उसे यहाँ पर देखा था, प्रेरितों ने उसे यहाँ पर देखा था। मनुष्य के पुत्र के आने का क्रम महिमान्वित हुआ था। उसे महिमान्वित होना है। और वापस आना है।

इससे पहले कि वे उसे देखते उन्होंने सबसे पहला जन क्या देखा था? एलिय्याह! उसके बाद क्या देखा? मूसा ! इस्राएल अर्थात् व्यवस्था का पालने करनेवाला वापस लौट रहा है, और उसके बाद ही वे मनुष्य के पुत्र को महिमान्वित होते देखते हैं। हाल्लिलूय्याह!

क्या आप उसके आगमन के क्रम को देखते हैं? एलिय्याह का आत्मा या अन्तिम कलीसियायी काल के लिए गवाह सामर्थ्य में आ रहा है, ताकि वह उसे प्रकट करे। समझे?

126 इसके बाद ही एक लाख चवालीस हजार इस्राएली सीनै पर्वत पर एकत्र होते हैं.... जहाँ इस्राएल स्वयं एक राष्ट्र बन चुका है, वह संसार का सबसे प्राचीन राष्ट्र है; उसका ध्वज संसार में सबसे पुराना है; उनका अपना एक देश है, उनका अपना एक झंड़ा है; उनकी अपनी सेना है, उनकी अपनी मुद्रा है, और उनका अपना अन्य सभी कुछ है। वे राष्ट्रों के संध के सदस्यों में से एक हैं, क्योंकि वे एक राष्ट्र हैं। यीशु ने कहा था, कि "जब तक सारी बातें पूरी न हो लें, उन्हें कभी भी बाहर न निकाला जायेगा।"

यह बात भेदपूर्ण है, कि यहूदियों का वह झुड़ जिसे हर जगह सताया गया, और ठुकराया गया, और बाहर खदेड़ा गया, और बाहर फेंका गया, जैसा कि ठुकराये जाने के इन कालों में सच्ची कलीसिया के साथ किया गया था; और फिर भी यीशु ने कहा था, "जब तुम अंजीर के पेड़ पर कोपलें लगते हुए देखते हो, (वह जाति एक राष्ट्र होने के लिए फिर से वापस लौट रही है).. तो जान लो कि समय निकट है, वरन द्वार पर ही है। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जब तक ये सारी बातें पूरी न हो लें यह पीढ़ी जाती न रहेगी।"

यह तनाव... ये लोग जाते न रहेंगे। हिटलर ने उन्हें जान से मारने की कोशिश की थी, मिसलौनी ने उन्हें जान से मारने की कोशिश की थी, स्टैलिन ने उन्हें जान से मारने की कोशिश की थी, अन्य सभों ने उन्हें जान से मारने की कोशिश की थी, परन्तु वे कभी कलंकित नहीं होंगे- - या पृथ्वी पर से कभी नहीं मिटेंगे। वे एक जाति और एक राष्ट्र होगें जो विद्यमान होता है। आमीन! वहाँ पर मूसा और एलिय्याह आयेंगे । ओह, मैं आशा करता हूँ, कि आप इसे समझ गये हैं।

127 बिलकुल ठीक है ।

"जैसे सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है; उसके मुख का रुप बदल गया था, उसका रूपान्तरण हो गया था। अब, यदि आप लिखना चाहते हैं, तो एक और बात हैं जो प्रकाशितवाक्य 21: 23 में हैं कि : नये यरुशलेम में वह - -वह उस नगर में मेमना है जिसके तेज से वह चमक रहा है; इसलिए वहाँ उन्हें किसी और उजियाले का प्रयोजन नहीं है। उसमें सूर्य नहीं उगता है; क्योंकि मेमना जो कि उस नगर के मध्य में है उसका ही वहाँ पर उजियाला होगा। और उन जाति जाति के लोग जिन्हें बचाया गया है मेमने के तेज में चलेंगे। आमीन! वह मेमने का उजियाला है। ओह, क्या आप इसके विषय में आनन्दित नहीं हैं? ना केवल यही है , परन्तु वह धार्मिकता के सूर्य के रुप में भी आ रहा है। (यूहन्ना ने उसे प्रभु के दिन में देखा था।)

आइये हम मलाकी में चलते हैं, मलाकी पुराने नियम का अन्तिम नबी है, आइये हम मलाकी 4 में चलें।

128 मेरे पास मेरी पत्नी जो वहाँ पीछे बैठी हुई है, के विषय में एक छोटी सी कहानी है। इससे पहले कि हम विवाह करते, मेरे कारण उसे दुख का समय झेलना पड़ा था ; जब हमारा विवाह हो गया था तो उसके बाद मैंने इसकी भरपाई करने का प्रयास किया था।

और मैं नहीं जानता था कि मैं फिर से विवाह करना चाहता था या नहीं, और अत: वह पूरी तरह से टूट गयी थी। और मैंने सोचा था कि वह बहुत अच्छी लड़की है कि उसे रहने दें, ताकि उससे कोई ऐसा अच्छा पुरूष विवाह कर ले जो उसकी देखभाल करे। मैंने साचा था कि मैं इसके योग्य तक नहीं हैं: और कैसे भी हो मैं उसकी उदारता के योग्य नहीं हूँ।" अत: वह पूरी तरह से बिलकुल टूट गयी थी, और नहीं जानती थी, कि क्या करे। ऐसा हुए वर्षों, लगभग बीस वर्ष हो गये हैं।

वह टूट गयी थी, और दिन और रात रोने लगी थी। और मैं उससे जान पहचान खत्म करने की चेष्टा कर रहा था, इस लिए नहीं क्योंकि मैं उससे प्रेम नहीं करता था, वरन इसलिए ही क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि वह मुझ पर अपना समय खराब करे, इसी लिए क्योंकि वह किसी को, किसी अच्छे पुरूष को ढूंढ ले, क्योंकि वह एक ऐसी बहुत अच्छी लड़की थी जिसे इस प्रकार से जाने दिया जाता। और मैंने लिया... मैं बस उसके साथ जाता हूँ और इसी प्रकार की बातें होती हैं। और मैंने.. मैंने सोचा था कि वह मुझसे प्रेम करती है, और मैं जानता था कि मैं उससे प्रेम करता था।

अत: फिर मैंने सोचा था, "ठीक है, मैं कोशिश कसँगा..... मैं किसी दूसरी लड़की के साथ समय तय कसँगा, और बाहर जाऊँगा, और ऐसा करूंगा कि वह मेरे विषय में बुरा बुरा सोचे।" मैं उसे मार देना चाहता था; इस बात से मुझे बाद में बहुत ही नफरत हो गयी ; वह पूरी तरह से टूट गयी थी।

मैंने उसे बताया था। मैंने कहा था, "तुम एक बहुत अच्छी लड़की हो। मैं- मैं तुम्हारा इस प्रकार से समय नहीं लेना चाहता हूँ।"

और वह बोली, "परन्तु, बिल, मैं- - मैं तो बस तुम से ही प्रेम करती हूँ,

और तुम ही केवल एक ऐसे हो जिससे मैं प्रेम कर सकती हूँ।" बोली, "मैंने... हमेशा ही तुम से प्रेम किया है।'

मैंने कहा, "मैं- - मैं इसकी सरहाना करता हूँ।" मैंने कहा- - मैंने कहा, परन्तु तुम जानती हो, कि मैं एक एकान्तवासी हूँ। मैं — मैं तो एक एकांतवासी के जैसे ही जीवन व्यतीत करने जा रहा हूँ। देखो, मैं- -मैं तो बिलकुल भी विवाह नहीं करने जा रहा हूँ।"

129 और आप जानते हैं, कि वह बेचारी छोटी सी जीव इस मामले पर बहुत ही दृढ़ बनी हुई थी। और वह बाहर दूछत्ती के नीचे चली गयी। और वह वहाँ बाहर चली गयी, और अपने घुटनों पर हो गयी, और बोली, "हे प्रभु, मैं नहीं जानती हूँ, कि मैं क्या करूं। मैं— मैं आपकी आज्ञा नहीं तोड़ना चाहती हैं, और मैं अभी भी बिल से ही प्रेम करती हूँ। और मैं नहीं जानती हूँ कि मैं क्या करूँ । हे प्रभु, क्या आप मुझे थोड़ा सा ढ़ाढ़स प्रदान करेंगे? क्या आप बस मेरी ज़रा सी सहायता करेंगे? प्रभु, मैंने अपने जीवन में आप से ऐसा करने के लिए पहले कभी नहीं मांगा, और मैं आशा करती हैं, कि मुझे आप से ऐसा कभी नहीं मांगना है। परन्तु क्या आप बस मेरी सहायता करेंगे, और यह हो कि मैं बाइबिल में से खोलें, और आप ही मुझे वचन का एक लेख दें। मैंने लोगों को यह कहते हुए सुना है कि आपने ऐसा किया है।

और जब उसने इसे खोला, तो यह मलाकी चार निकलकर आया। देखो, यहोवा के बड़े और भयानक दिन के आने से पहले मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा।

वह बोली, "मैं वहाँ से ऐसी संतुष्ट उठी हूँ, कि हम ऐसे ही विवाह करने जा रहे हैं जैसे कोई भी काम करने जा रहे हों।" देखा?

क्योंकि देखो, वह धधकते भट्टे का सा दिन आता है , जब सब अभिमानी और दुराचारी लोग अनाज की खूटी बन जायेंगे; और उस आने वाले दिन में ऐसे भस्म हो जायेंगे, कि उनका पता तक न रहेगा, और वह उनकी न जड़ न डालियाँ छोड़ेगा।

परन्तु तुम्हारे लिए जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य [S-u-n] उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे।

130 "जैसे सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।" ओह! परमेश्वर के पुत्र की सामर्थ आज रात्रि हमारे मध्य में चमक रही है; वह जो सोने की सात दीवटों के बीच अपने सात-आयामी व्यक्तित्व के अन्त्रतगत यहाँ पर एक न्यायी के रुप में खड़ा हुआ है : यह वही है जिसने हमारे लिए दुख उठाया और हमारे लिए जान दी और दिव्य न्याय को अपने ऊपर ले लिया था; और परमेश्वर की जलजलाहट के दाख के कुंड़ में दाख को रौंदा था।

वह पापी के लिए और जीवन के सागर पर भटकते प्राण के लिए भंयकर महा जलप्रपात है। और वह कलीसिया के लिए एक ऐसा मधुर उदारकर्ता है, जिसपर वह अपना लंगर डालकर विश्राम में होती है; और आप कलकल-छलछल करते झरने का शब्द सुन रहे होते हैं जबकि आप लेटे हुए और मसीह में विश्राम करते हुए पूरी तरह से संतुष्ट हो रहे होते हैं। यह क्या ही समय होता है!

वह अपनी गरम किरणों सहित हम पर चमक रहा होता है , "डर मत, मैं वही हैं, जो था, जो है और जो आने वाला है। मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ, मेरे सिवाये

और कोई नहीं है। मैं ही अल्फा और ओमिगा दोनों हूँ । और जो प्यासा हो, वह मेरे पास आये, मैं उसे जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत में दूंगा।"

ओह, क्या ही वायदा है, और क्या ही प्रेम प्रसंग है ! और वह मेमना ही उस नगर के मध्य में है कि किसी उजियाले की आवश्यकता न हो। और वह धर्म का वह सूर्य है। जिसकी किरणों से हम चंगे होते हैं।

वह घाटी का सोसन है, वह भोर का चमकता सितारा है,
वह मेरे प्राण के लिए दस हज़ार से भी अधिक सुंदर है।
मेरे दुख में है वह मेरा सकुन, मेरे संकट में है वह मेरा बल कहता है
मुझ से अपनी सारी चिन्ता मुझ पर दे डाल। हाल्लिलूय्यह!
वह घाटी का सोसन है, वह भोर का चमकता सितारा है।
वह मेरे प्राण के लिए दस हजार से भी अधिक सुंदर है।

131 जी हाँ, श्रीमान! ओह, वह महान भोर का तारा जब चमकने के लिए आता है, तो वह यह पुकार कर कहता है कि "दिन निकलने वाला है" ; वह इसकी घोषणा कर रहा होता है, और कह रहा होता है, "दिन निकलने वाला है; सूर्य निकट आ रहा है।" ओह मेरे परमेश्वर ! वह अपनी किरणों में चंगाई लिये हुए दूसरे सभी तारों से अपने आप को बाहर निकाल कर लाता है।

अब, आइये हम वापस अपने संदेश पर आते हैं। और अब हम समापन कर रहे हैं, ताकि हम कल रात्रि के लिए तैयार हो सकें ; क्योंकि अब समय पौने नौ हो गया है, और अब हम आपको और अधिक देर तक रोक कर नहीं रखना चाहते हैं- जिससे कि हम कल यहाँ पर हो सकें।

132 बिलकुल ठीक है, ... "वह धर्म का सूर्य है, जिसकी किरणों में चंगाई है...."

अब, उसका मुख देखिए। वह एक न्यायी था; या वह कुछ और था जिससे कि वह आपको दिखाये कि वह प्रभु के दिन में था। क्या आप विश्वास करते हैं, कि वह प्रभु के दिन में आ गया था। और उसने प्रभु को एक न्यायी के रुप में देखा था; एक याजक के रुप में नहीं, एक राजा के रुप में नहीं; वरन एक न्यायी के रुप में ही देखा था।

वह एक न्यायी है। क्या आप इसका विश्वास नहीं करते हैं? बाइबिल कहती है, कि वह एक न्यायी है। और यहाँ पर वह एक न्यायी का लिबास पहने हुए था ; जो यह दिखा रहा था कि उसने क्या किया था, वह क्या था; वह पापी के लिए क्या था; वह मसीही के लिए क्या था। और अब यहाँ पर वह बहुत से जल के शब्द के साथ खड़ा हुआ था और उसका मुख ऐसे चमक रहा था जैसे कड़ी धूप के समय सूर्य चमकता है।

133 अब इसका परिणाम 16 वें पद में देखने को मिलता है। और... नहीं, आप मुझे क्षमा करना; यह 17वाँ पद है जिसमें यह मिलता है।

जब मैंने उसे देखा, तो उसके पैरों पर मुरदा सा गिर पड़ा...

एक ऐसा दर्शन देख कर नबी खड़ा न रह सका था। वह बस...वह बस ऐसा क्षीण हो गया था, कि वह उसके पैरों पर मुरदा सा गिर पड़ा था। अब दृष्टि डालिएगा। और उसने अपना दाहिना हाथ मुझ पर रखकर यह कहा, कि मत डर, मैं ही प्रथम और अन्तिम हूँ।

ओह, मेरे परमेश्वर! वह एक भविष्यद्वक्ता नहीं था, वह तो परमेश्वर ही था। "मैं प्रथम और अन्तिम हूँ। मैं ही प्रकाशन का प्रथम और मैं ही प्रकाशन का अन्तिम हूँ। मैं ही वह हूँ जो था, मैं ही वह हूँ जो है, मैं ही वह हूँ जो आयेगा।"

आइये हम देखते हैं। "मैं हूँ..."

...और उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर यह कहा, कि मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम, और जीवता हूँ।

मैं मर गया था, और अब देख, मैं युगानुयुग जीवता हूँ; और ...(वह ठीक इस समय यह है)...(और इसके बाद वह उच्च स्वर से बोला); आमीन; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।

134 भयभीत न होइये ! हम क्योंकर भयभीत होंगे? कलीसिया क्योंकर उसका... मानने से... उसके वचन के विषय में सोचने से चूकेगी ? आइये हम बस यहीं पर एक मिनट के लिए रूकते हैं, क्योंकि हम इसे समाप्त कर रहे हैं।

यह कलीसिया क्योंकर कभी डरेगी? जिस किसी भी बात की उसने प्रतीज्ञा की थी क्या उसने वह हमारे समक्ष साक्षात् प्रकट नहीं किया है? हम क्योंकर दंड़ से या यहाँ से आगे को डरे, जबकि वह कहता है, "मत डर, मैं वह हूँ जो था; जो है और जो आने वाला है। मैं ही प्रथम और अन्तिम हूँ। मेरे पास ही ठीक यहाँ पर मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं।" क्यों? "मैंने मृत्यु और अधोलोक दोनों पर तेरे लिए जय प्राप्त कर ली है। (यह कब्र और पाताल दोनों ही है, यह स्वयं मृत्यु , यह स्वयं पाताल है) मैं इस सब पर जयवंत हो चुका हूँ। मैंने अधोलोक, मृत्यु, कब्र पर जय पा ली है।"

जब वह पृथ्वी पर था तो वही केवल एक ऐसा था...

135 अनेकों पुरूष जय पाने के लिए बाहर निकलकर गये। क्या आप यह जानते थे? नैपोलियन विश्व-विजेयता होने के लिए निकला था, और उसने यह काम तैंतीस वर्ष की आयु में ही कर लिया था। सत्तराह से पच्चीस वर्ष की आयु तक वह माद्यनिषेधवादी रहा था, वह शराब पीने या, वह ऐसी ही किसी चीज के पीने में विश्वास नहीं करता था। वह फ्रास गया वह फ्रासवासी नहीं था, वह तो किसी एक टापू से ही आया था; वह फ्रांस से लड़ने के लिए ही गया था, क्योंकि वह उससे घृणा करता था, वह फ्रांस से घृणा करता था परन्तु वह विजयी हुआ था।

वह आगे बढ़ा और उसने फ्रांस पर जय पायी थी, और उसने उन फ्रांसवासियों को लिया, और उसने संसार पर जय पायी। वह तैंतीस वर्ष की आयु में विराजमान हुआ, और उसने शेखी बखारी, क्योंकि जीतने के लिए और कोई बाकी न रह गया था। और वह शराब के नशे में धुत एक पराजित हालत में मरा। और यहाँ तक कि वह स्वयं अपने पर जयवंत नहीं हो सका था। समझे? और उसका नाश वॉटर लू पर हुआ। उसे वाटर लू पर अपने अंत का सामना करना पड़ा। मैं वहाँ पर गया हैं, और मैंने उन प्राचीन चिन्हों, उन स्मारकों और ऐसी चीजों को देखा है, जब हम वहाँ उस देश में थे।

अब, हमने उस विजेयता को लिया; और एक युवक के रूप में ही जय पाना शुरु कर दिया था और उसने विजयी होने के लिए गलत पक्ष अपनाया था और वह एक निन्दनीय होकर मरा।

136 परन्तु एक और युवा पुरुष एक बार पृथ्वी पर आया; वह तैतीस वर्ष की अवस्था में मरा था। और उसने उस हर एक चीज पर जय पायी थी जिस पर जय पायी जा सकती थी। जब वह इस पृथ्वी पर था, तो उसने शौक-अनुराग, यशकीर्ति पर जय पायी; उसने बीमारियों पर जय पायी; उसने दुष्टात्माओं पर जय पायी। जब वह मरा, तो उसने मृत्यु पर जय पायी।

जब वह मरे हुओं में से जी उठा तो उसने अधोलोक पर जय पायी। वह अन्दर गया और उसने उस हर एक चीज पर जय पायी जो मानव जाति के विरुद्ध थी.... और उसने परमेश्वर के दाख के रस के कुंड़ में दाख को रौंदा, और मृत्यु, अधोलोक, क ब्र,.... बीमारी,औपचारिकताओं तथा अन्य सभी बातों पर जय पायी ,और उसने इस सब पर जय पायी, और वह तीसरे दिन मुरदों में से जी उठा, और उस सारे वातावरण को जो ऊपर है उसने उस पर विजय प्राप्त की, और उस धुन्ध को जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच थी काट डाला, और उसने स्वर्ग और पृथ्वी को आपस में एक साथ जोड़ा। महिमा होवे! ओह मेरे परमेश्वर, वाह! वह सर्वशक्तिमान विजेयता वहाँ पर खड़ा हुआ है जबकि उसने परदे को दो हिस्सों में चीर दिया है;

वही वहाँ पर है; "डर मत, मेरे पास ही मृत्यु और अधोलोक दोनों की कुंजियाँ हैं।" उसने अपना दाहिना हाथ (अपनी सामर्थ) उसके ऊपर रखा, और अपने दाहिने हाथ की सामर्थ से उसे ऊपर उठाकर उससे कहा, "डर मत, मैं ही वह हूँ जो था, और जो है, और जो आएगा। मैं ही प्रथम और अन्तिम हूँ। मैं ही वह हूँ जो जीया था और मर गया था, और फिर से युगानुयुग जीवता हूँ। आमीन।" ओह!

लो, देखो, वह सर्वशक्तिमान विजेयता है,
लो देखो, वह साफ -साफ दिखायी पड़ता है।
जब से उसने परदे को चीर कर दो हिस्सों में कर डाला,
वहीं वह सर्वशक्तिमान विजेयता खड़ा हुआ है।

137 आमीन!

...उसने मानव जाति से हर एक बाधा को काट डाला, ताकि वे परमेश्वर के साथ वैसे ही जुड़ सकें जैसे वे अदन की वाटिका में जुड़े हुए थे। अब, मनुष्य.... मैं इस बात को अपने गले से बाहर निकालने नहीं जा रहा था, लेकिन मैं इस बात को कहने जा रहा हूँ। मनुष्य सर्वशक्तिमान् है। आप इस बात का विश्वास नहीं करते हैं, लेकिन वह ऐसा ही है। एक मनुष्य जो पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित है वह सर्वशक्तिमान ही है। क्या उसने मरकुस 11: 22 में नहीं कहा था, "तुम जो चाहे मांगो, और तुम अपने हृदय में संदेह न करो , तो वह हो जायेगा। जो तुम ने कहा है वह तुम्हें मिल जायेगा"?

क्या होता है जब दो सर्वशक्तिमान आपस में मिलते हैं? जब परमेश्वर और मनुष्य उस सर्वशक्तिमान हालत में होकर आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो कुछ न कुछ तो हिलने जा रहा होता है। कुछ.....आप परमेश्वर की सर्वसामर्थी वाली सृजात्मक सामर्थ के द्वारा जो कुछ भी कहते हैं, जबकि आप जानते हैं, कि उसने ही इसकी प्रतिज्ञा की है और इसे अपने वचन में कहा, तो यह एक ऐसी सामर्थ की सृष्टि करता है

जो बाहर निकलकर जाती है और उस कही बात को घटित करती है; वह उन बातों को जो हैं भी नहीं उन्हें ऐसा बना देती है कि मानो वे हैं, क्योंकि दो सर्वसामर्थी आपस में मिल चुके होते हैं। वहाँ वह खड़ा हुआ होता है। ओह! क्या वह अद्‌भुत नहीं है?

138 आइये हम देखें कि क्या हमारे पास कुछ और अच्छी बातें हैं। 18 वाँ पद, अब 19 वाँ पद देखिए। यूहन्ना.... क्या हुआ था? जब उसने उसके मुखमण्डल को देखा, तो उसका परिणाम यह हुआ, कि वह उसके पैरों पर गिर पड़ा; वह बस और अधिक खड़ा न रह सका था, उसका मानव जीवन उसमें से ज़रज़रा गया था, वह बस इसे कर न सका था।

वह तो एक विजेयता था; वह तो पहले ही विजय पा चुका था। अब, वह उसे एक आज्ञा देता है, और इसके बाद हम इस अध्याय का समापन करने के लिए 19 वाँ पद देखते हैं।

इसलिए जो बातें तू ने देखी हैं और जो बातें हो रही हैं, और जो इसके बाद होने वाली हैं, उन सब को लिख ले।

[हमने बीसवाँ पद लिया:] अर्थात् उन सात तारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दाहिने हाथ में देखा था, और उन सात सोने की दीवटों का भेदः वे सात तारे सात कलीसियाओं के दूत हैं, और वे सात दीवटें सात कलीसियाएँ हैं।

139 ओह, मित्रों, यह सांस रोक देने वाली बात है। वह उसे वहाँ पर सर्वोच्च... में... उसे अपने सर्वोच्च परमेश्वर वाली स्थिति में खड़ा हुआ देखता है। वह एक न्यायी है, एक महायाजक है, एक महाराजा है, एक महान उबाब है, एक मेमना है, एक सिंह है, अल्फा, ओमिगा, पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा है। वह वो है जो था, जो है और जो आएगा। उसने परमेश्वर के जलजलाहट की मदिरा के कुंड़ में दाख को रौंदा है, और हर बात में परमेश्वर को ऐसा प्रसन्न किया, कि परमेश्वर ने क्रूस पर कहा था.... जब वह जी उठा था, उसने कहा था, "यह पूरा हुआ। उसने परमेश्वर को ऐसा प्रसन्न किया था, कि वह आत्मा जो उसे छोड़कर चला गया था वह ईस्टर की सुबह वापस लौटकर आया, और उसे ऊपर उठाया और हमें धर्मी ठहराने के लिए उसे मरे हुओं में से जिलाया।

वहाँ यूहन्ना ने ऊपर दृष्टि डाली और उसे वहाँ पर ऐसा खड़ा हुआ देखा कि उसके पांव पीतल के, उसकी आँखें आग की ज्वाला थीं जो सारी पृथ्वी पर आगे पीछे दृष्टि लगा रही थी। दानिय्येल ने उसे सात सौ वर्ष पहले ठीक ऐसी ही अवस्था में , ठीक इसी प्रकार का ही देखा था, उसने ठीक इसी पुरुष को वहाँ पर खड़ा हुआ देखा था, उसने उसे एक अति प्राचीन वाले रुप में देखा था, और उसे ऐसा देखा था जैसे मनुष्य का पुत्र होता है, और सारा न्याय उसे सौंप दिया गया था, और वह श्वेत सिंहासन पर खड़ा हुआ था।

मित्रों, इन सब बातों को देखकर हमें किस प्रकार का इन्सान होना चाहिए? परमेश्वर आपको आशीष दे, मेरी यही प्रार्थना है। समझे? क्या आप उससे प्रेम करते हैं? क्या आप उस पर विश्वास करते हैं? क्या आपने अपने प्राण का लंगर उस में डाल दिया है?

140 आइये हम एक क्षण के लिए अपने सिरों को झुकाएँ। आप शान्तिपूर्वक और सौम्यता के साथ ऐसा करें, जबकि हम शान्त ढंग से इसे गाने जा रहे हैं, कि मैंने अपने प्राण का लंगर स्वर्ग के विश्राम में डाल दिया है। मैं उन भंयकर महाजलप्रपातों की कलकल -छलछल की आवाज फिर कभी सुनने नहीं जा रहा हूँ जो मेरे प्राण को दूर भटका देते थे, परन्तु यह तो मेरे हृदय से शान्ति की ही बातें करता रहेगा। अब हर कोई भक्तिभाव सहित और शान्तिपूर्वक

मैंने अपने प्राण का लंगर स्वर्ग के विश्राम में डाल दिया है,
मैं जंगली सागर की लहरों पर और ना भटकता फिरूंगा,
चाहे आज़माइशें जंगली, तूफानी से होकर मुझ पर आ पड़े,
मैं तो यीशु में हमेशा के लिए सुरक्षित हूँ।
मैंने तो अपने प्राण का लंगर स्वर्ग के विश्राम में डाल दिया है....
मैं जंगली सागर की लहरों पर और ना भटकता फिरूंगा,
चाहे आज़माइशें जंगली, तूफानी से होकर मुझ पर आ पड़े,
मैं तो यीशु में हमेशा के लिए सुरक्षित हूँ।
मुझ पर चमके (हे प्रभु होने पाये, महिमा की किरणें,
मुझ पर चमकें) प्रभु,
वे मुझ पर चमकें उजियाले के स्रोत से मुझ पर उजियाला चमकें
यीशु के समान होने के लिए (हाँ, प्रभु) यीशु के समान होने के लिए
जगत में रहूँ जब तक कामना करूं उसके समान रहूँ।
अपने जीवन के सारे सफर में पृथ्वी से महिमा तक चाहँ केवल
यही माँगना उसके समान बनना ।
(भाई ब्रन्हम गीत गुनगुनाते हैं - सम्पा.)
ओह, अद्रभुत है मेरा उद्धारकर्ता जगत में रहूँ
जब तक कामना करूं उसके समान रहूँ।
अपने जीवन के सारे सफ़र में पृथ्वी से महिमा तक।
चाहूँ केवल यही माँगना उसके समान बनना

141 क्या आप यह चाहेंगे कि उसका जीवन आप में जी रहा हो, उसकी उपस्थिति आप में होकर प्रतिबिम्बित हो रही हो? यदि आप ऐसा चाहेंगे, और अभी तक आपने ऐसा नहीं किया है, तो आप जो यह चाहते हैं, कि उन्हें प्रार्थना में याद रखा जाये, क्या आप प्रार्थना के लिए खड़े हो जायेंगे? परमेश्वर आपको आशीष दे।

बेहतलहम की चरनी से... (अब बस आप खड़े रहें,
आप बस खड़े रहें..)... एक आया अद्‌भुत...
(आप संसार के लिए अजनबी हो जायेंगे)
पृथ्वी पर उसी के जैसा होना चाहता हूँ,
मैं केवल यही मांगता हूँ,
मैं पृथ्वी से लेकर महिमा तक अपनी सारी यात्रा में उसी के।
जैसा होना चाहता हूँ।
मैं बस यीशु के जैसा ही होना चाहता हूँ,
मैं बस यीशु के जैसा ही होना चाहता हूँ
(मेरी यही अभिलाषा है।)

पृथ्वी पर मैं उसके जैसा ही होना चाहता हूँ,
मैं तो केवल यही मांगता हूँ..
मैं पृथ्वी से लेकर महिमा तक अपनी सारी यात्रा में।
उसी के जैसा होना चाहता हूँ।
(भाई ब्रन्हम गीत गुनगुनाना शुरू करते हैं।)
...दीनतापूर्वक, नम्रतापूर्वक, दीनतापूर्वक...

142 अब हे स्वर्गीय पिता, बहुतेरे लोग हैं जो अपने पैरों पर खड़े हुए हैं जो आपको ग्रहण करना चाहते हैं। वे यहाँ वहाँ भटकते फिरते रहने से उकता चुके हैं, वे जीवन के भंवर में भटकते फिर रहे होते हैं और नहीं जानते हैं कि उन्हें कहाँ जाना है; और यह जानते हो कि शायद दिन का उजियाला निकलने से पहले ही उनका दिल धड़कना बंद कर दें, और उसके बाद उस यहाँ वहाँ भटकने वाले प्राण के सामने वह महा जलप्रपात हो।

वे अपने जैसे रहे हैं, वे संसार के जैसे रहे हैं, परन्तु प्रभु, अब वे आपके जैसा होना चाहते हैं। प्रभु, आप उन्हें अपने राज्य में स्वीकार करें । पिता, वे आपके हैं, क्योंकि आप ही उनके मन की भावनाओं और विचारों को जानते आपने ही ऐसा लिखा है, और आपने ही अपने होंठों से ऐसा कहा है, "वह जो मेरा वचन सुनता है, और मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है।"

प्रभु, आपने यह भी कहा है, "धन्य है वह, जो भविष्यवाणी की इस पुस्तक की बातों को सुनता है और पढ़ता है, क्योंकि समय निकट है।" उन्हें इसका एहसास है कि समय निकट है। प्रभु अपनी जीवन धारा का संचार कीजिए, और उन्हें अपने में खींच लीजिए।

होने पाये कि वे इस रात से ही यहाँ से ऐसे जायें कि वे यीशु मसीह के उजियाले को चमका रहे हो। पिता परमेश्वर, मैं उन्हें यीशु मसीह के नाम में आपको समर्पित करता हूँ। होने पाये वे यहाँ कलीसिया में प्रभु का बपतिस्मे में नम्रतापूर्वक अनुकरण करें; उनके जीवन में पवित्र आत्मा प्रदान कीजिए ताकि वे अपने बाकी दिनों में यीशु के समान हो सकें । हम यह उसी के नाम से ही मांगते हैं।

143 बस यीशु के समान, यीशु के समान...

आप सब जो यहाँ पर बैठे हुए हैं या खड़े हुए हैं आप में से कुछ जो मसीही हैं आप उन लोगों के पास जो आपके पास खड़े या बैठे हैं जो मसीही हैं, जायें और उनका हाथ पकड़े और उनसे हाथ मिलायें। आप अपना हाथ उनके ऊपर रखें; उनके प्राण के लिए परमेश्वर का जयजयकार करें। यहाँ ऊपर हमारा मंच बच्चों तथा लोगों से भरा हुआ है, और हम उन्हें यहाँ ऊपर लेकर नहीं आ सकते हैं।
...जीवन की यात्रा के माध्यम से, पृथ्वी से महिमा तक,
मैं केवल उसके जैसे होने के लिए पूछता हूं।
चमक मुझ पर, ओ चमक मुझ पर,
होने देना दीपगृह से प्रकाश मुझ पर चमके ;
ओ चमक मुझ पर, प्रभु, चमक मुझ पर,
होने देना दीपगृह से प्रकाश मुझ पर चमके ।

144 क्या आप अच्छा सा अनुभव करते हैं? क्या आप अच्छा सा अनुभव नहीं करते हैं? क्या आप खुश नहीं हैं कि आप एक मसीही हैं? अब आप किसी उस से जो आपके पास बैठा हो हाथ मिलायें जबकि हम एक गीत गाने जा रहे हैं, हम उजियाले में चलेंगे; यह सुन्दर उजियाला है, यह मसीह का उजियाला है जो देह में प्रकट हुआ है।
हम उजियाले में चलेंगे, ऐसे खूबसूरत उजियाले में चलेंगे
जहाँ से आती है करूणा की बूंदें उज्जवल,
चमकती हैं हमारे चारों ओर दिन और रात,
ओह यीशु ही जगत का उजियाला है।
(सब लोग इसे गायें)...
हम उजियाले में चलेंगे, ऐसे खूबसूरत उजियाले में चलेंगे।
जहाँ से आती हैं करूणा की बूंदे उज्जवल
यीशु, ही जगत का उजियाला है।
हे उजियाले के सारे संतों उस उजियाले के बारे में बताओ।
यीशु ही जगत का उजियाला है।
तब स्वर्ग की घंटी बजती है,
यीशु, ही जगत का उजियाला है।
अब अपना हाथ ऊपर उठाओ:
हम उजियाले में चलेंगे, ऐसे खूबसूरत उजियाले में चलेंगे
जहाँ से आती है करूणा की बूंदें उज्जवल,
चमकती हैं हमारे चारों ओर दिन और रात,
ओह यीशु ही जगत का उजियाला है।
हम उजियाले में चलेंगे,
ऐसे खूबसूरत उजियाले में चलेंगे।
जहाँ से आती हैं करूणा की बूंदे उज्जवल
चमकती हैं हमारे चारों ओर दिन और रात,
यीशु, ही जगत का उजियाला है।
हम इस उजियाले (सूसमाचार के उजियाले)
में चलेंगे, इस खूबसूरत उजियाले में चलेंगे।
जहाँ से आती है करूणा की बूंदें उज्जवल,
चमकती हैं हमारे चारों ओर दिन और रात,
यीशु, ही जगत का उजियाला है।

145 ठीक आरम्भ में जब पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा कलीसिया पर उतरा था .... सुसमाचार स्मुरना में पहुँचा, तो वहाँ पर इरेनियस खड़ा

हुआ, परमेश्वर का यह महान संत अन्यान्य भाषाओं में बोल रहा था, परमेश्वर की सामर्थ से मुरदों को जिला रहा था, बीमारों को चंगा कर रहा था, वह इस उजियाले में ही चल रहा था। उसके बाद कोलम्बा आता है, वह परमेश्वर का एक बड़ा ही जबरदस्त संत था। और दूसरे महान संत ठीक इसी सुसमाचार को लेकर आगे बढ़ते रहे, उजियाले में, सुसमाचार के उजियाले में , ठीक उसी उजियाले में चलते रहे जो पिन्तेकुस्त के दिन चमका था; मसीह अपने लोगों के मध्य में खड़ा हुआ है, सोने की सात दीवटों के बीच खड़ा हुआ अपने तेज को वैसे ही चमका रहा है जैसे सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है। हम यहाँ 1961 में हैं।

हम उजियाले में चलेंगे,
ऐसे खूबसूरत उजियाले में चलेंगे
जहाँ से आती हैं करूणा की बूंदे उज्जवल ओह,
चमकती है हमारे चारों ओर दिन और रात
ओह यीशु, ही जगत का उजियाला है !
आइये हम खड़े हो जायें
हम इसी उजियाले में चलते रहेंगे,
इसी खूबसूरत उजियाले में चलते रहेंगे।
आता है यह वहाँ से चमकती है
जहाँ से करूणा की बूंदें उज्जवल चमकती हैं
हमारे चारों ओर दिन और रात,
यीशु ही है जगत का उजियाला।
क्या आप उससे प्रेम करते हैं?
मैं उससे प्रेम करता हूँ, मैं उससे प्रेम करता हूँ
क्योंकि उसने मुझसे पहले प्रेम किया,
और खरीद लिया मेरा उद्धार
कलवरी क्रूस पर

146 अब मैं दुनिया की चीजों की तरफ फिर कभी न फिरूंगा, मैं तो संसार के लिए मर गया हूँ और संसार मेरे लिए मर गया है। मैं तो पवित्र आत्मा की अगुवाई में मसीह में ही चलूंगा। मैं उससे प्रेम करता हूँ, क्योंकि उसने मुझसे पहले प्रेम किया, और अपनी आशीषों को मुझ पर बरसाया, वह मुझे अपने राज्य में संगति करने का विशेष अधिकार प्रदान कर रहा है। अब, हम परमेश्वर के पुत्र व पुत्रियाँ हैं, और यह अभी तक दिखायी नहीं दिया है कि हम अंत में क्या होंगे, परन्तु हम यह जानते हैं कि हमारे पास वैसी ही महिमायुक्त देह होगी जैसी उसकी अपनी है, क्योंकि हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।

हम उजियाले में चलेंगे,
हम एक खूबसूरत उजियाले में चलेंगे।
खूबसूरत उजियाले,
आती है जहाँ से करूणा की बूंदें उज्जवल
चमकती हैं हमारे चारों ओर दिन और रात
यीशु ही जगत का उजियाला है।

147 क्या आप उससे प्रेम करते हैं? आप जानते हैं कि जब संदेश हो चुकता है और अन्य सभी कुछ हो चुका होता है ,तो मुझे लोगों को गीत गाते हुए सुनना, और आराधना करवाना, और आत्मा में गाते हुए सुनना अच्छा लगता है। पुराने अच्छे गायन से बढ़कर और कुछ भी अच्छा नहीं है। यह सच है। मुझे पुराने चलन वाला पिन्तेकुस्त वाला गायन अच्छा लगता है। मुझे वे प्रशिक्षित सुर अच्छे नहीं लगते हैं जो तब तक सुर बांधे रहते हैं जब तक कि वे किक्याने नहीं लगते हैं और उनके चेहरे नीले नहीं पड़ जाते हैं, और वे नहीं जानते हैं, कि वे क्या गा रहे होते हैं। मैं तो किसी ऐसे को ही पसन्द करता हूँ जो हो सकता है, जो अपना सुर एक सही लय में ना रख सकता हो; लेकिन फिर भी उसके पास पिन्तेकुस्त वाली आशीष होती हो; और अब वह इसके विषय में गा रहा होता है। ओह... क्रूस के वे गीत कितने... कितने मधुर हैं। ओह, मेरे खुदा!

अब हम अपना सभा समाप्त करने वाला गीत गाते हैं।
148 यीशु का नाम अपने साथ ले
हे दुख-संताप की संतान,
देगा तुझे यह तसल्ली, चैन और आराम जहाँ कहीं जाता हो
इसे आपने साथ लेकर जा।
कल रात सात बजे, ठीक सात बजे सभा शुरू हो जायेगी।
यीशु के नाम पर दंड़वत् कर रहे हैं,
उसके चरणों पर साष्टांग प्रणाम कर रहे हैं।
जब होगी हमारी यात्रा पूरी
करेगें हम उसकी राजाओं का राजा करके ताजपोशी।
अब आइये हम सब इसे गायें।
यीशु का नाम अपने साथ ले हे दुख-संताप की संतान,
देगा तुझे यह तसल्ली, चैन और आराम
ओह, जहाँ कहीं जाता हो इसे आपने साथ लेकर जा।
अमूल्य नाम, कैसा मधुर नाम!
जग की आस, स्वर्ग का उल्लास
(ओह कितना मधुर!) अमूल्य नाम,
ओह कैसा मधुर नाम ।
जग की आस, स्वर्ग का उल्लास !

149 अब, आज रात्रि हमने इसे समाप्त कर दिया है... अब मुझ से यह पूछा गया था, कि क्या सुबह सभा होगी? नहीं, जी नहीं, कल सभा नहीं होगी, आप कल अच्छा विश्राम करें। हो सकता है कि कल रात को मैं संदेश फिर से न लेने पाऊँ, अत: मैं इसे अगले दिन लूंगा। जब कभी भी मैं संदेश को पूरा नहीं कर पाऊँगा- तो मैं उसे अगले दिन ज़ारी रखूगा। परन्तु हमने यही तय किया हुआ है। मैं विश्वास करता हूँ, कि आप सब कलीसियायी कालों के लिए तैयार हैं। क्या आप तैयार नहीं है? यह बिलकुल ठीक बात है। आइये हम अपने सिरों को झुकायें, जब

कि हम इसे मंद मंद गाते हैं:

यीशु के नाम पर झुक रह हैं...

(हर एक जुबान इसका अंगीकार करेगी)

उसके चरणों पर साष्टांग प्रणाम कर रहे हैं।

जब होगी हमारी यात्रा पूरी करेगे

उसकी राजाओं का राजा करके ताजपोशी।

ओह अमूल्य नाम, कैसा मधुर नाम!

जग की आस स्वर्ग का उल्लास।

अमूल्य नाम, मधुर नाम !

जग की आस स्वर्ग का उल्लास

MESSAGE online hub
www.messagehub.info
विलियम मेरियन ब्रन्हम के द्वारा प्रचारे गए सन्देश
"...शब्द देने के दिनों में..." प्रकाशित. १०:७